दैनिक जागरण
लोभ सिर्फ अहित ही कराता है

नाकाम राजनीति

आखिरकार महाराष्ट्र में वही हुआ जिसका अंदेशा था। राज्यपाल ने राज्य में राष्ट्रपति शासन लगाने की जो सिफारिश की उस पर राष्ट्रपति ने मुहर लगा दी। इसी के साथ शिवसेना की तीखी आपत्ति तो सामने आई ही, कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी ने भी नाखुशी जताने में देर नहीं की। शिवसेना राज्यपाल के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट भी पहुंच गई है, लेकिन यह व्यर्थ की कवायद है। यह जितना हास्यास्पद है उतना ही विचित्र भी कि शिवसेना राज्यपाल को कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के समर्थन पत्र देने के बजाय सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाना पसंद कर रही है। क्या यह वही शिवसेना नहीं जो चंद दिनों पहले तक यह जाहिर कर रही थी कि उसके लिए सरकार बनाना बायें हाथ का खेल है? वह आनन-फानन सरकार बना लेने की खुशफहमी से इस कदर ग्रस्त थी कि कांग्रेस से समर्थन मिलने का भरोसा मिलने के पहले ही उसने भाजपा से नाता तोड़ने का फैसला कर लिया। यह मानने के अच्छे-भले कारण हैं कि सरकार बनाने में मिली नाकामी से खिसियाई शिवसेना राष्ट्रपति शासन के खिलाफ शोर मचाकर यह दिखाना चाह रही है कि उसके साथ अन्याय हो गया। इस चीख-पुकार से कुछ हासिल होने वाला नहीं है, क्योंकि राष्ट्रपति शासन लगने का यह अर्थ नहीं कि अब कोई सरकार बनाने का दावा पेश नहीं कर सकता।

चूंकि राष्ट्रपति शासन लगने के बाद भी विधानसभा भंग नहीं की गई है इसलिए शिवसेना या राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी आवश्यक बहुमत जुटाकर कभी भी सरकार बनाने का दावा पेश कर सकती हैं। आखिर उन्हें ऐसा करने से किसने रोका है? इस दलील में ज्यादा दम नहीं कि राज्यपाल को और इंतजार करना चाहिए था, क्योंकि एक पखवारा बीत गया है और महाराष्ट्र राजनीतिक अनिश्चितता में झूल रहा है। वहां का शासन-प्रशासन एक तरह से ठप है। यह आदर्श स्थिति नहीं। सरकार बनने का इंतजार करते रहने का कोई मतलब नहीं। क्या यह बेहतर नहीं होगा कि राजनीतिक दल राज्यपाल और केंद्र सरकार के फैसले को कोसने के बजाय इस सवाल का जवाब दें कि वे सरकार क्यों नहीं बना पा रहे हैं? चूंकि राष्ट्रपति शासन लगने के बाद शिवसेना के साथ-साथ कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी नए सिरे से सक्रिय हो गई हैं इसलिए हो सकता है कि कुछ समय बाद कोई सरकार बन जाए। यदि यह सरकार शिवसेना के नेतृत्व में बनती है तो उसे कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के समक्ष नतमस्तक ही रहना होगा। जब हर कोई शिवसेना की इस संभावित दयनीय दशा की कल्पना कर हैरान है तब उसके सत्तालोलुप नेता इससे अनजान बने रहने में ही अपनी भलाई समझ रहे हैं। यह एक तरह का आत्मघात ही है।

बुलबुल का कहर

चक्रवाती तूफान की पूर्व सूचना और अलर्ट जारी होने के बावजूद बंगाल में 14 लोगों की जान चली गई और करोड़ों की संपत्ति का नुकसान हुआ है। तीन दिन पहले आए चक्रवात बुलबुल से निपटने के लिए केंद्र से लेकर राज्य सरकार और यहां तक कि खुद मुख्यमंत्री ममता बनर्जी शनिवार की पूरी रात सचिवालय के कंट्रोल रूम गुजारी थीं और पूरी स्थिति पर नजर रख रही थीं। बावजूद इसके जान-माल के नुकसान को पूरी तरह नहीं रोका जा सका। इससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि प्राकृतिक आपदा के सामने सिर्फ लोग ही नहीं, बल्कि पूरी व्यवस्था कितनी मजबूर है। यह तो शुक्र है कि हमारे वैज्ञानिक वहां तक पहुंच चुके हैं कि चक्रवती तूफान आने से कई दिन पहले ही लोगों तक सूचना देने के साथ-साथ प्रशासन को भी सतर्क कर दे रहे हैं, जिसके चलते लोगों की जानें कम जा रही है। यही दस वर्ष पहले तक चक्रवती तूफान में सैकड़ों लोगों की जानें चली जाती थीं। बंगाल में तो इस बुलबुल चक्रवात ने तो व्यापक कहर ढाया है। विनाश को देखने के लिए सोमवार को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने दक्षिण 24 परगना जिले के चक्रवात प्रभावित इलाकों का हवाई सर्वेक्षण किया। साथ ही बुलबुल तूफान में मारे गए लोगों के स्वजनों को दो-दो लाख रुपये की आर्थिक मदद की घोषणा की। ममता ने कहा कि प्रशासन ने 1.78 लाख लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। जिस तरह से बंगाल में बुलबुल का मुकाबला किया गया, उसकी तारीफ केंद्र सरकार भी कर रही है। मुख्यमंत्री हवाई मार्ग से दक्षिण 24 परगना जिले के नामखाना, बकखाली एवं अन्य इलाकों में पहुंचीं और वहां बुलबुल से हुई तबाही का मुआयना किया। इसके बाद उन्होंने काकद्वीप में प्रशासनिक अधिकारियों के साथ बैठक की। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस वक्त बिजली की आपूर्ति बहाल करना एवं पेयजल एवं दवाओं की आपूर्ति करना प्राथमिकता है। उन्होंने प्रशासनिक अधिकारियों से लोगों तक पहुंचने और क्षेत्र में राहत सामग्रियों का वितरण सुनिश्चित करने को कहा। मुख्यमंत्री ने राहत एवं पुनर्वास कार्यों के लिए दो विशेष टास्क फोर्स का गठन किया है। केंद्रीय पर्यवेक्षक का एक दल भी मुआयना करने आ रहा है। क्षतिग्रस्त मकानों का निर्माण राज्य सरकार की आवासीय योजना के तहत किया जाएगा। बुलबुल से तकरीबन 5-6 लाख लोग प्रभावित हुए हैं और दो लाख मकानों को नुकसान पहुंचा है। हालांकि इसके बावजूद और भी सतर्कता बरतने की जरूरत है, ताकि जानमाल के नुकसान को और कम किया जा सके।

राष्ट्रहित में किया आरसेप से किनारा

अमित शाह

इतिहास साक्षी है कि आरसेप में भारत के पक्ष को कमजोर करने के बीज कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में ही बोए गए थे

भारत ने रीजनल कांप्रिहेंसिव इकोनॉमिक पार्टनरशिप यानी आरसेप को खारिज कर दिया और इस तरह 4 नवंबर, 2019 की तारीख भारत के व्यापारिक समझौता वार्ताओं के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो गई। आज का भारत अंतरराष्ट्रीय दबाव में झुकने वाला नहीं, बल्कि अपने हितों की रक्षा करने वाला भारत है। पहले के मुकाबले देश में एक नई ऊर्जा का प्रवाह है। इस ऊर्जा के सूत्रधार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं। आरसेप प्रस्ताव को नकारने का मर्म प्रधानमंत्री मोदी के इस बयान में समाहित है, 'जब मैं सभी भारतीयों के हितों के संबंध में आरसेप समझौते को मापता हूं तो मुझे सकारात्मक जवाब नहीं मिलता है। न तो गांधीजी की नीति (स्वदेशी) और न ही मेरा विवेक मुझे आरसेप में शामिल होने की अनुमति देता है।'

इस निर्णय से मोदी जी ने देश के किसानों, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों, कपड़ा व्यापार, डेयरी और विनिर्माण क्षेत्र, दवा, इस्पात और रासायनिक उद्योगों के हितों की रक्षा की है। उन्होंने बड़ी मजबूती के साथ भारत का पक्ष विश्व के बड़े नेताओं के समक्ष रखा और तब तक इस समझौते में शामिल नहीं होने का निर्णय लिया जब तक भारत के व्यापारिक घाटे, डंपिंग और अन्य महत्वपूर्ण शर्तों पर सहमति नहीं बन जाती। मेरा मानना है कि भारत को किसी भी ऐसे अंतरराष्ट्रीय करार का हिस्सा नहीं बनना चाहिए जो एकतरफा हो और जिसमें भारत के किसानों और उद्यमियों के हितों से समझौता किया गया हो, मगर बड़े दुख की बात है कि कांग्रेस के नेतृत्व में संप्रग सरकार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत के हितों की रक्षा करने में पूरी तरह असफल रही। 2007 में कांग्रेस सरकार ने चीन के साथ क्षेत्रीय व्यापार समझौता यानी आरटीए पर विचार करना शुरू कर दिया था। भारतीय अर्थव्यवस्था को कांग्रेस ने कितना नुकसान पहुंचाया, यह इससे प्रमाणित होता है कि चीन से भारत का व्यापार घाटा उसके कार्यकाल में 23 गुना बढ़ा। 2005 में भारत का यह घाटा 1.9 अरब डॉलर था। वहीं 2014 में यह बढ़कर 44.8 अरब डॉलर हो गया। आप कल्पना कर सकते हैं कि इससे स्थानीय उद्योगों को कितना भारी नुकसान हुआ होगा।

अंतरराष्ट्रीय दबाव में भारतीय किसानों और उद्योगों के हितों से समझौता करना कांग्रेस का इतिहास रहा है। 2013 का बाली समझौता इसका उदाहरण है। तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और वाणिज्य मंत्री आनंद शर्मा ने बाली में हुई डब्ल्यूटीओ बैठक में देश को कृषि सब्सिडी और कृषि उत्पादों को समर्थन मूल्य देने के प्रावधान को कमजोर करने की राह पर डाल दिया। जब 2014 में निजाम बदला तब पीएम मोदी के निर्देश पर तत्कालीन वाणिज्य मंत्री निर्मला सीतारमण ने इसे खारिज कर देश के किसानों का भविष्य सुरक्षित किया।

आरसेप से बाहर आने के हमारे राष्ट्रहित के फैसले का कांग्रेस नेता यह कहकर श्रेय लेने का प्रयास कर रहे हैं कि यह उनके दबाव से संभव हुआ। इतिहास साक्षी है कि आरसेप में भारत के पक्ष को कमजोर करने के बीज कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में ही बोए गए थे।

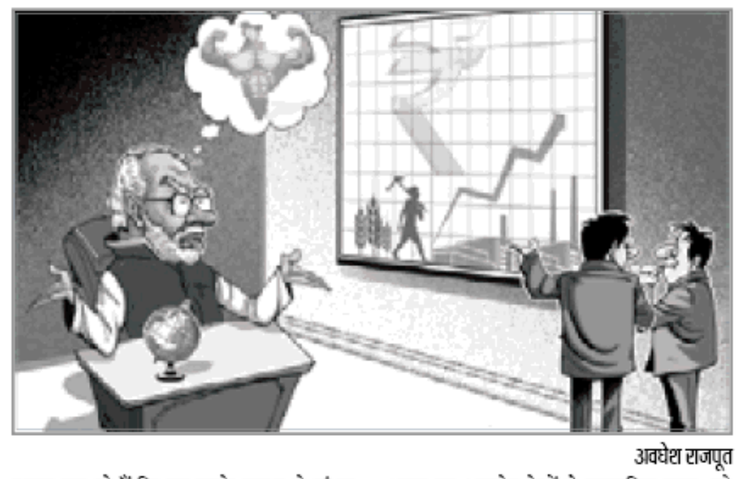

अवधेश राजपूत

शुरुआती स्तर पर आरसेप में दस सदस्यीय आसियान देशों के अलावा केवल चीन, जापान और दक्षिण कोरिया के शामिल होने की योजना थी, मगर अतिउत्साह की शिकार कांग्रेस सरकार ने आरसेप संबंधी वार्ता को मंजूरी दी जबकि यह स्पष्ट था कि यह चीनी उत्पादों के लिए भारतीय बाजार को खोलने का दरवाजा है। भारत का इन देशों के साथ भारी व्यापार घाटा है, फिर भी कांग्रेस सरकार ने आरसेप में शामिल होना उचित समझा। इसका हमारे छोटे व्यापारियों, दुग्ध उत्पादकों और किसानों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना निश्चित था। इससे पहले कांग्रेस ने राष्ट्रीय हितों को आसियान-एफटीए समझौते में भी दरकिनार किया। भारत ने लगभग 74 प्रतिशत वस्तुओं के लिए अपना बाजार खोलने का निर्णय लिया जबकि इंडोनेशिया और वियतनाम जैसे देशों ने भारत के लिए मात्र 50 प्रतिशत और 69 प्रतिशत तक ही अपना बाजार खोला। इसका नतीजा रहा कि भारत का आरसेप देशों से व्यापारिक घाटा, जो 2004 में सात अरब डॉलर था, 2014 आते-आते 78 अरब डॉलर पहुंच गया।

अपनी खराब नीतियों के चलते कांग्रेस ने आरसेप की शुरुआत में ही कई गलत प्रस्ताव स्वीकार कर लिए थे। 2014 से ही मोदी सरकार ने कांग्रेस की गलतियों को सुधारने का अथक प्रयास किया। तबसे भारत आरसेप समझौता वार्ता में लगातार अपने हितों की रक्षा करता रहा और अपनी तमाम मांगें मनवाईं। जैसे पहली बार सेवा क्षेत्र भारत के लिए खोला गया। इससे भारतीयों के लिए इन देशों में रोजगार के अवसर मिलने की राह खुली। भारत को बड़े पैमाने पर अपने उत्पादों के निर्यात का मौका भी मिला। साथ ही निवेश संबंधी प्रस्ताव भी भारतीय मांग के अनुरूप मंजूर किए गए। आरसेप में शामिल होने के लिए कांग्रेस इतनी अधीर थी कि उसने 2016 तक समझौता लागू होने के अनुमान से यह तय कर लिया कि जो इंपोर्ट ड्यूटी 1 जनवरी, 2014 को लागू थी, उसे ही बेस रेट मान लिया जाए। इसका परिणाम यह होता कि जब भी आरसेप लागू होता तब भारत में जो इंपोर्ट ड्यूटी होती वह इन देशों के आयात पर (जो हमारे घरेलू उद्योगों का संरक्षण करती है) घटकर 2014 के स्तर पर लागू होती। इससे आयात बढ़ता और भारतीय उद्योगों को भारी नुकसान होता। इस बीच हमारी एक मुख्य मांग यह रही कि मौजूदा हालात को देखते हुए इंपोर्ट ड्यूटी के लिए 2019 को ही आधार वर्ष बनाया जाए। हालिया आरसेप बैठक में प्रधानमंत्री मोदी और वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने भारतीय किसानों, डेरी उद्योग, लघु/मध्यम और विनिर्माण उद्योग के हितों को आधार बनाकर भारत का पक्ष मजबूती के साथ रखा। इस वार्ता में राष्ट्रहित से जुड़े तमाम अहम मुद्दे उठाए गए। जैसे टैरिफ डिफरेंशियल में संशोधन, सीमा शुल्क की आधार दर में बदलाव, मोस्ट फेवर्ड नेशन नियम का उन्मूलन, संवेदनशील क्षेत्रों में निवेश को एक विशेष नियम से बाहर रखना, निवेश प्रक्रिया में भारत के संघीय ढांचे के महत्व का सम्मान आदि। वास्तव में इस वार्ता के एजेंडे में शामिल 70 में से 50 बिंदु भारत के थे।

फिलहाल भारत ने आसियान समझौते और दक्षिण कोरिया के साथ सेपा समझौते की समीक्षा शुरू कर दी है। हम जापान, अमेरिका, यूरोपीय संघ और अन्य विकसित देशों के साथ निकट भविष्य में समझौते करने वाले हैं। इनसे देश के किसानों, लघु-मध्यम उद्योगों और विनिर्माण क्षेत्र को भारी लाभ होगा। इससे देश को पांच ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था बनाने में मदद मिलेगी। जहां तक आरसेप का प्रश्न है तो प्रधानमंत्री वैश्विक स्तर पर भारत को जिस तरह स्थापित कर रहे हैं उसे देखते हुए आरसेप में हमारी मांगों की लंबे अर्से तक अनदेखी नहीं की जा सकती। एफटीए के जरिये आसियान के साथ हमारा व्यापार प्रगति पर है वहीं आरसेप को खारिज करके हमने चीन के संभावित नकारात्मक प्रभाव को खत्म कर दिया है।

(लेखक केंद्रीय गृहमंत्री हैं)

response@jagran.com

दलदल में फंसी शिवसेना

डॉ. एके वर्मा

उद्धव ठाकरे ने अपनी हठधर्मिता के चलते अनावश्यक रूप से अपने मतदाताओं को नाराज करने का ही काम किया

महाराष्ट्र में राष्ट्रपति शासन लगने के आसार तभी उभर आए थे जब कांग्रेस और राकांपा के ठिठक जाने के कारण शिवसेना सरकार बनाने लायक जरूरी संख्याबल जुटाने में नाकाम रही थी। इसके पहले देवेंद्र फड़नवीस ने राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी द्वारा सरकार बनाने के निमंत्रण को पर्याप्त संख्याबल न होने के आधार पर अस्वीकार कर दिया था। ऐसा करके भाजपा ने एक स्वस्थ राजनीति का संकेत दिया। महाराष्ट्र संभवतः पहला ऐसा राज्य है जहां एक साथ चुनाव लड़ने और जीतने के बाद भी घटक-दलों में विवाद हो गया और गठबंधन सरकार नहीं बन सकी। इसके लिए शिवसेना की महत्वाकांक्षा ही जिम्मेदार है। भाजपा के इन्कार के बाद राज्यपाल ने दूसरा आमंत्रण शिवसेना को ही दिया, जो राकांपा-कांग्रेस के सहयोग से सरकार बनाने को आतुर थी। शिवसेना की ओर से पर्याप्त समर्थन न जुटा पाने के बाद आमंत्रण शरद पवार को मिला, लेकिन उन्होंने सरकार गठन के लिए और समय की मांग कर दी। इसके बाद राज्यपाल ने राष्ट्रपति शासन की सिफारिश कर दी।

शायद शिवसेना को यह विश्वास नहीं था कि भाजपा सरकार बनाने में कदम पीछे खींच लेगी। इसीलिए उसने भाजपा के धैर्य की सीमा के आगे जाकर अपनी मांगें रखीं, लेकिन अब वह दलदल में फंस गई है। वह भाजपा से भी गई और राकांपा-कांग्रेस समर्थन से भी। मुख्यमंत्री पद का जो बेबुनियाद सपना शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे ने अपने पुत्र आदित्य ठाकरे के लिए पाला था वह टूटना ही था। उद्धव ठाकरे को अपना अहं छोड़कर मराठा नेता शरद पवार की शरण में जाना पड़ा। राजनीति के मंझे खिलाड़ी पवार को एक तीर से कई निशाने लगाने आते हैं। एक ओर वह मराठा अस्मिता के नायक के रूप में उभरे और दूसरी ओर उन्होंने प्रदेश की राजनीति में उद्धव ठाकरे और शिवसेना के पर भी कतरे। वह महाराष्ट्र की राजनीति में 'गैर-भाजपावाद' की मुहिम चलाकर और कांग्रेस को ऑक्सीजन देने का आश्वासन देकर सोनिया गांधी को भी दबाव में लेने की कोशिश रहे थे, लेकिन सोनिया ने पवार, ठाकरे और भाजपा, तीनों को कांग्रेस के वजूद का अहसास करा दिया। राज्य में आगे जो भी हो, भाजपा को यह सीख जरूर मिली कि उसे वहां चुनाव-पूर्व गठबंधन के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए था।

वैसे तो भाजपा और शिवसेना, दोनों का वैचारिक धरातल काफी समान है, लेकिन क्षेत्रीय पार्टी के रूप में शिवसेना ने राज्य में अपने कद को बढ़ाने के लिए भाजपा

को नुकसान पहुंचाने का कोई अवसर नहीं छोड़ा। विगत पांच वर्षों में भाजपा-शिवसेना गठबंधन सरकार का अनुभव सुखद नहीं रहा। यदि भाजपा 2014 वाला फार्मूला अपनाती और अलग चुनाव लड़ती तो शिवसेना को अपनी 'हैसियत' का अहसास हो जाता। 2014 में भाजपा ने 260 सीटें लड़ीं और 122 जीतीं। उसका स्ट्राइक रेट 47 प्रतिशत था। 2019 में भाजपा केवल 144 सीटें लड़ीं और 105 जीतीं। उसका स्ट्राइक रेट 74 प्रतिशत पर पहुंच गया। स्पष्ट है कि इस बार मतदाताओं के बीच भाजपा की स्वीकार्यता अधिक थी।

यदि भाजपा अकेले चुनाव लड़ती तो परिणाम कुछ और ही होते। तब शायद उसे किसी समर्थन की जरूरत नहीं पड़ती या शिवसेना ऐसी सौदेबाजी नहीं कर पाती जिससे महाराष्ट्र को सरकार से वंचित होना पड़ता। आगे परिदृश्य कैसा होगा? यदि विधानसभा भंग होती है तो अगले चुनावों में भाजपा निश्चित ही अकेले चुनाव में उतरेगी। ऐसे में उसके बहुमत प्राप्त करने की संभावना बढ़ जाएगी, जैसा कि 2014 में हुआ था। जाहिर है कि भाजपा की मंशा यही होगी कि कोई 'गैर-भाजपा' सरकार न बने और विधानसभा भंग कर दी जाए। कांग्रेस के लिए भी शिवसेना को सरकार बनाने के लिए समर्थन देने या न देने का निर्णय बहुत कठिन है। कांग्रेस और शिवसेना का वैचारिक धरातल बिल्कुल अलग है। शिवसेना का समर्थन कर उसे अपनी भावी राजनीति को पुनर्परिभाषित करने में मुश्किल होगी। शिवसेना और राकांपा क्षेत्रीय दल हैं, लेकिन कांग्रेस का तो राष्ट्रीय फलक है। उसे केवल महाराष्ट्र नहीं, वरन पूरे देश की राजनीति के बारे में सोचना होगा। सूबे में ऐसी बेमेल खिचड़ी सरकार बनाने या उसमें सहयोग से राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस के प्रतिकूल संदेश ही जाएगा। यदि शिवसेना-राकांपा और कांग्रेस सरकार बन भी जाए तो संभावना बहुत कम है कि वह स्थिरता हासिल कर पाएगी। इससे स्वयं शिवसेना का जनाधार खिसककर भाजपा की ओर जा सकता है, क्योंकि कांग्रेस एवं राकांपा से मेलजोल के कारण उसका मतदाता वैचारिक धरातल पर खुद को भाजपा के अधिक निकट पाएगा।

भाजपा और कांग्रेस, दोनों का साझा हित इसमें है कि राज्यों में क्षेत्रीय पार्टियों का उभार न होने दिया जाए। महाराष्ट्र प्रकरण में शिवसेना नेता संजय राउत ने महाभारत के 'शकुनी' की याद दिला दी। उन्होंने, उद्धव ठाकरे को पुत्र-मोह का ऐसा पाठ पढ़ाया जैसा शकुनी ने धृतराष्ट्र को दुर्योधन के लिए पढ़ाया था। भाजपा-शिवसेना में अलगाव का अध्याय तो लिख ही गया, शिवसेना का पतन भी निश्चित हो गया। जनता में उसकी छवि धूमिल हुई है। उसके लिए लोगों को यह समझाना मुश्किल होगा कि दशकों पुराने साथी भाजपा से जब उसकी नहीं पटी तो उन दलों से कितनी देर पटेगी जिनसे वैचारिक मतभेद हैं? उद्धव ने अपनी हठधर्मिता के चलते अनावश्यक रूप से मतदाता को नाराज किया। इसका खामियाजा शिवसेना को आगामी चुनाव में उठाना ही पड़ेगा। शिवसेना यह भूल गई कि मोदी सरकार में शामिल होने से पार्टी की राष्ट्रीय अस्मिता उभर रही थी। अपने एकमात्र मंत्री अरविंद सावंत को मोदी मंत्रिमंडल से इस्तीफा दिलाकर उद्धव ने अपने दल की राष्ट्रीय अस्मिता को भी खत्म कर दिया। यह साफ है कि महाराष्ट्र के राजनीतिक घटनाक्रम से भाजपा, राकांपा और कांग्रेस का तो कुछ नहीं बिगड़ा, पर शिवसेना को नुकसान उठाना पड़ा।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक एवं सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ सोसायटी एंड पॉलिटिक्स के निदेशक हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

श्रद्धा

शास्त्रों में वर्णित है-श्रद्धावान लभते ज्ञानं। श्रद्धावान को ही ज्ञान का लाभ प्राप्त होता है और ज्ञान ही पाश्विक जीवन से ऊंचा उठकर देवत्व धारण करने का सर्वप्रमुख आधार है। संसार के किसी भी मार्ग एवं क्षेत्र में लक्ष्य की प्राप्ति एवं महारथ हासिल करने के लिए श्रद्धा को संबल बनाया जाता है। भगवत् प्राप्ति के लिए श्रद्धा ही अनिवार्य है। जहां श्रद्धा है वहां कुछ भी प्राप्त होना कठिन नहीं है। श्रद्धा की भूख जब व्यक्ति के हृदय में जगती है तो लक्ष्य प्राप्ति, हर सपना साकार करने की व्यग्रता मन में छा जाती है और मन में एक जुनून की तरंग दृष्टिगोचर होती है। जब तक उसकी प्राप्ति नहीं हो जाती, तब तक मन-हृदय में शांति नहीं मिलती है।

मन हृदय में जब श्रद्धा की भूख प्रबल होती है तो वह प्रार्थना ईश्वरीय रूप बन जाती है। ईश्वर किसी की प्रार्थना को न ठुकराते हैं और न नजरअंदाज करते हैं। वे तो भक्त की श्रद्धा-भाव के भूखे होते हैं। बशर्ते कि भक्त की श्रद्धा मजबूत होनी चाहिए, क्योंकि भगवत् प्राप्ति के मार्ग में भक्त की श्रद्धा की परीक्षा होती है। जिनकी श्रद्धा मजबूत होती है, वे भगवान की प्राप्ति के लक्ष्य में सफल होते हैं। श्रद्धा ही प्रेम, भक्ति, विश्वास का सर्वप्रमुख आधार है। श्रद्धा के कारण ही यज्ञ, तप, पूजा, दान किए जाते हैं। बरसात में पानी वहीं एकत्रित होता है, जहां गड्ढा होता है। चट्टानों पर एक बूंद भी पानी नहीं टिकता है और जिन घड़ों का मुंह ऊपर की ओर होता है, उनमें लबालब पानी भर जाता है और टेढ़े-मेढ़े, उलटे घड़े में पानी का आंशिक रूप भी प्राप्त नहीं होता। श्रद्धा के अभाव में सभी बादल मिलकर भी घनघोर वर्षा करें तो चट्टान पर पानी नहीं टिकेगा। भगवान की कृपा श्रद्धालु ही पाते हैं। निष्ठुर लाभ प्राप्ति के लिए अयोग्य हैं। श्रद्धा ही प्राप्ति की पात्रता है। एकलव्य श्रद्धा के बल पर गुरु द्रोणाचार्य की प्रतिमा बनाकर अर्जुन से भी ज्यादा धनुर्धर बना था। श्रद्धा हो तो गगन से तारे तोड़े जा सकते हैं और पर्वतों में भी पथ निर्माण हो जाता है। इसके लिए यही करना होता है कि अपने शब्दकोश से असंभव शब्द को बाहर निकाल दिया जाए।

मुकेश ऋषि

कुपोषण की पहेली और समाधान

जोनाथन मिलर

देश की कृषि नीति अब भी 'तीन प्रमुख अनाजों'-चावल, गेहूं और मक्का को ही बढ़ावा देने में लगी है

देश की प्रगति और खाद्य उत्पादन, आय, साक्षरता दर एवं कई अन्य क्षेत्रों में प्रभावोत्पादक प्रगति के बाद भी मोटे तौर पर भारत की 15 प्रतिशत आबादी यानी 20 करोड़ लोग कुपोषित हैं। कुपोषण की यह दर निम्न-सहारा के कई सर्वाधिक निर्धन देशों से भी बदतर है। जाने-माने कृषि विशेषज्ञ डॉ. प्रभु पिंगली बताते हैं, 'भारत ने भूख की स्थिति से निपटने और खासकर कैलोरी उपभोग के मामले में भारी तरक्की की है, लेकिन पोषण परिणाम के मामले में हम पीछे छूट गए हैं।' देश की कृषि नीति, जो अकाल के भय से प्रेरित रही है, अब भी 'तीन प्रमुख अनाजों' को ही बढ़ावा देने में लगी है-चावल, गेहूं और मक्का। कुपोषण का समाधान अधिक अनाज या अधिक खाद्य में नहीं, बल्कि बेहतर खाद्य, बेहतर आहारों, बेहतर बाजारों, बेहतर शिक्षा और बेहतर स्वच्छता में निहित है। पिंगली ने पोषण में सुधार के लिए चार परस्पर संबद्ध उपायों की पहचान की है, जिनमें पहला अधिक आय, दूसरा आहारीय विविधता, तीसरा सकारात्मक पोषण व्यवहार और चौथा बेहतर स्वच्छता है। ये उपाय उन व्यावहारिक तथा नवाचारी प्रयोगों के हिस्से रहे हैं, जिन्होंने ठोस नतीजों की उपलब्धि में मदद पहुंचा कर इन उपायों की प्रभावशीलता सिद्ध कर दी है।

गवर्नेंस, बुनियादी ढांचा एवं बाजार की वास्तविकताएं जैसे समग्र कारकों का पोषण पर सर्वाधिक असर होता है, पर उसमें व्यक्तिगत रवैये की भी अहम भूमिका होती है। व्यवहार परिवर्तन संवाद के तहत लोगों को अपनी आहार संबंधी आदतें बदलने अथवा स्वच्छता संबंधी परिपाटियां सुधारने को प्रोत्साहित किया जाता है। जैसे कि एक प्रक्रिया के तहत ग्रामीण लोग प्रशिक्षक के साथ उस क्षेत्र में जाते हैं, जहां ग्रामीण शौच किया करते हैं। प्रशिक्षक किसी व्यक्ति के सिर के एक बाल को एक ताजे मल में डुबो कर उसके बाद उसे एक गिलास पानी में डुबोता है और तब वह पानी ग्रामीणों को पीने के लिए बढ़ाता है। ग्रामीण उसे पीने से इन्कार करते हैं। इसी बीच मक्खियां चारों ओर पड़े मल और वहीं रखे एक प्लेट चावल पर बैठती-उड़ती रहती हैं। तब प्रशिक्षक ग्रामीणों को यह बताता है कि मक्खियां अपने छह पैरों में से प्रत्येक में बाल के एक लट की अपेक्षा कहीं अधिक मल ढोती हैं। इस प्रदर्शन का एक प्रभाव पड़ता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि व्यवहार परिवर्तन सुनिश्चित करने की दिशा में उससे संबद्ध संवाद एक अहम तत्व है। यदि यह निष्कर्ष सत्य हो तो इसका भारी राष्ट्रव्यापी असर हो सकता है। जागरूकता तथा नजरिये में परिवर्तन से समुदाय एक स्वस्थ जीवनशैली अपनाने को प्रेरित हो सकता है।

कृषि मंत्रालय को अपनी 'मुख्य अनाज कट्टरता' को छोड़ कर 'पोषण-संवेदी नीतियां' अपनानी चाहिए। यानी ऐसी कृषि जो प्रत्यक्ष रूप से आहार की गुणवत्ता एवं विविधता सुधारने पर लक्षित हो। यदि हम पारिवारिक स्तर पर ऐसी आय वृद्धि, जो लोगों को गरीबी से बाहर निकल सके तथा महिला साक्षरता जैसे दो ही मुद्दों पर कार्य करें तो बाकी सबको भी हम काफी आगे बढ़ा ले जाएंगे।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं)

मेलबाक्स

फैसले को पूर्वाग्रही दृष्टि से न देखें

अयोध्या फैसला पढ़ें वामपंथी इतिहासकार शीर्षक से लिखे अपने लेख में इतिहासकार प्रो. मक्खन लाल ने श्रीराम जन्मभूमि फैसले के संदर्भ में वामपंथी इतिहासकारों को यह उचित परामर्श दिया है कि उन्हें अपने दुराग्रह से बाहर निकल कर इस फैसले को हिंदू-मुस्लिम के नजरिये से नहीं, अपितु पुरातात्विक और ऐतिहासिक तथ्यों के आलोक में देखना चाहिए। इस संदर्भ में यह समझने की जरूरत है कि न्यायालयी निर्णय के आधार बिंदु इतिहास और पुरातत्व के वही साक्ष्य और प्रमाण हैं, जिन्हें दुराग्रहवश अभी तक नकारा जाता रहा है। वस्तुतः जब किसी वस्तु को पूर्वाग्रही दृष्टि से देखा जाता है तो वह वैसी ही दिखाई देती है जैसा हम देखना चाहते हैं। भारत की सनातन संस्कृति और आस्था से समानांतर दूरी बनाकर चलने वाले वामपंथी इतिहासकारों ने कभी भी भारत के मान बिंदुओं का आदर नहीं किया। शायद इसीलिए उनको आक्रांता बाबर के सिपहसालार मीर बकी द्वारा अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि स्थल पर बने प्राचीन मंदिर को बलात रूप से ढहाकर बनाई गई मस्जिदनुमा इमारत में ऐतिहासिकता नजर आती है और भारत की आध्यात्मिक चेतना की प्रतीक श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या अफगानिस्तान में दिखाई देती है। भारतीय आध्यात्म और संस्कृति के प्रति इस तरह की नकारात्मक दृष्टि का ही दुष्परिणाम रहा कि स्वतंत्र भारत में श्रीराम जन्मभूमि हमेशा विवादित बनी रही और इस पर बेवजह की विकृत राजनीति होती रही, लेकिन अब समय आ गया है कि भारत को भारतीयता के संदर्भों में देखा जाय और बेवजह भारत के प्राचीन इतिहास और पुरातात्विक साक्ष्यों को किसी पूर्वाग्रह के वशीभूत होकर तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत न किया जाए। श्रीराम जन्मभूमि के संबंध में सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय आज इसीलिए सर्वमान्य है, क्योंकि यह हिंदू-मुस्लिम की सांप्रदायिक सोच से परे हटकर भारत के पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

pandeywp1960@gmail.com

अवसरवाद की राजनीति

पिछले कुछ वर्षों से राजनीति केवल संभावनाओं का राजनीतिक अखाड़ा बन कर रह गया है जहां हर तरह के छोटे बड़े राजनीति के अवसरवादी पहलवान लंगोट कसे तैयार बैठे हैं जिनमे नैतिकता के पुट तो बहुत दूर की बात है कायदे कानून व भार वर्ग की भी कोई अहमियत नहीं है, बस अवसरवादिता के तहत जीतना मकसद है। उत्तर प्रदेश मे लोकसभा चुनाव 2019 में गेस्ट हाउस कांड भुला बुआ और बबुआ का नामी महा अखाड़ा तैयार किया गया, लेकिन चुनाव परिणाम आते ही अखाड़ा अवसरवादिता के जाल में उलझ गया और स्वार्थ की राजनीति जीत गई। ऐसे ही कर्नाटक 2018 के मई विधानसभा चुनावों में दो विपरीत ध्रुवों के तथाकथित स्वार्थी गठबंधन का राजनीतिक खेल खेला गया, जिसका हश्र सर्वविदित है, लेकिन महाराष्ट्र की राजनीति में हतप्रभ कर देने वाले समीकरणों का असामयिक जो जोड़ तोड़ बैठाया गया उसमें विश्वसनीय राजनीति कराह रही है। एनसीपी और कांग्रेस ने सार्वजनिक तौर पर खुद स्वीकार किया था कि जनादेश विपक्ष में बैठने का मिला है, लेकिन राजनीतिक चक्र की अवसरवादिता को संजीवनी देकर जनता के जनादेश को रौंद कर रख दिया गया। क्या ये घटनाक्रम शिवसेना प्रमुख बालासाहेब ठाकरे और युग पुरुष अटल बिहारी वाजपेयी के आपसी तालमेल, विश्वास, संतुलित व बेजोड़ कार्यशैली पर कुठाराघात नहीं कहलाएगा? क्या ऐसी बेमेल विचारधारा की राजनीति से प्रदेश व आमजन का कुछ भी भला होने वाला है, सिवाय खुद को छोड़कर? स्वार्थ की राजनीति क्षणभंगुर होती है, पर अकेलेपन का अहसास केवल धृतराष्ट्र को ही पता है।

दीपक गौतम, सोनीपत

सही सुझाव

पटकथा लेखक सलीम खान ने सही कहा है कि अयोध्या में सुप्रीम कोर्ट के फैसले में मुस्लिम समुदाय को मिलने वाली पांच एकड़ जमीन पर स्कूल और अस्पताल बनाया जाए। देश में आज मस्जिदों और धर्मगुरुओं की कोई कमी नहीं है। देश में सही शिक्षा, चिकित्सा और सुशासन का घोर अभाव है। इसलिए आज इन धर्मस्थलों से कहीं ज्यादा तो देश में सही स्कू

61 फीसद गैर-संक्रामक मौतों के पीछे लोगों की निष्क्रिय दिनचर्या है भारत में। दो साल पहले वर्ष 2017 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपने एक वृहद अध्ययन में यह बताया था।

आजकल

निष्क्रिय जीवनशैली के शिकार बनते भारतीय

ऐसे कई अध्ययन और सर्वेक्षण हुए हैं जो बताते हैं कि हमारे देश में साधन-संपन्नता बढ़ने के साथ-साथ लोग दिनचर्या और स्वास्थ्य को लेकर ज्यादा लापरवाह हुए हैं। ऐसा ही एक अध्ययन हाल में सामने आया है, जिसमें दावा किया गया है कि हम भारतीय काम करने के मामले में भले ही सबसे आगे हों, लेकिन फिटनेस और सक्रियता के मामले में दूसरे कई देशों के नागरिकों से काफी पीछे हैं। इससे हमारे देश में मधुमेह और तनाव जैसी बीमारियां बढ़ती जा रही हैं। जाहिर है हमें अपनी जीवनशैली ऐसी बनानी चाहिए कि बीमारियां पास न आएं

अभिषेक कुमार सिंह
संस्था एफआइएस ग्लोबल से संबद्ध

किसी देश में सेहत और बीमारी का संबंध सिर्फ इलाज की सहूलियतों और आबादी की तुलना में उपलब्ध अस्पतालों और डॉक्टरों की संख्या से ही हो-ऐसा जरूरी नहीं है। लोगों को कई रोग इसलिए भी घेरते हैं, क्योंकि उनकी दिनचर्या सेहत से जुड़े कायदों के मुताबिक नहीं होती और लोग ऐसा रूटीन अपनाते हैं, जिससे उनके बीमार पड़ने की आशंका कई गुना बढ़ जाती है। ऐसे कई अध्ययन और सर्वेक्षण हुए हैं जो बताते हैं कि हमारे देश में साधन-संपन्नता बढ़ने के साथ-साथ लोग अपनी दिनचर्या और स्वास्थ्य को लेकर ज्यादा लापरवाह हुए हैं। ऐसा ही एक अध्ययन हाल में आया है, जिसमें दावा किया गया है कि हम भारतीय काम करने के मामले में भले ही सबसे आगे हों, लेकिन फिटनेस और सक्रियता के मामले में दूसरे कई देशों के नागरिकों से काफी पीछे हैं।

कम हो रहा पैदल चलना : अमेरिका, ब्रिटेन, जापान और सिंगापुर सहित 18 देशों के लोगों के डाटा के आधार पर फिटबिट ने जो रिपोर्ट तैयार की है, उसके मुताबिक भारत के लोग नींद लेने के मामले में तो अन्य मुल्कों से पीछे हैं ही, साथ में वे कम फुर्तीले भी होते हैं। रिपोर्ट बताती है कि भारतीय रोजाना औसतन 6 हजार 553 कदम ही चलते हैं, जो इस अध्ययन में शामिल बाकी सभी देशों के लोगों की तुलना में सबसे कम है। उल्लेखनीय है कि दो साल पहले वर्ष 2017 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपने एक वृहद अध्ययन के बाद बताया था कि भारत में 61 फीसद गैर-संक्रामक मौतों के पीछे लोगों की निष्क्रिय दिनचर्या है। असल में दुनिया के 19 लाख लोगों की रोजाना की शारीरिक सक्रियता का अध्ययन करके पेश की गई उस रिपोर्ट में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अंदाजा लगाया था कि इस वक्त दुनिया में करीब 140 करोड़ लोगों की शारीरिक सक्रियता काफी कम है, लेकिन जब यह रिपोर्ट बताती है कि भारत के 24.7 प्रतिशत पुरुषों और 43.3 फीसद महिलाओं को अपने हाथ-पांव हिलाने में ज्यादा यकीन नहीं है तो हैरानी होती है। खेतीप्रधान और मेहनतकश लोगों के मुल्क के रूप में पहचान बना चुके भारत में इस तब्दीली का दिखना चिंताजनक तो है, इससे हमारी लुंजपुंज होती जीवनशैली और कामचोरी की प्रवृत्ति भी झलकती है जो घरों से लेकर दफ्तरों तक में बेहद आम हो चली है। गौरतलब है कि इस वर्ष अगस्त में जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फिट इंडिया अभियान को आंदोलन बनाने की नसीहत दी थी तो उस समय भी विश्व स्वास्थ्य संगठन के अध्ययन की याद आई थी। खेल दिवस के अवसर पर फिट इंडिया अभियान की शुरुआत करते हुए प्रधानमंत्री ने यह संकल्प जताया कि नए भारत में सरकार का लक्ष्य हर नागिरक को फिट बनाना है। जीवनशैली पर सवाल उठाते हुए उन्होंने इस बात पर हैरानी जताई थी कि हमारे देश में मधुमेह और तनाव जैसी बीमारियां बढ़ती जा रही हैं। यहां तक कि 12-15 साल तक के बच्चे मधुमेह के शिकार हो रहे हैं। इसी तरह अब 35-40 साल के युवाओं को हार्ट अटैक आ रहा है। प्रधानमंत्री के वक्तव्य को इस तथ्य की रोशनी में देखा गया था कि हमारे देश में समय के साथ पैदल चलना कम हो गया है, लेकिन पड़ोसी देश चीन 'हेल्दी चाइना 2030' के लिए मिशन मोड में काम कर रहा है। इसी तरह ऑस्ट्रेलिया ने 2030 तक अपने नागरिकों को व्यायाम में सक्रिय करने का लक्ष्य रखा है। ब्रिटेन में 2020 तक पांच लाख नए लोगों को व्यायाम से जुड़ने का लक्ष्य रखा गया है, जबकि अमेरिका 2021 तक करीब 1000 शहरों को फ्री फिटनेस अभियान से जोड़ेगा।

भारतीय हैं सबसे ज्याद सुस्त : एक स्वस्थ दिनचर्या में पैदल चलने का सबसे ज्यादा महत्व है और अफसोस यह है कि हमारे नागरिक इस मामले में फिसड्डी साबित हो रहे हैं। इसकी एक मिसाल 2017 में भी तब मिली थी, जब स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने दुनिया के 46 देशों के करीब सात लाख लोगों की कदमताल पर नजर रखकर एक निष्कर्ष निकाला था। उस निष्कर्ष में भी भारतीय सबसे ज्यादा सुस्त लोगों की कतार में पाए गए थे। सर्वेक्षण के मुताबिक उस दौरान एक औसत भारतीय दिन में सिर्फ 4297 कदम पैदल चल रहा था। तब कदमताल के आधार पर बनाई गई उस सूची में भारत 39वें पायदान (46 देशों में) था। उस दौरान भारतीयों के मुकाबले चीन और हांगकांग के नागरिक ज्यादा सक्रिय पाए गए थे, क्योंकि उन्होंने 6880 कदम पैदल चलने का औसत निकाला था। वैसे प्रतिदिन पैदल चलने का वैश्विक औसत 4961 कदम था। अमेरिकियों का औसत इसमें 4774 था। सर्वेक्षण से मिले आंकड़ों के मुताबिक भारत में पुरुषों के मुकाबले महिलाएं और भी कम पैदल चलती हैं। इस कारण भी उनमें मोटापे की समस्या गहरा रही है, क्योंकि उनका ज्यादातर घरेलू कामकाज या तो मशीनों के हवाले हो गया है या फिर कामवाली के हाथों में चला गया है।

सेहत खराब कर रही आलसी प्रवृत्ति : जाहिर है भारतीयों को आलसी ठहराने वाली रिपोर्ट हमारे लिए एक चेतावनी हैं। यह सुस्ती हमारी पूरी जीवनशैली और कार्य संस्कृति में समाई हुई है। इसलिए ऐसे अध्ययनों की गंभीरता को समझते हुए भारतीयों को अपनी दिनचर्या में बदलाव को लेकर तुरंत सतर्क हो जाने की जरूरत है। इस चेतावनी का सबसे अहम पहलू शारीरिक परिश्रम से जुड़ा है, जिसकी भारतीय जीवन में जबर्दस्त अनदेखी हो रही है। हमारे कस्बाई और शहरी जीवन से शारीरिक परिश्रम की जरूरत लगभग खत्म होती जा रही है। इसका प्रमुख कारण हाल के दशकों में देश में हुआ सामाजिक-आर्थिक विकास है। हमारे देश की आर्थिक उन्नति तेज शहरीकरण के रूप में दिखती है जहां आधुनिक सुख-सुविधाओं में काफी बढ़ोतरी हुई है। एक आम सहूलियत लोगों को यह मिली है कि उनके पास जो पैसा आया, उससे ज्यादातर परिवारों ने अपने लिए कारें खरीदीं। बढ़ते ट्रैफिक जाम और प्रदूषण के पीछे हर साल कारों की संख्या में वृद्धि होना भी है। पहले लोग आसपास के बाजारों तक या तो पैदल जाते थे या खुद की साइकिल का सहारा लेते थे, पर अब तो बाजार खुद लोगों के घरों में आ पहुंचा है। जूते, कपड़े, इलेक्ट्रॉनिक्स सामानों से लेकर फल-सब्जी तक, ऐसा क्या है जिसे ऑनलाइन नहीं खरीदा जा सकता? ऐसे में कहीं कोई चलने-फिरने का दबाव नहीं, जरूरत नहीं। यह सही है कि मेडिकल साइंस के चलते इंसान की औसत उम्र में इजाफा हो रहा है, लेकिन लोग ऐसी बीमारियों से ग्रस्त रहने लगे हैं जिन्हें जीवनशैली की बीमारियां कहा जाता है। अमीर देशों के लोग यह समझने लगे हैं कि सेहत कितनी जरूरी है, इसलिए वे शारीरिक श्रम को महत्व देने लगे हैं, लेकिन भारत जैसे देशों में यह बात समझी नहीं जा रही। लिहाजा गरीब और विकासशील देशों में अमीर मुल्कों की तुलना में लोग ज्यादा दिन बीमार रह रहे हैं। दुनिया की एक बड़ी आबादी मेहनत और व्यायाम से कोसों दूर चली गई है, जिसके कारण दिल की बीमारियों का खतरा बढ़ता ही जा रहा है। खास तौर से शहरी जीवन एक मुसीबत ही पैदा कर रहा है।

अपनाएं स्वस्थ जीवनशैली : यूनिवर्सिटी ऑफ वॉशिंगटन के प्रो. क्रिस्टॉफर मूर के अनुसार व्यक्ति हों या देश, वे बीमारियों का इलाज यह सोचकर करते हैं कि किसी तरह जान बची रहे, पर हम उन कारकों की ओर नहीं देखते जो बीमारी पैदा करते हैं या हमारे सहज और स्वस्थ जीवन में रुकावट पैदा करते हैं। मुख्य बात यही है कि ये बीमारियां हमारी सुस्ती या आलस की देन हैं। ऐसे में हमारा फोकस इस बात पर होना चाहिए कि हम इनसे बचें और सक्रिय, प्रसन्न और जीवंत बने रहें। वैज्ञानिकों की चेतावनी का साफ इशारा है कि हमें अपनी जीवनशैली बदलनी चाहिए। उसे इस तरह से ढाला जाए कि बीमारियां पास ही नहीं आएं।

जापान से सीखें सेहतमंद रहना

देवेंद्रराज सुथार

अच्छी सेहत ही व्यक्ति के जीवन की सबसे बड़ी पूंजी होती है। कहा भी जाता है कि पहला सुख निरोगी काया। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में अपनी सेहत को मेंटेन रखना एक चुनौती भरा काम है। ऐसे कितने ही लोग हैं जो सेहत पर ध्यान नहीं देने के कारण कम उम्र में ही अपने जीवन से हाथ धो बैठते हैं। किसी भी देश के विकास के लिए सेहतमंद आबादी अपरिहार्य है। आज खाद्य पदार्थों में बढ़ती मिलावट और पूरे पैसे देने के बाद भी गुणवत्ता युक्त पदार्थ मिलना कठिन है। इसलिए ऐसी परिस्थिति में खानपान के संतुलन और पौष्टिकता का सवाल खड़ा होना लाजिमी है। गौरतलब है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने दूसरे कार्यकाल में एक महत्वकांक्षी योजना फिट इंडिया मूवमेंट शुरू की है। हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद के जन्मदिवस के मौके पर देशभर में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से शुरू की गई इस योजना से देशवासी कितने फिट होंगे यह तो आने वाला वक्त ही बताएगा, लेकिन उसके पहले यह जानना जरूरी है कि फिट इंडिया जैसे मूवमेंट की जरूरत क्यों है?

अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन के एक प्रयोग के मुताबिक सुबह उठकर पैदल चलने वाले लोगों का मूड हर समय अच्छा रहता है और वे खुद को तरोताजा महसूस करते हैं। कई विकसित और भारत जैसे विकासशील देशों में मोटापे की समस्या लगातार बढ़ रही है, लेकिन वहीं दूसरी तरफ जापान में लोगों में मोटापे की दर बहुत कम हो गई है। इसकी वजह जेनेटिक बदलाव नहीं है, बल्कि खाने-पीने और दिनचर्या में बदलाव है। पूरी दुनिया जापान से खाने-पीने की कुछ अच्छी आदतें सीख सकती है। मोटापे से दूर रहने का यह मतलब नहीं है कि खाना ही छोड़ दें, बल्कि लोगों को खाने में ऐसी चीजें जोड़नी चाहिए जिनमें अधिक कैलोरी न हो। जैसे एक जापानी खाने में चावल, मीट या मछली का एक हिस्सा और कई सारी सब्जियां शामिल होती हैं। जापानी खाना बनाते समय इस बात का ध्यान रखते हैं कि वे एक अच्छे भोजन में सब कुछ शामिल कर लें। यानी उसमें निश्चित मात्रा में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, विटामिन, फाइबर आदि आ जाएं। वे संपूर्ण भोजन करना पसंद करते हैं।

इसके अलावा जब भी वे कोई ऐसा कुछ खाते हैं जिसमें ज्यादा कैलोरी हो तो उसके बाद तुरंत ही एक्सरसाइज भी कर लेते हैं। इसके अलावा जब भी किसी को वजन कम करना होता है उसे लोग हिदायत देते हैं कि सबसे पहले तो चावल खाना छोड़ दो। वहां के लोग ये काम करते भी हैं, लेकिन सच बात तो ये है कि जापान के खाने में चावल जरूर होता है और वे उसके साथ अलग-अलग सब्जियां और मछली खाते हैं। इससे चावल खाने के बाद की दिक्कतें नहीं आतीं। उम्मीद है कि दुनिया भर के देश जापान से जरूर सीखेंगे। भारत में एक तरफ कुछ लोग अक्सर भूखे सोते हैं तो कुछ हद से ज्यादा खाकर अपना वजन बढ़ा रहे हैं। ऐसे में इस बात पर ध्यान देना बहुत जरूरी है कि हमारे देश के युवा मोटापे का शिकार न हों। खाने का वह हिस्सा अगर गरीबों को दे दिया जाए तो शायद समाज में एक संतुलन बना रहेगा।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

खरी-खरी

गधे दरअसल गधे ही होते हैं

निर्मल गुप्त

गधे पर राष्ट्रव्यापी विमर्श जारी है। बेचारे को इस बात का पता भी नहीं। वह मैदान में इधर-उधर विचरता हरी घास चर रहा है। बीच-बीच में वह दुलत्ती झाड़ने का अभ्यास करता है तो वातावरण में धूल उठती है। देखने वाले समझते हैं कि वह विमर्श के लिए कोई जरूरी सवाल उठा रहा है या उठाने की कोशिश कर रहा है।

आजकल गधों पर राजनीति हो रही है, जबकि गधे की कोई अपनी पॉलिटिक्स नहीं होती सिर्फ राग होता है। ढेंचू ढेंचू की बड़ी मासूम-सी डिप्लोमेसी होती है। वे खुश होते हैं तब गर्दन उठा कर रेंकते हैं, जब नाराज होते हैं तो पिछला पैर फटकारते हैं। कभी-कभी कुछ गधे रेंकते भी हैं और दुलत्ती भी चलाते हैं। ऐसे गधे दरअसल पहुंचे हुए विमर्शवादी होते हैं। इनके पास एक पूंछ के अलावा कुत्ते जैसी अदृश्य दुम भी होती है, जिसे वे अपने आकाओं के आगे गुपचुप तरीके से हिलाते हैं। बड़े हौले से 'खी-खी' भी करते हैं। निरीह दिखते हैं, पर बेहद शातिर होते हैं। सांस भी पूर्वनिर्धारित योजना के तहत लेते हैं। नींद में बड़बड़ाते हैं तो भी सरोकारों के आलोक में। उनके पास मुखौटों का भंडार है। एक से बढ़कर मुखौटे। चेहरे पर चढ़ाने वाले। विवेक को ढांपने वाले। वक्त जरूरत रंग बदलने वाले। नाटकीयता प्रकट करने वाले।

कोई यकीन करे या न करे, लेकिन उपलब्ध सच यही है कि गधे धीरे-धीरे आदमी जैसे बनते जा रहे हैं। और अर्द्धसत्य यह कि आदमी बड़ी तेजी से निरे गधे में तब्दील हो रहा है।

गधे सर्वत्र होते हैं। वे हर जगह मिल जाते हैं। अकादमियों के चारागाह में चरते हुए। निहितार्थ साधने के लिए आकाओं के चरणों में लोटपोट होते हुए। मंच पर खड़े होकर दुनिया के हर जरूरी गैर-जरूरी मुद्दे पर बीज वक्तव्य देते हुए। माननीयजनों क साथ गर्दन टेढ़ी कर सेल्फी लेते हुए। बात-बात पर बयान देने के लिए गला खंखारते हुए।

गधे और गधे में दरअसल कोई फर्क नहीं होता। वह दुलकी चाल से चलने में कितना भी खुद को निपुण बना ले, लेकिन वह वही रहता है जो वह मूलतः होता है।

अब यह बात साफ हो चुकी है कि गधे उल्लू या उल्लू टाइप के नहीं होते। ये जन्मना सीधे सादे होते हैं। कोई उनको न टेढ़ा बना पाता है न उनके जरिये अपना उल्लू सीधा कर पाता है। यही वजह है कि श्रमवीर होने के बावजूद गधा ही सबसे अधिक मार खाता है।

ट्वीट-ट्वीट

महाराष्ट्र में राष्ट्रपति शासन लग गया है, क्योंकि कांग्रेस अपनी मूल विचारधारा को लेकर प्रतिबद्ध दिख रही है और उस पर कोई आंच नहीं आने देना चाहती जबकि शिवसेना ने अपनी विचारधारा को ही ताक पर रख दिया। आप स्थिति की कल्पना कर सकते हैं। आशीष चंदोकर@c_aashish

इस बीच एक और दिलचस्प तथ्य पर गौर कीजिए कि केंद्र और राज्य में भले ही भाजपा और शिवसेना की राहें जुदा हो गई हों, लेकिन बीएमसी में उनकी जोड़ी अभी भी बनी हुई है। भारतीय राजनीति की छटा भी निराली है। शेखर गुप्ता@ShekharGupta

महज दो विधायकों वाली पार्टी के नेता मिस्टर ओवैसी से किसी ने राकांपा-कांग्रेस सरकार के लिए समर्थन नहीं मांगा। किसी ने उन्हें 20 करोड़ मुसलमानों का प्रवक्ता नहीं बनाया। किसी मुस्लिम ने भी अयोध्या पर आए फैसले को खारिज नहीं किया। वह केवल ध्यान खींचकर, विभाजन की राजनीति के जरिये मतदाताओं को मूर्ख बनाना चाहते हैं। बेहतर है कि उन्हें नजरअंदाज किया जाए। सलमान निजामी@SalmanNizami_

छत्तीसगढ़ डायरी

धान की ओखली और सियासी मूसल

आलोक मिश्रा
राज्य संपादक, नईदुनिया, छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ की पहचान किसान हैं और किसान की जान धान है। पिछले साल धान ने गुल खिलाया तो सरकार ही पलट गई। कांग्रेस के पास सत्ता आई और 15 बरस की भाजपा सरकार बेदखल हो गई। इस बार फिर धान मौसम गरमाए है। रायपुर से दिल्ली चिट्ठी पर चिट्ठी दागी जा रही है, जिसका मजमून सिर्फ और सिर्फ धान है। केंद्र और राज्य की टकराहट धान के बढ़े दाम को लेकर है। भूपेश सरकार जिस बढ़े दाम का वादा करके सत्ता में आई थी, मोदी सरकार उसे मंजूरी देने को तैयार नहीं। भूपेश पीछे नहीं हट रहे और केंद्र दूसरे प्रांतों के लिए इसे नजीर नहीं बनाना चाहता। हालत यह है कि लड़ाई अब चिट्ठी से निकल कर सड़क पर आ गई है। गांव-गांव अलख जगाकर कांग्रेस दिल्ली कूच को तैयार हो गई और भाजपा जेल जाने को। वो तो इस हालात से पसीने बहाते अधिकारियों के लिए तारणहार बन गई अयोध्या, जिसके फैसले ने दोनों को फिलहाल ठंडा कर दिया है, लेकिन यह विराम अल्प विराम ही है।

छत्तीसगढ़ में धान के राजनीतिक एवं आर्थिक महत्व को कुछ इस तरह समझिए कि राज्य की तीन चौथाई आबादी किसानों की है, जिसमें 90 फीसद धान उगाते हैं। इसलिए राजनीतिक दल धान के मुद्दे पर श्रेय लेने का कोई मौका नहीं छोड़ते। पिछले साल कांग्रेस ने 2500 रुपये समर्थन मूल्य देने का वादा कर किसानों को ऐसा लुभाया कि भाजपा सत्ता से बाहर हो गई। अब वही 2500 रुपये की सारी लड़ाई है। बढ़े दाम के कारण धान भी बढ़ गया और किसान भी। इस वर्ष खरीद का लक्ष्य पिछले साल से 10 लाख टन बढ़कर 85 लाख टन हो गया। अब यह धान जाए कहां? इसलिए भूपेश सरकार ने केंद्रीय पूल में लिए जाने वाले 24 लाख टन चावल को बढ़ाकर 32 लाख टन करने की केंद्र से गुहार लगाई। अगर इस पर मुहर लगती तो केंद्र के हिस्से लगभग 52 लाख टन धान आता, लेकिन केंद्र इसके लिए राजी नहीं हुआ। एक तो बढ़े धान एवं दाम का बोझ और उस पर केंद्रीय

पूल में कटौती, दोनों ही भूपेश के लिए सिरदर्द हो गई, क्योंकि केंद्र का इस वर्ष का समर्थन मूल्य 1815 और 1835 रुपये प्रति क्विंटल है। ऐसे में बाकी राशि राज्य सरकार के खाते से जानी है, लेकिन उसके लिए भी केंद्र की मंजूरी जरूरी है, जो केंद्र देने को तैयार नहीं, क्योंकि ऐसा अगर अन्य राज्य भी करने लगें तो दिक्कत खड़ी हो जाएगी। केंद्र सरकार ने अब केवल राज्य के पीडीएस की जरूरत की पूर्ति करने लायक धान खरीदने पर सहमति दी है, जो करीब 38 से 39 लाख टन होगी।

धान को लेकर उठी सियासत पर भाजपा भी भला कहां चुप बैठने वाली? सो, उसने भी कांग्रेस के खिलाफ ताल ठोंक दी है। दोनों गांव-गांव जाकर एक-दूसरे के खिलाफ अलख जगाने लगे। केंद्र सरकार पर धान लेने का दबाव बनाने के लिए सरकार ने राज्यभर के किसान और व्यापारियों से प्रधानमंत्री के नाम पत्र लिखवाया। कांग्रेस 13 नवंबर को दिल्ली कूच और 15 को दिल्ली में आंदोलन की रणनीति बन चुकी थी। जवाब में भाजपा ने भी जेल भरो आंदोलन का एलान कर दिया। दोनों बड़े राजनीतिक दलों के एक ही दिन आंदोलन की घोषणा से प्रशासनिक अमला दहशत में था, लेकिन भगवान राम उनके तारणहार बन गए। अयोध्या मामले में सुप्रीम कोर्ट का फैसला आते ही दोनों दलों ने आंदोलन स्थगित कर दिया। हालांकि इससे पहले ही केंद्र सरकार ने राज्य को पीडीएस की जरूरत के हिसाब से धान खरीदने की सहमति दे दी है। इसके बावजूद सरकार को बाकी बचे 50 लाख टन धान 25 सौ रुपये प्रति क्विंटल की दर से खरीदने और 38 से 39 लाख टन धान पर अतिरिक्त राशि देने के लिए फंड का इंतजाम करना पड़ेगा। इससे राज्य के बजट पर अच्छा खासा भार पड़ेगा। यही वजह है कि राज्य सरकार के मंत्री अब केंद्र सरकार को धमकी देने लगे हैं। पहले राजस्व मंत्री ने कोयला रोकने की धमकी दी तो उनके बाद उद्योग मंत्री कवासी लखमा ने आयरन ओर की सप्लाई ठप करने की।

इस लड़ाई के चक्कर में अमूमन 15 नवंबर तक शुरू होने वाली धान खरीद की तारीख एक दिसंबर किए जाने से मैदानी क्षेत्रों के किसान नाराज हैं। उन्हें इस बात की चिंता सता रही है कि वे धान काटकर कहां रखें। खेतों में कहीं पानी आ गया है तो कहीं मवेशियों का खतरा। इससे डरे कई जिलों के किसान औने-पौने दाम पर धान बेचने भी लगे हैं। इस लड़ाई में उनकी हालत ऐसी हो गई है कि सिर धान की ओखली में है और पड़ रहे हैं सियासी मूसल।

राज्योत्सव की धूम : एक नवंबर को इस बार छत्तीसगढ़ 19 बरस का हो गया। इस अवसर पर पहले तो तीन दिन का राज्योत्सव रखा गया, लेकिन बाद में राज्यपाल के अनुरोध पर दो दिन इसे बढ़ाया गया। फिर दो दिन और बढ़ा, इस तरह सात दिन तक धूम रही। अधिकांश राज्योत्सव मनाने वाली भाजपा ने इसे अलग राज्य का दर्जा दिलाने वाले अटल बिहारी वाजपेयी के नाम को इस अवसर पर कांग्रेसी सरकार द्वारा तवज्जो न दिए जाने का मुद्दा बनाया। राज्योत्सव पर ही 19 साल बाद छत्तीसगढ़ी गीत अरपा-पैरी के धार... को राजगीत का दर्जा भी मिला। इस गीत के रचयिता नरेंद्र देव वर्मा मुख्यमंत्री के श्वसुर हैं। उनका निधन 1979 में हो गया था, उसके बाद 1982 में भूपेश का विवाह उनकी बेटी से हुआ था।

जागरण जनमत — कल का परिणाम

क्या करतारपुर कॉरिडोर खुलने से भारत-पाक संबंधों में सुधार आएगा?

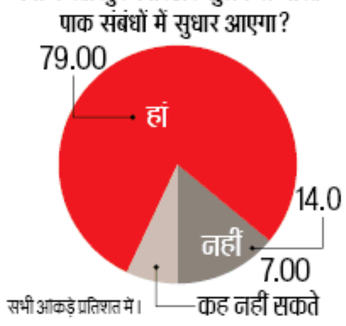

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या फिलहाल महाराष्ट्र में राष्ट्रपति शासन लगाने का फैसला सही है?

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर POLL लिखें, स्पेस देकर Y, N या C लिखकर 57272 पर भेजें
Y -हां, N-नहीं, C-कह नहीं सकते

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

तोड़ी जिसने दोस्ती हुआ आज बेकाम,
अजनबियों के साथ में माया मिली न राम।
माया मिली न राम खा गए बच्चू गच्चा,
सीएम पद की चाह लिए अब रोएं बच्चा!
बीजेपी के साथ बनी थी बढ़िया जोड़ी,
अब रोएं घर बैठ आपने खुद जब तोड़ी।
- ओमप्रकाश तिवारी

अयोध्या फैसला

हम सबके सर्वप्रिय राम

डॉ. ब्रह्मदीप अलूने
सहायक निदेशक, उच्च शिक्षा, मध्य प्रदेश शासन

यह देश अंतर्निहित सहिष्णुता की वह जमीन है जहां राम सर्वप्रिय हैं। इसका प्रमुख कारण राम के जीवन के असंख्य संदेश हैं, जिसमें कहीं पर भी घृणा और द्वेष का भाव नहीं है

भारत भूमि का आधुनिक समाज जीने की रीतियों को अपने आचरण में लाकर धर्म को अपनी पहचान बनाने का दावा भले ही करता हो, लेकिन इससे उसकी सार्वभौमिक मानवीय विरासत विस्मृत नहीं हो जाती। दरअसल राम मानवीय समाज की वह अनुपम विरासत हैं जिसे सहेजने, संवारने और बनाए रखने में कई संस्कृतियों और सभ्यताओं का योगदान रहा है। यह देश अंतर्निहित सहिष्णुता की वह जमीन है जहां राम सर्वप्रिय हैं। इसका प्रमुख कारण राम के जीवन के असंख्य संदेश हैं, जिसमें कहीं पर भी घृणा और द्वेष का भाव नहीं है। यह भारतवर्ष है जो कपोल कल्पित दुनिया से परे मानवता की सार्वभौमिकता को हर पल प्रतिबिंबित करता है। तुलसीदास के ज्ञान और पांडित्य से निकली रामचरित मानस का निर्माण मुस्लिम शासकों के दौर में हुआ था। राम के जीवन, आदर्शों, मूल्यों और शिष्टाचार के उच्च प्रतिमानों को सहज और सरल भाषा में तुलसीदास ने प्रस्तुत कर इसे जनमानस के घट-घट तक पहुंचा दिया। रामचरित मानस के बाद भारतीय जनमानस पर राम के चरित्र का जीवंत प्रभाव 1986 में दूरदर्शन पर दिखाई जानी वाली रामायण का हुआ।

राम का चरित्र मानव समाज की विभिन्नताओं को स्वीकार करते हुए एकाकार कर लेता है। इस्लाम, पैगंबर हजरत मुहम्मद साहब की शिक्षाओं को सामने रखता है। उन्होंने कहा कि मैं इसलिए भेजा गया हूं कि नैतिकता और उत्तम आचार को अंतिम शिखर तक पहुंचा दूं। राम का समूचा जीवन नैतिकता और उत्तम आचार के अंतिम शिखर को छूता हुआ प्रतीत होता है। ईसा ने सत्य, प्रेम और करुणा के पवित्र संदेश से मानव समाज का पथ प्रदर्शन किया तो राम का जीवन इन अनुपम मानवीय गुणों से भरा रहा। बुद्ध ने कहा कि हम जो सोचते हैं वह बन जाते हैं। यकीनन राम जैसी संतान पाने की इच्छा सभी माता-पिता की होती है। जैन रामायण के तो नायक ही राम हैं जिन्हें अहिंसा का आदर्श माना गया है। राम अनंत काल से इस पावन भूमि के पालनकर्ता हैं और उनके आदर्शों को सहेजने में कई साम्राज्यों का योगदान रहा है। फारसी में राम करदन एक प्रसिद्ध मुहावरा है जिसका अर्थ होता है किसी को वशीभूत कर लेना, अपना बना लेना। अब्दुल रहीम खान-ए-खाना ने कहा था कि रामचरित मानस हिंदुओं के लिए ही नहीं, मुसलमानों के लिए भी आदर्श है। जहांगीर के जमाने में मुल्ला मसीह ने मसीही रामायण लिखी। वहीं औरंगजेब के जमाने में रामायण फारसी में पद्य अनुवाद के रूप में सामने आई। शाहजहां के समय 'रामायण फौजी' के नाम से इसका गद्यानुवाद हुआ। अकबर ने तो बाकायदा राम-सिया के नाम पर एक सिक्का जारी किया था। चांदी के उस सिक्के पर राम और सीता की तस्वीरें उकेरी गई थीं और दूसरी तरफ कलमा खुदा हुआ था।

भारत सार्वभौमिकता से चलता रहा है और यहां वह रचा बसा है। इस देश ने राम से परस्पर सद्भाव और सामंजस्य सीखा है। इसका प्रभाव भारत से लगे कई देशों में अब भी देखा जा सकता है। यदि आपको वाल्मीकि रामायण को आचरण और व्यवहार में देखना है तो मुस्लिम बाहुल्य इंडोनेशिया में चले जाइए। वहां के लोकाचार में इसे महसूस किया जा सकता है और वहां के लोगों को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व भी है। दुनिया के सबसे बड़े मुस्लिम राष्ट्र इंडोनेशिया में रामायणकालीन परंपराओं का पालन अब भी किया जाता है। वहां रामायण के पात्रों को लोग जीते हैं और इसका प्रभाव इस इस्लामिक देश की संस्कृति में भी परिलक्षित होता है। इंडोनेशिया में रामलीला का मंचन बहुत प्रसिद्ध है जिसे भव्य तरीके से दिखाया जाता है। एक बार पाकिस्तान के कुछ बड़े नेता इंडोनेशिया की यात्रा पर गए तो उन्हें भी रामलीला का मंचन दिखाया गया। इस पर पाकिस्तान के एक नेता ने इंडोनेशिया के तत्कालीन राष्ट्रपति सुकर्णो से पूछा कि एक इस्लामिक देश में रामलीला का क्या काम? इस पर सुकर्णो ने दिलचस्प जवाब दिया कि इस्लाम हमारा धर्म है और रामायण हमारी संस्कृति। इंडोनेशिया में रामलीला का मंचन लाजवाब कर देता है।

राम इस महाद्वीप के रोम-रोम में हैं इसलिए वे किसी भी देश की राष्ट्रीय अस्मिता से सहज ही जुड़ जाते हैं। दक्षिण पूर्व एशिया स्थित देश थाईलैंड भी प्रभु श्रीराम के जीवन से प्रेरित है। थाईलैंड में राजा को राम कहा जाता है। राज परिवार अयोध्या नामक शहर में रहता है। वहां का राष्ट्रीय ग्रंथ रामायण है। वैसे थाईलैंड में थेरावाद बौद्ध को मानने वाले बहुमत में हैं, फिर भी वहां का राष्ट्रीय ग्रंथ रामायण है। जिसे थाई भाषा में 'राम-कियेन' कहते हैं, जिसका अर्थ राम-कीर्ति होता है, जो वाल्मीकि रामायण पर आधारित है।

रामलीला के कागज तथा बांस से बने रावण, मेघनाथ, जटायु, सुरसा, पर्वत, चारों फाटक, शेष नाग आदि की बनावट और कारीगरी में अनेक सभ्यताओं और संस्कृतियों का सुंदर समन्वय है और मोहर्रम के ताजियों की सजावट से भी इसकी साम्यता गहरे संदेश देती है। भारत के विभिन्न भागों में होने वाली रामलीला के पात्रों की वेशभूषा में मुगलकाल की झलक भी दिखती है। हनुमान और अन्य वानर सेना के घाघरे राजस्थान और गुजरात से जुड़ते हैं। रामलीला में राक्षसों की रूप सज्जा में केरल शैली दिखती है। पारसी नाटकों का प्रभाव भी इसमें दिख जाता है। इस प्रकार रामलीला में भारत के साथ दुनिया की विभिन्न संस्कृतियों के जीवंत दर्शन होते हैं।

वास्तव में राम के चरित्र की विशेषता धैर्य है, जिसके कारण उनका नाम जन-जन की जिह्वा पर विद्यमान है। मानवीय संबंधों के आदर्श रूप राम युगों-युगों से भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को अभिव्यक्त करते रहे हैं। जनमानस को आनंद और शांति प्रदान करते रहे हैं। भारत का हर नागरिक इस राष्ट्र की संस्कृति और सभ्यता पर राम के प्रभाव को भलीभांति जानता है और उस परम सत्ता को स्वीकार भी करता है। बहरहाल राम भारतीय संस्कृति की सहिष्णुता, समन्वय और सार्वभौमिक चरित्र और मान्यताओं की पहचान हैं। वे हमारी सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा हैं। राम का चरित्र और हमारी सभ्यता का विकास साथ-साथ चलने वाली वह अवस्था है जिसने इस राष्ट्र को मजबूत करने में सदा योगदान दिया है।

14,800 से अधिक संगठनों का एफसीआरए पंजीकरण रद कर चुकी है नरेंद्र मोदी सरकार वर्ष 2014 से अब तक। इससे उनके विदेशी धन प्राप्त करने पर रोक लग गई है।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
बुधवार 13 नवंबर 2019

जलवायु परिवर्तन के चलते भारत में सबसे ज्यादा मौतें

रिपोर्ट ▸ ग्रीन हाउस गैसों के 80 फीसद उत्सर्जन के लिए जी-20 देश जिम्मेदार

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

जलवायु परिवर्तन का खतरा वैसे तो पूरी दुनिया को अपनी गिरफ्त में ले लिया है, लेकिन भारत सहित जी-20 देशों में यह जानलेवा साबित होते जा रहा है। इसका अंदाजा दुनिया भर में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर नजर रखने वाले 'क्लाइमेट ट्रांसपेरेंसी' नामक वैश्विक संस्था की उस रिपोर्ट से लगाया जा सकता है, जिसमें जी-20 देशों में 1998 से 2017 के बीच हुई हजारों मौतों का ब्योरा दिया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक हर साल औसतन 16 हजार लोगों की मौत हो रही है। इनमें भारत को सबसे ज्यादा नुकसान उठाना पड़ रहा है, जहां औसतन हर साल 3,661 लोगों की मौत हुई है। इसके साथ ही जी-20 देशों को औसतन 142 अरब डॉलर (10.50 लाख करोड़ रुपये) का नुकसान आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ा है, जबकि अकेले भारत को करीब 12 हजार मिलियन डॉलर (84 हजार करोड़ रुपये) का आर्थिक नुकसान हुआ है।

क्लाइमेट ट्रांसपेरेंसी की ब्राउन टू ग्रीन रिपोर्ट-2019 में यह भी सामने आया है कि जलवायु परिवर्तन के लिए जिन ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को बड़ी वजह माना जा रहा है, उसके करीब 80 फीसद उत्सर्जन के लिए जी-20 देश जिम्मेदार हैं। हालांकि रिपोर्ट में भारत की इस मामले में तारीफ की गई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि अकेले भारत ने ही ठोस और दीर्घकालीन प्रयास किए हैं। जिसने धरती के बढ़ते तापमान (ग्लोबल वार्मिंग) को 1.5 डिग्री के आसपास ही सीमित रखा है। इस दौरान भारत की ओर से वैकल्पिक ऊर्जा को बढ़ावा देने के प्रयासों को सराहा गया है।

खासबात यह है कि यह रिपोर्ट ऐसे समय में आई है, जब पेरिस समझौते के तहत धरती के बढ़ते तापमान को 1.5 डिग्री सेल्सियस नीचे रखने का लक्ष्य दिया गया है। इसमें दुनिया के सभी विकसित देशों को उन देशों को आर्थिक मदद भी देना है, जो जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के उपायों को तेजी से आगे बढ़ा रहे हैं। इनमें भारत भी शामिल है। जो पिछले कुछ सालों में वन क्षेत्र को बढ़ाने में सफल रहा है।

रिपोर्ट में जी-20 के जिन और देशों में औसतन सालाना मौत के आंकड़े ज्यादा हैं, उनमें भारत के बाद रूस दूसरे नंबर पर है, जहां हर साल औसतन 2,944 लोगों की मौत हुई है। तीसरे नंबर पर फ्रांस है, जहां 1,121 लोगों की मौतें हुई है, चौथे नंबर पर इटली है, जहां 1,005 लोगों की मौत हुई है, वहीं पांचवे स्थान पर जर्मनी है, जहां औसतन हर साल मौत का आंकड़ा 475 है।

हालांकि इससे चलते होने वाले सबसे ज्यादा आर्थिक नुकसान का सामना करने वाले देशों में अमेरिका शीर्ष पर है। अमेरिका को सालाना 48 हजार मिलियन डॉलर (लगभग 3.5 लाख करोड़ रुपये)से ज्यादा का नुकसान है। दूसरे नंबर पर चीन है, जिसे सालाना 36 हजार मिलियन डॉलर (लगभग 2.6 लाख करोड़ रुपये)से ज्यादा का आर्थिक नुकसान हुआ है।

181 देशों में किया गया अध्ययन : जलवायु परिवर्तन के बदलावों का यह अध्ययन दुनिया के 181 देशों में किया गया है जो अलग-अलग 80 मानकों पर तैयार की गई है। इसके लिए दुनिया के 14 शीर्ष अनुसंधान संगठनों से जुड़े विशेषज्ञों की मदद ली गई है।

1998 से 2017 के बीच हर साल औसतन 3,661 लोगों की हुई मौत

जी-20 में कौन-कौन से देश हैं शामिल

जी-20 में 19 देश और यूरोपीय संघ शामिल है। 19 देश हैं-भारत, अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, इंडोनेशिया, इटली, जापान, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण कोरिया, तुर्की, ब्रिटेन और अमेरिका। खासबात यह है कि यह सभी देश अर्थव्यवस्था के लिहाज से भी काफी मजबूत माने जाते हैं।

इंतहा हो गई इंतजार की, मंत्रियों के नाम नहीं हो पा रहे तय

राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़

▸ हरियाणा में मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री ने की विभागों पर मंत्रणा, कल हो सकता मंत्रिमंडल का विस्तार

हरियाणा और महाराष्ट्र में एक ही दिन विधानसभा चुनाव हुए थे और नतीजे भी साथ ही आए। दोनों जगह त्रिशंकु विधानसभा के कारण हालात ऐसे बने कि असमंजस खत्म होने का नाम नहीं ले रहा। महाराष्ट्र में भाजपा, शिवसेना, कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस की 'गुगली' में सरकार बन नहीं पा रही और हरियाणा में मुख्यमंत्री मनोहर लाल और उप मुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला के शपथ लेने के बावजूद मंत्रियों और विभागों के नाम नहीं फाइनल हो पा रहे। हालांकि सब कुछ ठीक रहा तो गुरुवार को मंत्रिमंडल का विस्तार हो सकता है। राजभवन में शपथ ग्रहण समरोह की तैयारी पूरी है।

आज-कल, आज-कल में टलते आ रहे मंत्रिमंडल विस्तार को लेकर मंगलवार सुबह करीब दस बजे मुख्यमंत्री निवास पर मुख्यमंत्री मनोहर लाल और उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला के बीच करीब एक घंटा बैठक चली। विश्वस्त सूत्रों के अनुसार भारतीय जनता पार्टी और जननायक जनता पार्टी के बीच मंत्रियों के नाम और विभागों को लेकर सहमति बन गई है। भाजपा वित्त और उद्योग विभाग अपने पास रखेगी, जबकि कृषि, आबकारी एवं कराधान और टाउन एंड कंट्री प्लानिंग जजपा को दिए जा सकते हैं। दुष्यंत चौटाला की सहमति के बाद मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने पार्टी हाईकमान को भी इससे सूचित कर दिया है।

दोनों दलों के शीर्ष नेताओं की सहमति के बाद अब हरियाणा में किसी भी समय मंत्रिमंडल का विस्तार हो सकता है। मुख्यमंत्री के साथ बैठक के बाद दुष्यंत चौटाला ने कहा कि विभागों के बंटवारे और मंत्रिमंडल के विस्तार को लेकर चर्चा सार्थक रही है। उन्होंने कहा कि अगले 48 घंटे में हरियाणा में नई सरकार की तस्वीर साफ हो जाएगी।

विभागों के बंटवारे पर फंसा रहा पेच : मुख्यमंत्री मनोहर लाल और उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने 27 अक्टूबर को दीपावली के दिन शपथ ग्रहण की थी। मंत्रियों के नाम फाइनल और विभागों का बंटवारा नहीं होने से मुख्यमंत्री मनोहर लाल अपने स्तर पर फैसले ले रहे हैं। सूत्र बताते हैं कि दुष्यंत चौटाला, भाजपा से वित्त विभाग, कृषि, उद्योग, आबकारी एवं कराधान तथा टाउन एंड कंट्री प्लानिंग विभाग मांग रहे थे। मुख्यमंत्री इससे सहमत नहीं थे। भाजपा हाईकमान भी वित्त विभाग और उद्योग महकमे को जजपा को देने के पक्ष में नहीं था। हाई कमान के निर्देश पर ही मुख्यमंत्री ने गुरु पर्व पर बैठक के लिए दुष्यंत चौटाला को अपने निवास पर बुलाया था।

13 को शपथ ग्रहण पर संघ और भाजपा नहीं थे सहमत

विभागों को लेकर पेच फंसा होने के कारण मंत्रियों का शपथ ग्रहण समारोह लगातार टलता आ रहा है। राजभवन से जुड़े सूत्रों के मुताबिक पहले 13 नवंबर को मंत्रियों के शपथ ग्रहण की पूरी तैयारी थी, लेकिन अब इसे टालना पड़ रहा है। वजह यह कि संघ इस बात से सहमत नहीं था कि 13 नवंबर को मंत्रिमंडल का विस्तार किया जाए। इसकी वजह 13 के अंक को अशुभ माना जाना है।

हरियाणा में अब निर्दलीय विधायकों का प्रेशर गेम

बिजेंद्र बंसल, नई दिल्ली

हरियाणा में मंत्रिमंडल विस्तार से पहले निर्दलीय विधायकों ने भी प्रेशर गेम खेलना शुरू कर दिया हैं। मंगलवार दोपहर इस बार जीते सात निर्दलीय विधायकों में से पांच ने नई दिल्ली स्थित हरियाणा भवन में बैठक की। हालांकि इन विधायकों ने यही कहा कि यह उनकी सामान्य बैठक है। वे मंत्रिमंडल में शामिल करने के लिए कोई दबाव नहीं बना रहे हैं। हमने बिना शर्त मनोहर लाल सरकार को समर्थन दिया है। अब हमारे मान-सम्मान का ध्यान रखना मुख्यमंत्री मनोहर लाल और भाजपा के शीर्ष नेतृत्व का दायित्व है। बैठक में शामिल निर्दलीय विधायक थे, बलराज कुंडू, नयनपाल रावत, सोमवीर सांगवान, रणधीर गोलन और धर्मपाल गोंदर।

दो घंटे तक चली बैठक, साथ किया भोजन : करीब दो घंटे चली इस बैठक के पीछे सबसे बड़ा कारण यह माना जा रहा है कि इनमें से किसी को भी सरकार की तरफ से न तो मंत्री और न ही कोई और पद देने संबंधी चर्चा के लिए नहीं बुलाया गया। सूत्र बताते हैं कि निर्दलीय विधायक रणजीत सिंह चौटाला को मंत्रिमंडल में शामिल किए जाने के मुद्दे को लेकर ये निर्दलीय विधायक क्षुब्ध हैं। एक अन्य विधायक गोपाल कांडा का समर्थन लेने से भाजपा पहले ही इन्कार कर चुकी है। निर्दलीय विधायकों की बैठक दिल्ली में किए जाने के पीछे भी यह संदेश देना था कि भाजपा हाईकमान तक उनका संदेश पहुंच जाए। ये पांचों भाजपा से बगावत कर जीते हैं। चुनाव जीतने के बाद इन विधायकों से सरकार के जिन दूतों ने चर्चा की थी, वे भी अब इनसे कोई बात नहीं कर रहे हैं।

जपा से समर्थन मिलने के बाद नहीं मिल रही तवज्जो : भाजपा को जब से जजपा का समर्थन मिला है तब से सत्तारूढ़ दल ने निर्दलीय विधायकों को कोई खास तवज्जो नहीं दी। निर्दलीय विधायकों में सिर्फ रानिया के रणजीत सिंह ही मनोहर लाल और प्रदेश प्रभारी डॉ. अनिल जैन के नजदीक देखने को मिले। इसी कारण इन विधायकों को लगा कि केवल रणजीत सिंह को ही मंत्री बनाया जा रहा है।

> हरियाणा में भाजपा सरकार पूरे पांच साल चलेगी। हम पांचों विधायक भाजपा के समर्थक हैं और पूरे पांच साल तक भाजपा सरकार को समर्थन करते रहेंगे। मंत्रिमंडल में मुख्यमंत्री किसे शामिल करते हैं, यह उनका अधिकार है।
> -नयनपाल रावत, निर्दलीय विधायक, पृथला, फरीदाबाद

न्यूज गैलरी

गौतम नवलखा की जमानत याचिका खारिज

पुणे : स्थानीय सत्र अदालत ने एलगार परिषद मामले में गिरफ्तार माओवादी कार्यकर्ता गौतम नवलखा की जमानत अर्जी खारिज कर दी है। नवलखा ने पांच नवंबर को अग्रिम जमानत के लिए सत्र अदालत में याचिका दायर की थी। सुप्रीम कोर्ट ने पिछले महीने 15 अक्टूबर को गौतम नवलखा को गिरफ्तारी से चार हफ्ते की अंतरिम सुरक्षा प्रदान की थी। बांबे हाई कोर्ट द्वारा अपने ऊपर से मामला खत्म करने की याचिका खारिज किए जाने के बाद नवलखा ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। सुप्रीम कोर्ट ने तत्काल गिरफ्तारी से उन्हें राहत देते हुए स्थानीय अदालत जाने को कहा था। पुलिस के अनुसार, नवलखा ने 31 दिसंबर, 2017 को भीमा कोरेगांव में आयोजित एल्गार परिषद में भड़काऊ भाषण दिया था, जिसके चलते वहां जातीय हिंसा भड़क गई थी। पुलिस का कहना है कि एल्गार परिषद को माओवादियों का समर्थन प्राप्त था। (प्रेट्र)

शशि थरूर के खिलाफ जमानती वारंट जारी

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए आपत्तिजनक शब्दों का इस्तेमाल करने के मामले में राउज एवेन्यू की अदालत ने सांसद व कांग्रेस नेता शशि थरूर के खिलाफ जमानती वारंट जारी किया है। थरूर के इस मामले में गत सोमवार को अदालत में पेश नहीं होने पर अब 27 नवंबर के लिए जमानती वारंट जारी किया गया है। साथ ही अदालत ने पांच हजार रुपये की गारंटी भी मांगी है। इसके अलावा इस मामले में शिकायतकर्ता दिल्ली भाजपा के नेता राजीव बब्बर पर भी 500 रुपये जुर्माना लगाया है, क्योंकि बब्बर भी अदालत में पेश नहीं हुए थे। गौरतलब है कि थरूर के खिलाफ बब्बर ने अदालत में शिकायत दायर की थी। (जासं)

जुए में पत्नी को हार गया जुआरी, विरोध पर सिर फोड़ा

बांका : बिहार के बांका जिले के एक गांव में पति ने पत्नी को जुए में दांव पर लगा दिया और हार गया। दांव हारने के बाद पति ने पत्नी को जीतने वाले के साथ जाने को कहा तो उसने इन्कार कर दिया। विरोध करने पर उसने पहले पत्नी के गले में फंदा डाल कर उनकी जान लेने का प्रयास किया और जब वह किसी तरह पति के चंगुल से छूट कर भागने लगी तो पति ने उस पर पत्थर से हमला कर सिर फोड़ डाला। महिला ने पति के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई है। (जासं)

देव दीपावली पर दीपों के आलोक में उभरा दिव्य लोक

प्रमोद यादव, वाराणसी

धर्म नगरी काशी में कार्तिक पूर्णिमा पर 33 कोटि देवों के वास की मान्यता मूर्तमान नजर आई। मंगलवार शाम के साथ आसमान में पूनम का चांद भी चमका और धरा दीपों के आलोक में नहाई। उत्तर वाहिनी जाह्नवी के हर घाटों पर सुनहरी जगमग, पंचनदतीर्थ पंचगंगा घाट पर दपदप करता ऐतिहासिक हजारा तो गंगा की लहरों पर चमकते सितारों के उतरने -बिखरने जैसा अद्भुत नजारा। मोहपाश में बांधने वाला दृश्य और विह्वल प्रकाश पुकार में उमड़ते लोगों ने निरंतर आकार पाते दिव्य लोक को निहारा। देवाधिदेव महादेव की नगरी काशी में अनूठे जल उत्सव देव दीपावली की शाम कुछ ऐसी ही रंगत देखने के लिए देश-दुनिया से जुटे सैलानियों ने इस नजारे को नयनों में समेटा और विभोर हो उठे।

उत्सव की तैयारियां तो हफ्ते भर से की जा रही थीं, लेकिन तिथि विशेष पर तीसरे पहर के अवसान के साथ नगर की सड़क और गलियों में भीड़ मानो गंगा घाटों से गलबहियां करने को इतरा उठीं। दीपों का थाल सजाए और दिल में हसरतों की रंगोली बनाए जन सैलाब ने गंगा घाटों का रुख किया। न कोई आमंत्रण और न बुलावा, लेकिन देव दीपावली और गंगा के शृंगार पर्व पर सभी बधावा लेकर पहुंचे। श्रद्धा के भाव और गंगा भक्तों की अपार आस्था देख मानो घाट जीवंत हो इठलाए। साफ-सफाई, रंगरोगन से चकाचक हर भवन, हर अट्टालिका दुल्हन सी सजी, सीढ़ियां रंग-बिरंगी रोशनी और इंद्रधनुषी रंग बिखेरती विद्युत मालिकाओं सी जगमग हो उठी। गोधूलि बेला के साथ ही शंखनाद और पंचगंगा घाट के 'हजारा दीप स्तंभ' पर पहले दीप की रोशनी टिमटिमा उठी। आदिकेशव घाट से सामनेघाट तक पसरा उत्तरवाहिनी गंगा का विस्तृत पाट टिमटिमाते दीपों की जगमग में डूब गया। दृश्य ऐसा कि मानो गंगा के समानांतर ज्योति गंगा हिलोर ले रही हो। जाह्नवी के कदम चूमने सितारे धरती पर उतर आए हों। सब कुछ अद्भुत, हर दृश्य अलौकिक, हर पल रंग बदलता। कहीं आरती की लौ, कहीं आतिशबाजियों की चकाचौंध। कहीं अमर शहीदों को नमन तो कहीं जयकारों के बीच गंगा अर्चना। धार्मिक और सांस्कृतिक नजारे के बीच राष्ट्र के लिए शहीद जवानों की याद से जुड़े पल।

देव दीपावली पर काशी दुर्गोत्सव समिति ने शिवाला घाट पर दीप जलाए और कल्पना की उड़ान को रंगोली के रूप में सीढ़ियों पर ढाल दिया। जागरण

लखनऊ के मनकामेश्वर उपवन घाट पर बिखरी दीपोत्सव की छटा

जासं, लखनऊ : लाखों दीपों से जगमग लखनऊ का मनकामेश्वर उपवन घाट मंगलवार की शाम भक्ति से सराबोर हो उठा। चार हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने देव दीपावली के उत्सव में दीप जलाकर गोमती को स्वच्छ और निर्मल बनाने का संकल्प भी लिया। जलशक्ति मंत्री डॉ. महेंद्र सिंह और महापौर संयुक्ता भाटिया की मौजूदगी में दीपोत्सव हुआ। मंदिर की महंत देव्या गिरि ने बताया कि दीपोत्सव रिकॉर्ड तो बनना नहीं था, इसलिए जलते दीपक की गिनती नहीं की गई।

राज्यपाल की सुरक्षा पर ममता सरकार की आपत्ति दरकिनार

जागरण संवाददाता, कोलकाता

▸ गृह मंत्रालय के निर्देश पर धनखड़ को मिली सीआरपीएफ की जेड श्रेणी सुरक्षा

बंगाल में ममता बनर्जी सरकार की आपत्ति को दरकिनार कर राज्यपाल जगदीप धनखड़ को अर्द्धसैनिक बल की सुरक्षा प्रदान कर दी गई है। सुरक्षा का कार्यभार सीआरपीएफ के जवानों ने मंगलवार से संभाल लिया है। इससे पहले 15 अक्टूबर को केंद्रीय गृह मंत्रालय की ओर से निर्देश जारी कर कहा गया था कि राज्यपाल की देशभर में कहीं भी सुरक्षा में सीआरपीएफ जवानों की तैनाती होगी। इस पर राज्य सचिवालय नवान्न की ओर से आपत्ति जाहिर करते हुए गृह मंत्रालय को चिट्ठी लिख कर निर्देश पर पुनर्विचार करने का आग्रह किया गया था।

राजभवन के सूत्रों ने बताया कि धनखड़ को सीआरपीएफ द्वारा जेड श्रेणी की सुरक्षा प्रदान की गई है। बंगाल पुलिस के साथ आगे से राज्यपाल के काफिले के साथ सभी जगह छह सीआरपीएफ जवान तैनात रहेंगे। इसके अलावा राजभवन में राज्यपाल निवास व कार्यालय के बाहर भी 24 घंटे सीआरपीएफ के जवानों की तैनाती रहेगी। मंगलवार को राज्यपाल अपने नए सुरक्षा कवच के साथ साल्ट स्टेडियम में आयोजित एक कार्यक्रम में शामिल होने पहुंचे।

गौरतलब है कि दो महीने पहले जादवपुर विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के कार्यक्रम में हिस्सा लेने पहुंचे केंद्रीय मंत्री बाबुल सुप्रियो को वामपंथी समर्थक उग्र छात्रों ने घेर लिया था। बाद में उन्हें लाने के लिए राज्यपाल को पहुंचना पड़ा था और इस दौरान छात्रों ने राज्यपाल के सरकारी वाहन को भी रोक दिया था। इसकी शिकायत भाजपा की ओर से केंद्रीय गृह मंत्रालय से भी की गई थी। मामले ने जब तूल पकड़ा तो राज्य सरकार की ओर से गृह मंत्रालय को चिट्ठी लिख कर कहा गया था कि यह राज्य सरकार की जिम्मेदारी है कि वह राज्य के संवैधानिक प्रमुख राज्यपाल की सुरक्षा का पूरा खयाल रखे। राज्य प्रशासन ने यह भी कहा कि धनखड़ के शपथ लेने के बाद तत्काल प्रभाव से उन्हें जेड श्रेणी की सुरक्षा प्रदान की गई है। फिर अचानक केंद्रीय गृह मंत्रालय ने हमसे सलाह किए बिना राज्यपाल की सुरक्षा सीआरपीएफ को सौंपने का निर्णय क्यों किया? राज्य की ओर से गृह मंत्रालय को निर्णय पर पुनर्विचार करने को कहा गया था।

कैंसर के इलाज का बुनियादी ढांचा उन्नत करे सरकार : संसदीय समिति

नई दिल्ली, प्रेट्र : एक संसदीय समिति ने सरकार से कैंसर के इलाज के लिए बुनियादी ढांचा को उन्नत करने का अनुरोध किया है। इसके साथ ही समिति ने प्रमुख हेल्थकेयर इंस्टीट्यूट के नेटवर्क के माध्यम से इलाज सस्ता बनाने के लिए कहा है। समिति ने देश में करीब दो तिहाई से ज्यादा रोगियों की मौत होने पर चिंता जताई है।

विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन संसद की स्थाई समिति ने 'मुंबई में टाटा मेमोरियल सेंटर (टीएमसी) के विस्तृत नेटवर्क के माध्यम से भारत में कैंसर के इलाज में परमाणु ऊर्जा विभाग की भूमिका के विस्तार' पर अपनी रिपोर्ट सौंपी है। जयराम रमेश की अध्यक्षता में समिति के सदस्यों ने राज्यसभा के सभापति एम. वेंकैया नायडू को यह रिपोर्ट सौंपी है। ऊपरी सदन सचिवालय ने एक बयान में इस आशय की जानकारी दी है। उपराष्ट्रपति नायडू ने समिति से कहा कि वह संबंधित मंत्री से आवश्यक कार्रवाई के लिए रिपोर्ट का अध्ययन करने को कहेंगे।

बयान में कहा गया है, 'इसने (समिति) ने टाटा मेमोरियल सेंटर (टीएमसी) द्वारा प्रस्तावित 'हब एंड स्पोक' मॉडल को विस्तृत रूप से अपनाने की सिफारिश की है।' टीएमसी ने अपने प्रस्ताव में कहा है कि सामान्य और न्यूनतम जटिल कैंसर केयर सुविधा रोगियों के घरों (स्पोक) के समीप मुहैया कराया जाना चाहिए ताकि उनके जीवन और उनके परिवारों की परेशानी को कम किया जा सके। घर के समीप इलाज मुहैया होने से रोगियों को लंबी दूरी तय कर महानगरों तक नहीं आना पड़ेगा। रिपोर्ट के मुताबिक, असामान्य कैंसर का इलाज और जटिल इलाज की जरूरत विशिष्ट (हब) के विशेषज्ञ केंद्रों द्वारा मुहैया कराया जा सकता है।

समिति ने परमाणु ऊर्जा के राज्यमंत्री की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय समिति गठित करने का सुझाव दिया है। इसमें सभी राज्यों के मुख्य सचिव और केंद्र शासित प्रदेशों के प्रशासक के अलावा टीएमसी के निदेशक सदस्य के रूप में शामिल होंगे। यह उच्चस्तरीय समिति एक समयसीमा में हब एंड स्पोक मॉडल के लिए रूपरेखा तैयार करेगी।

नायडू बोले-अंगदान नियमन के लिए आसान की जाए प्रक्रिया

नई दिल्ली, प्रेट्र : उपराष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू ने अंगदान की प्रक्रिया और नियमों को आसान बनाने की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि देश में अंगदान करने वालों की कमी के कारण कुछ लोग इससे जुड़ी अवैध गतिविधियां संचालित करने वालों के संपर्क में आकर इस अनैतिक प्रक्रिया का हिस्सा बन जाते हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि इसे रोकने के लिए अंगदान और अंग प्रत्यारोपण की सुविधा जिला स्तर पर मुहैया कराना ही इस समस्या का हल हो सकता है।

नायडू ने विश्व हिंदू परिषद (विहिप) द्वारा आयोजित 'देहदान उत्सव' को संबोधित करते हुए युवा पीढ़ी से अंगदान आंदोलन का हिस्सा बनने की अपील की। एक बयान के मुताबिक, उपराष्ट्रपति ने कहा कि भारतीय परंपरा के बारे में वैज्ञानिक दृष्टि रखते हुए युवा समाज को अंगदान को मिशन बनाने के लिए तैयार कर सकते हैं। मेडिकल कॉलेजों में शवों की कमी पर चिंता जताते हुए नायडू ने कहा कि हमारे लिए अपने शरीर को विज्ञान को दान करने की जरूरत है।

मप्र सरकार के मंत्री ने की सिंधिया की चरण वंदना, बोले-मेरे लिए गर्व की बात

नईदुनिया, भोपाल

मध्य प्रदेश के खाद्य मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने पूर्व केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की चरण वंदना की। यह घटना मीडिया के कैमरों में कैद होने के बाद तोमर ने कहा कि वह सिंधिया के सिपाही हैं और उनके लिए यह गर्व की बात है, जबकि सिंधिया ने इसके लिए तोमर को गाड़ी में बैठाकर डांटा। बाद में पत्रकारों से चर्चा में सिंधिया ने कहा कि यह गलत है। मैं इसके खिलाफ हूं। घटना सोमवार को सिंधिया के ग्वालियर पहुंचने पर रेलवे स्टेशन की है।

गौरतलब है कि तोमर हर बार सिंधिया के पैर छूते हैं। उधर, नेता प्रतिपक्ष गोपाल भार्गव ने कहा कि प्रद्युम्न सिंह तोमर के नेता हैं ज्योतिरादित्य सिंधिया। वे उनको अपना नेता मानते हैं तो महल के अंदर या सर्किट हाउस में भक्तिभाव दिखाएं, सार्वजनिक रूप से कदमों पर लेटना लोकतंत्र का अपमान है।

ग्वालियर में ज्योतिरादित्य सिंधिया को दंडवत प्रणाम करते मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर। वीडियो ग्रैब

अब श्रम मंत्री बोले-मैं महाराज सिंधिया का चौकीदार हूं...

अब श्रम मंत्री महेंद्र सिंह सिसौदिया ने खुद को सिंधिया का चौकीदार बताया है। मंगलवार को बमोरी विधानसभा क्षेत्र के दौरे पर आए श्रम मंत्री ने कहा कि यह क्षेत्र महाराज सिंधिया का परिवार है और मैं उनका चौकीदार हूं।

गुरुद्वारे में निगमायुक्त ने छुए मंत्री वर्मा के पैर

उधर, मंगलवार को देवास के गुरुद्वारे में निगमायुक्त संजना जैन ने मंत्री सज्जन वर्मा के पैर छू लिए। मामले पर संजना जैन ने कहा कि छुट्टी वाले दिन मैं वहां पूजा कर रही थी। अपनी निजी आस्था के चलते अगर मैं किसी को सम्मान देती हूं तो इसमें क्या गलत है।

तापमान गिरा

दिल्ली का न्यूनतम तापमान सामान्य से दो डिग्री कम 11.7 डिग्री सेल्सियस पहुंचा, जम्मू-कश्मीर में सक्रिय पश्चिमी विक्षोभ के चलते बदला मौसम

पहाड़ों पर बर्फबारी का मैदान में दिखा असर, दिल्ली में बढ़ी ठंड

जेएनएन, नई दिल्ली

▸ तापमान गिरने से दिल्ली-एनसीआर में फिर बढ़ा स्मॉग

▸ हवा में नमी का स्तर 89 फीसद तक रहा, आज आंशिक रूप से बादल छाए रहने के आसार

पहाड़ों पर पिछले दिनों हुई बर्फबारी का असर अब मैदानी इलाकों में भी दिखना शुरू हो गया है। यही कारण है कि दिल्ली में धीरे-धीरे तापमान में गिरावट आने लगी है, इससे सुबह और शाम के समय ठंड बढ़नी शुरू हो गई है। मंगलवार को दिल्ली का न्यूनतम तापमान महज 11.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। जो कि सामान्य से दो डिग्री कम है।

जम्मू-कश्मीर में सक्रिय पश्चिमी विक्षोभ की वजह से रात से ही बादल भी छाए रहे। लिहाजा, सुबह के समय ठिठुरन महसूस हुई। बुधवार को भी आंशिक रूप से बादल छाए रहेंगे, हालांकि बारिश की फिलहाल कोई संभावना नहीं है। वहीं, शुक्रवार से सोमवार तक हवा की गति 15 से 20 किलोमीटर प्रति घंटे रहने के आसार हैं, जिससे ठंड बढ़ेगी।

दिल्ली एनसीआर में फिर बढ़ा स्मॉग : मंगलवार को दिल्ली में न्यूनतम तापमान 11.7 होने से दृश्यता 150 मीटर तक सिमट गई। सूरज निकलने के बाद यही कोहरा स्मॉग में बदल गया। यह हाल सिर्फ दिल्ली का नहीं बल्कि गाजियाबाद और नोएडा में भी स्मॉग बढ़ गया है। हवा में नमी का स्तर 38 से 89 फीसद तक रहा।

उत्तराखंड में गुरुवार से फिर बढ़ेगी ठंड : उत्तराखंड में मौसम भले ही शुष्क बना हुआ है, लेकिन गुरुवार से यह फिर करवट बदल सकता है। इस दौरान पर्वतीय क्षेत्रों में बारिश तो 3500 मीटर की ऊंचाई तक बर्फबारी की संभावना है। मौसम विभाग के अनुसार शुक्रवार को भी मौसम का रुख ऐसा ही बना रहेगा। जबकि मंगलवार को प्रदेश में मौसम साफ रहा। बता दें कि इन दिनों बदरीनाथ में प्रतिदिन डेढ़ से दो हजार श्रद्धालु दर्शनों को पहुंच रहे हैं। ऐसे में कड़ाके की सर्दी को देखते हुए बदरीनाथ नगर पंचायत ने श्रद्धालुओं के लिए अलाव की व्यवस्था की है।

जम्मू-श्रीनगर हाईवे खुला, फंसे वाहन निकाले गए : जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर हुए भूस्खलन को हटाकर दो दिन बाद मंगलवार को यातायात बहाल कर दिया गया। इससे कश्मीर का देश से सड़क संपर्क बहाल हो गया है। हाईवे खुलने पर सबसे पहले जगह-जगह फंसे वाहनों को निकाला गया। इससे लंबा जाम भी लगा रहा। इस बीच, श्रीनगर में हल्की बूंदाबादी और बादल छाए रहने से कड़ाके की ठंड रही। कश्मीर में ऊपरी पर्वतीय क्षेत्रों में हल्का हिमपात भी हुआ है। मौसम विभाग ने 16 से 18 नवंबर के बीच राज्य में बारिश और बर्फबारी की आशंका जताई है।

मंडी और धर्मशाला से ज्यादा गर्म हुआ शिमला

हिमाचल प्रदेश में मंडी और धर्मशाला में शिमला से ज्यादा ठंड पड़ रही है। मंडी का न्यूनतम और अधिकतम तापमान शिमला से कम रहा। जबकि धर्मशाला में अधिकतम तापमान कम दर्ज किया गया है। प्रदेश में मंगलवार को दिनभर बादल छाए रहने के बावजूद न्यूनतम और अधिकतम तापमान में वृद्धि दर्ज की गई है। मौसम विभाग के अनुसार 14, 15 और 16 नवंबर को प्रदेश के ऊंचे क्षेत्रों में कुछ स्थानों पर बर्फबारी और मैदानी क्षेत्रों में वर्षा की संभावना है। केलंग में न्यूनतम तापमान -2.2 डिग्री सेल्सियस रहा।

वरिष्ठ आइएएस अधिकारी के खाते से उड़ाए 80 हजार रुपये

राज्य ब्यूरो, शिमला : हिमाचल प्रदेश के वरिष्ठ आइएएस अधिकारी के बैंक खाते से शातिरों ने ऑनलाइन 80 हजार रुपये उड़ा लिए। अपराध की शिकायत 24 घंटे के भीतर करने पर सीआइडी के साइबर विंग ने इस पैसे को रिफंड करवाने में बड़ी कामयाबी हासिल की है। सूत्रों के अनुसार अधिकारी के बैंक खाते में ठगी का पैसा पेटीएम अथॉरिटी के माध्यम से जमा भी हो गया है। इसके लिए उन्होंने साइबर विंग के अफसरों की पीठ थपथपाई है। कम मामले ही ऐसे रिपोर्ट होते हैं, जहां ठगी के शिकार व्यक्ति तत्काल जांच एजेंसी को शिकायत करते हों।

सूत्रों के अनुसार सरकार में अहम ओहदे पर बैठे आइएएस अधिकारी के स्वजन ने पेटीएम इस्तेमाल किया। इस बीच मोबाइल फोन पर कॉल आई और दूसरी तरफ के व्यक्ति ने कहाकि वह बैंक से बोल रहे हैं। उसकी बातों में आकर उसे वन टाइम पासवर्ड (ओटीपी) बता दिया गया। उसके बाद उनके खाते से 80 हजार रुपये निकाल लिए गए। इसकी शिकायत तत्काल साइबर विंग को दी गई।

स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर ने गाए हैं हजारों गानें

▸ प्रथम पृष्ठ से आगे

2001 में लता जी को भारत रत्न से नवाजा गया था। वर्ष 1989 में दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित लता को फ्रांस के सबसे बड़े नागरिक पुरस्कार 'ऑफिसर्स ऑफ द लीजन ऑफ ऑनर' से भी सम्मानित किया गया था। उनके गाने 36 भारतीय भाषाओं में रिकार्ड किए गए हैं। वह मानव इतिहास में बतौर कलाकार सबसे ज्यादा गाने रिकार्ड कराने वाले अकेली गायिका हैं। इसके लिए वर्ष 1974 में उनका नाम गिनीज बुक ऑफ रिकार्ड्स में दर्ज किया गया था। तब 1948 से 1974 के बीच उनके गाए 25 हजार से अधिक गानों को इसमें शामिल किया गया था। वर्ष 2004 में रिलीज यश चोपड़ा निर्देशित फिल्म 'वीर जारा' के सभी गाने गए थे। तब उनकी उम्र 75 वर्ष थी। इस वर्ष उन्होंने भारतीय सेना को ट्विट्यूट देने के लिए 'सौगंध मुझे इस मिट्टी की...' गाना गाया था, जिसे 30 मार्च को रिलीज किया गया था।

दुआओं का सिलसिला जारी : सोशल मीडिया पर लता मंगेशकर के जल्द स्वस्थ होने के लिए प्रार्थनाएं की जा रही है। शबाना आजमी

6600 करोड़ रुपये की दरकार है उत्तराखंड को 'हर घर को नल से जल' योजना के लिए। इसके तहत 2024 तक हर घर को नल से जोड़ना चाहती है सरकार। प्रदेश में फिलहाल 12.5 लाख से अधिक घरों में नहीं है पेयजल कनेक्शन।

दुश्मन को 'घर में घुसकर मारेंगे' आइबीजी के लड़ाके

इसी माह आकार ले लेगा सेना का पहला इंटीग्रेटेड बैटल ग्रुप

जागरण विशेष

नवीन नवाज, जम्मू

- आदेश मिलने के 12 घंटे के भीतर कार्रवाई में सक्षम
- लद्दाख, पूर्वोत्तर और राजस्थान में भी होगी चरणबद्ध तैनाती

सेना का इंटीग्रेटेड बैटल ग्रुप (आइबीजी) आदेश के 12 घंटे के भीतर ही दुश्मन को घर में घुसकर ढेर कर देगा। यह इसकी विशेष दक्षता में शामिल है। प्रतिरक्षा हो या आक्रमण, युद्ध जैसी किसी भी स्थिति से तुरंत निबटने में यह दस्ता हर क्षण तत्पर रहेगा। इस माह के अंत तक जम्मू से सटी अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास इसकी तैनाती होने जा रही है। जिसके बाद लद्दाख, पूर्वोत्तर और राजस्थान में भी चरणबद्ध तैनाती होगी।

यह महज विशेष प्रशिक्षण प्राप्त कमांडोज का दस्ता मात्र नहीं, बल्कि पैदल सेना, टैंक, तोपखाना, वायु रक्षा, संचार और युद्धकौशल के तमाम अत्याधुनिक हथियारों से लैस पूरी यूनिट है। दुश्मन की हर चाल को विफल बनाने की हरसंभव क्षमता-योग्यता इसमें निहित है। इसीलिए इसे इंटीग्रेटेड बैटल ग्रुप यानी एकीकृत युद्धक समूह कहा गया है। आवश्यकता पड़ते ही तुरंत धावा बोल देना इसकी सबसे बड़ी खूबी है। यानी तैयारी या रणनीति बनाने के लिए कोई अतिरिक्त समय की इसे आवश्यकता नहीं पड़ेगी, बस आदेश मिलने की ही देर रहेगी।

प्रतीकात्मक तस्वीर। जागरण आर्काइव

सीमा से सटे हर क्षेत्र में दुश्मन के खतरे, वहां की भौगोलिक चुनौतियों और लक्ष्य (3टी- थ्रेट, टेरेन और टास्क) को ध्यान में रखकर इसके लड़ाकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जा रहा है। साथ ही परिस्थितियों के अनुकूल साजोसामान से भी सुसज्जित किया गया है। सूत्रों के अनुसार आइबीजी का आकार किसी भी सैन्य ब्रिगेड से बड़ा और किसी डिवीजन से थोड़ा कम होगा। इसमें शामिल अधिकारियों, जवानों की संख्या क्षेत्रीय और ऑपरेशन की आवश्यकताओं के अनुरूप तय की जाएगी। आइबीजी की कमान मेजर जनरल रैंक के एक अधिकारी के पास होगी और वह संबंधित कोर के जीओसी के अधीन होगा। अधिकारियों के अनुसार जम्मू में तैनात किए जाने वाले पहले बैटल ग्रुप को हिमाचल प्रदेश के योल स्थित सेना की सबसे युवा कोर कोर-9 के अधीन तैयार किया गया है। इस ग्रुप की ऑपरेशनल जिम्मेदारियों का प्रशिक्षण और पुष्टि हो चुकी है। इसका लक्ष्य सेना को बदलती चुनौतियों और सीमापार से बढ़ते खतरों के मुताबिक पूरी तरह समर्थ बनाया जाना है। बता दें कि इस ग्रुप के गठन को बीते साल सैद्धांतिक मंजूरी दी गई थी। इसे सेना के संगठनात्मक ढांचे में बदलाव की दिशा में एक बड़ा कदम माना जा रहा है।

जम्मू से सटी सीमा पार पाकिस्तानी सेना ने करीब छह माह से अपने टी-80यू टैंक के साथ रेजीमेंट और अल-खालिद ब्रिगेड को तैनात रखा हुआ है। उसने यह टैंक अंतरराष्ट्रीय सीमा से करीब 50-60 किलोमीटर दूर अलर्ट पर रखे हैं। ऐसे में पाकिस्तान की साजिश के मुकाबले के लिए यह दस्ता तैयार रहेगा।

अधिकारियों के अनुसार प्रत्येक बैटल ग्रुप में लगभग छह से आठ यूनिट एकीकृत की गई हैं। प्रत्येक ग्रुप का ढांचा और उनकी दक्षता संबंधित इलाके में दुश्मन की तैयारियों को ध्यान में रखते हुए तय की गई है। आदेश मिलते ही यह किसी भी पल दुश्मन के इलाके में दाखिल होने के लिए भी तत्पर रहेंगे। यह लड़ाके मौजूदा स्ट्राइकिंग कोर के मुकाबले कहीं अधिक सक्रिय और तीव्र कार्रवाई करने में सक्षम होंगे।

जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें www.jagran.com/topics/jagran-special

'ग्रामोफोन' से बदल रहे ग्रामीण अर्थव्यवस्था का हाल

उपलब्धि ▸ तीन साल में छह लाख रुपये से शुरू हुआ स्टार्टअप 100 करोड़ रुपये का आंकड़ा कर चुका पार

गजेंद्र विश्वकर्मा, इंदौर

- इंदौर में ग्रामोफोन स्टार्टअप को संचालित कर रहे हैं आइआइटी और आइआइएम से निकले युवा

पर्यावरण संरक्षण

मध्यप्रदेश में ग्रामोफोन स्टार्टअप न केवल किसानों को बचत की राह दिखा रहा है, वरन कृषिभूमि को रसायनों की मार से भी बचाने का काम कर रहा है। यानी एक पंथ दो काज। महंगे रसायनों के अनावश्यक उपयोग से किसानों को बचाकर उनकी आय में वृद्धि के तमाम उपाय देना ग्रामोफोन की अवधारणा है। तीन साल में छह लाख रुपये से शुरू हुए इस स्टार्टअप ने 100 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया है।

मध्यप्रदेश के इंदौर में ग्रामोफोन स्टार्टअप को संचालित करने वालों में आइआइटी और आइआइएम से निकले सुशिक्षित युवाओं की पूरी टीम है। इन युवाओं का कहना है कि बेहतर शिक्षण संस्थानों से उच्चशिक्षा प्राप्त करने के बाद अच्छे पैकेज पर नौकरी के कई विकल्प थे, लेकिन इन्होंने कृषि और ग्रामीण क्षेत्र में उद्यम की संभावनों को चुना।

ग्रामोफोन के संस्थापक तौसीफ खान कहते हैं, पढ़ाई के दौरान ही तय कर लिया था कि गांवों, किसानों और पर्यावरण संरक्षण के लिए कुछ बड़ा काम करना है। परिवार की पृष्ठभूमि भी गांव-कृषि से होने के कारण इसने प्रेरणा का काम किया। आइआइटी खड़गपुर के बाद आइआइएम अहमदाबाद में भी हम बात किया करते थे कि किस तरह यह संभव हो सकता है। 2016 में मध्यप्रदेश के किसानों से जुड़ने का काम शुरू किया। इसके लिए इंदौर में ऑफिस स्थापित किया। निशांत वत्स, हर्षित गुप्ता, आशीष सिंह और मैं, पहले हम चार पार्टनर थे, फिर 50 लोगों की टीम के साथ आसपास के कई गांवों में दायरा बढ़ाया। वहां खेती करने में आ रही परेशानियों को जाना।

इंदौर, मप्र : टीम ग्रामोफोन के युवा सदस्य। नईदुनिया

कुछ महीने पहले ही कंपनी को 24 करोड़ रुपये की फंडिंग भी मिली है। इस समय कंपनी की वैल्यू 100 करोड़ की हो गई है। तौसीफ ने बताया कि कंपनी की शुरुआत मात्र छह लाख रुपये से हुई थी।

फसल में अगर बीमारी लग जाए तो इसके लिए कौन सा कीटनाशक कारगर है, किस कीटनाशक या खाद की कितनी मात्रा कब उपयोग की जानी चाहिए, इसका मुद्दा आधारित समुचित अध्ययन हम किसानों को मुहैया कराते हैं। जब पहली फसल आई तो पता लगा कि कम लागत में किसानों का 40 फीसद प्रोडक्शन बढ़ गया। लागत 20 फीसद कम हो गई। यह बात एक गांव से दूसरे में तेजी से फैली और एक साल में हमसे 5 हजार किसान जुड़ गए। किसानों की तरह तरह के सवाल का जवाब देने के लिए कॉल सेंटर भी स्थापित किया गया है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंसी बेस्ड एप भी है। आज मध्यप्रदेश ही नहीं,

छत्तीसगढ़, राजस्थान, उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों के 2.50 लाख से ज्यादा किसान जुड़ चुके हैं। तीन साल में करीब 6 लाख किसानों को इससे फायदा मिल चुका है। हर दिन 3 हजार किसान विभिन्न समाधान के लिए संपर्क करते हैं। जो किसान स्मार्टफोन का उपयोग नहीं करते हैं उन्हें बेसिक फोन से भी मिस्ड कॉल देकर समाधान देने की सुविधा दी गई है। तौसीफ खान का कहना है कि हमारा मकसद देश में कृषि का ऐसा सिस्टम बनाना है, जिससे किसान कीटनाशक और अन्य प्रक्रिया को लेकर उलझन में न रहे। बाजार में कई तरह की कीटनाशक, खाद और बीज कंपनियां बेचती है। कई बार किसान को जानकारी नहीं होती और उसे नुकसान उठाना पड़ता है। हम किसानों के लिए इस तरह का सिस्टम बना देंगे, जिससे वे खुद जान जाएंगे कि देश में कितने किसान क्या कीटनाशक और किस खाद का उपयोग कर रहे हैं और उन्हें इससे कितना फायदा मिल रहा है। इसके रिव्यू, फीडबैक और सभी तरह की जानकारी इंटरनेट या डाटा के रूप में कहीं स्टोर होने से किसानों का समय और पैसा बर्बाद नहीं होगा।

ऐसे बढ़ता गया कारवां

- देश के टॉप टेन कृषि स्टार्टअप में शुमार
- मध्यप्रदेश सरकार का कृषि सम्मान
- वाट्सएप और स्टार्टअप इंडिया द्वारा कराए गए चैलेंज अवॉर्ड में टॉप 5 में शुमार
- सुपर स्टार्टअप एशिया में गोल्ड विनर
- फोर्ब्स पत्रिका ने 2018 और 2019 में इनोवेटिव स्टार्टअप में स्थान दिया

सरोकार की अन्य खबरें पढ़ें www.jagran.com/topics/positive-news

फर्जी टिकट लगा डाक कर्मियों ने लगाया 33 हजार रुपये का चूना

आलोक शर्मा, कानपुर

- उप्र के कानपुर में डाक विभाग की बिजनेस पोस्ट शाखा में कार्यरत कर्मियों का कारनामा
- देश में अपने उपभोक्ताओं को निजी कंपनी ने भेजी थी 8,423 डाक

डाक विभाग में जिनके कंधों पर खजाना जुटाने का जिम्मा है, वही कंगाल बनाने में जुटे हैं। इससे पर्दा तब उठा जब कर्मचारियों ने 33 हजार रुपये के फर्जी टिकट लगा डाक पोस्ट कर दी। मामले की शिकायत के बाद चीफ पोस्ट मास्टर को जांच सौंपी गई है। डाक विभाग में कई ऐसी शाखाएं हैं जिनका कार्य व्यापार को बढ़ाना है। कानपुर में ऐसी ही एक शाखा है बिजनेस पोस्ट। इसका काम कंपनियों, एजेंसियों और फर्मों की डाक बल्क (थोक) में लेकर पोस्ट करना है। एक माह पहले कानपुर में कार्यरत निजी कंपनी ने देश भर में अपने उपभोक्ताओं को 8,423 डाक भेजी थी।

सूत्रों के मुताबिक बिजनेस पोस्ट में कार्यरत डाक कर्मी ने कंपनी से चेक की बजाय नकद धनराशि ले ली। लिफाफा 56 ग्राम का था लिहाजा सात रुपये का डाक टिकट लगना था, लेकिन कर्मचारियों ने चार-चार रुपये की दो डाक टिकट लगाई। इसमें एक टिकट सही था जबकि दूसरा उपयोग (डिफेस) किया हुआ था। इस तरह 8,423 लिफाफों पर 33,692 रुपये के फर्जी टिकट लगाए गए। सूत्रों की मानें तो होमी चार रुपये की जो डिफेस टिकट लगाई गई है वह तीन साल से प्रधान डाकघर बड़ा चौराहा आई ही नहीं। मुंबई में मामला पकड़ में आया।

> जांच चीफ पोस्ट मास्टर को सौंपी गई है। रिपोर्ट आने पर ही कुछ स्पष्ट कह सकता हूं। डिफेस डाक टिकटों का प्रयोग हुआ है तो दोषी पर सख्त कार्रवाई होगी।
> –विनोद कुमार वर्मा, पोस्टमास्टर जनरल, कानपुर परिक्षेत्र

मशीन से होती टैगिंग : दरअसल बिजनेस पोस्ट के जरिये भेजी जाने वाली डाक पर फेसिंग मशीन से टैगिंग की जाती है, जिससे लिफाफे पर तारीख और धनराशि उभरकर आ जाती है और डाक टिकट नहीं लगाना पड़ता। इससे विभाग को फायदा होता है। इस मामले में ऐसा नहीं किया गया।

जीवेम शरद : शतम को साकार कर रहे हरि नारायण सिंह

ब्रजेश पाठक, सासाराम

पढ़ने के लिए जरूरी नहीं कि आंखों पर चश्मा लगे। सुनने के लिए कानों में मशीन की दरकार भी नहीं। मुकदमों की पैरवी करते समय बुलंद आवाज अदालत में गूंज उठती है। जीवेम शरदः शतम को साकार कर रहे ये हरि नारायण सिंह हैं। जिंदगी के सौ साल पूरे कर चुके हैं और आगे जीने, कुछ कर गुजरने की ललक नौजवानों जैसी।

सासाराम में गौरक्षणी मोहल्ला के वाशिंदे हैं हरि नारायण सिंह। 1918 में 21 सितंबर को रोहतास के तिलई गांव में पैदा हुए थे। वकालत की डिग्री लेकर सासाराम में बस गए। 1952 में अनुमंडलीय अदालत से प्रैक्टिस शुरू की। आज जिला अदालत में रोजाना हाजिर रहने वाले वकीलों में शुमार हैं। गिनती करिए तो अगले सप्ताह उम्र के 101 साल मुकम्मल हो जाएंगे। आज भी लगातार 10 से 12 घंटे तक न्यायिक कार्य करते हैं। बुढ़ापे को बोझ समझने वाले लोगों के लिए हरि नारायण सिंह एक नजीर हैं। उनकी धर्मपत्नी बबुनी देवी भी सौ साल की उम्र पूरी कर तन-मन से पूरी तरह तंदुरुस्त हैं। वकील साहब का दावा यह कि बिहार ही नहीं, बल्कि देश में उनकी उम्र का कोई वकील नहीं, जो अदालत में प्रैक्टिस कर रहा हो। उन्होंने कहा, चार बजे जगकर नियमित रूप से एक घंटा टहलता हूं। सुबह सात बजे से अपने कार्यालय में बैठ जाता हूं। मैं बिना चश्मा के भी पढ़ सकता हूं। उनके चार पुत्र व चार पुत्री हैं। सभी के दो-दो पुत्र और दो-दो पुत्रियां। उनके पुत्र कृष्ण कुमार सिंह दो बार बिहार विधान परिषद के सदस्य रह चुके हैं।

अपनी जूनियर जया सिंह के साथ सासाराम की अदालत में वकील हरि नारायण सिंह। जागरण

अब हाजीपुर के अजीत कुमार केबीसी में बने करोड़पति

एंटरटेनमेंट ब्यूरो, मुंबई: कौन बनेगा करोड़पति (केबीसी) के 11वें सीजन के चौथे करोड़पति बने हैं बिहार के हाजीपुर के रहने वाले अजीत कुमार। उन्होंने मंगलवार को प्रसारित एपिसोड में एक करोड़ रुपये की इनामी राशि जीती है। सात करोड़ रुपये के सवाल का जवाब न पता होने पर उन्होंने खेल को छोड़ देना ही उचित समझा।

अजीत धनबाद मंडल के गढ़वा रोड जंक्शन पर स्टेशन मास्टर के पद पर सेवारत थे। अभी वह जेल अधीक्षक का प्रशिक्षण ले रहे हैं। वर्ष 2002 में रेलवे में नौकरी पाने के बाद भी अजीत ने पढ़ाई नहीं छोड़ी और लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं की तैयारी में जुटे रहे। कई बार असफल होने के बाद 2016 में बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) की परीक्षा में सफल रहे। अजीत की पत्नी ममता कुमारी गृहणी हैं। दो बच्चों के पिता अजीत ने एक करोड़ रुपये जीतने की खबर सबसे पहले अपनी बेटी सुहानी को दी। सुहानी बड़ी होकर आइएएस अफसर बनना चाहती है। केबीसी के पहले संस्करण से रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया में हिस्सा ले रहे अजीत को इस बार भी विश्वास नहीं था कि उनको शो का हिस्सा बनने का मौका मिलेगा। उन्होंने पहली बार केबीसी की टीम की तरफ से आए फोन को किसी जालसाज का फोन समझा। पैसों की मांग न होने पर उन्हें उस फोन कॉल पर यकीन हुआ।

कौन बनेगा करोड़पति में अमिताभ बच्चन के साथ अजीत कुमार। सौजन्य : परिजन

जीती हुई इनामी राशि के बारे में अजीत बताते हैं, 'मैं सबसे पहले इन पैसों से एक घर और गाड़ी लूंगा। किताबों के अभाव में कई बच्चे पढ़ नहीं पाते। इसलिए व्यक्तिगत खर्च से बचे पैसों से मैं एक पुस्तकालय की स्थापना करूंगा। प्रशिक्षण के दौरान पाया है कि कुछ कैदियों को समाज स्वीकार नहीं करता। ऐसे कैदियों के लिए रोजगार के साधन उपलब्ध कराने की कोशिश करूंगा।'

बीमारी से लड़कर तीन साल बाद मैदान पर लौटा बुजुर्ग दंपती, जीते पांच गोल्ड मेडल

जागरण संवाददाता, हिसार

- गांव कंवारी के 80 वर्षीय सुंदर सिंह ढिल्लो ने तीन और 70 वर्षीय हरप्यारी ने जीते दो गोल्ड मेडल

बीमारी से लड़कर तीन साल बाद मैदान पर लौटे हरियाणा के गांव कंवारी के बुजुर्ग दंपती ने एक-दो नहीं पूरे पांच गोल्ड मेडल जीते हैं। रोहतक के छाजूराम पॉलीटेक्निक कॉलेज में 9 नवंबर को हुई हरियाणा वेटरन एथलेटिक्स चैंपियनशिप में 80 वर्षीय सुंदर सिंह ढिल्लो ने तेज चाल, लांग जंप और 100 मीटर दौड़ में तीन गोल्ड मेडल जीते। वहीं, इनकी पत्नी 70 वर्षीय हरप्यारी देवी ने भी दो गोल्ड मेडल जीते हैं।

आर्मी से रिटायर्ड सुंदर सिंह ढिल्लो ने वर्ष 2000 के बाद खेलना शुरू किया था। 2002 में पहला मेडल जीता। इसके बाद इन्होंने अपनी पत्नी को भी खेलों में जोड़ा। अब दोनों पति-पत्नी एक साथ प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेते हैं और जीतकर लौटते हैं। सुंदर सिंह ढिल्लो ने बताया कि करीब तीन साल पहले महाबीर स्टेडियम में प्रतियोगिता के बाद दोनों पति-पत्नी घर आए और खाना खाया। इसके बाद उनकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया। पड़ोसियों ने किसी तरह अस्पताल पहुंचाया। यहां के डाक्टरों से जवाब मिलने के बाद दिल्ली में बड़े अस्पताल में दाखिल करवाया गया। वहां एक सप्ताह बाद उनकी तबीयत में सुधार हुआ। सुंदर सिंह ने बताया कि लोगों का उनके प्रति प्यार था जो वह दोनों पति-पत्नी वापस आए हैं। उन्होंने बताया कि उन्होंने हिसार आकर कुछ दिन तो आराम किया, मगर इसके बाद फिर से प्रैक्टिस पर लग गए।

ये है बुजुर्ग दंपती की डाइट

सुबह : जल्दी उठकर एक गिलास पानी। दौड़ के बाद स्नान कर आधा किलो दूध और दो गोंद के लड्डू।

दोपहर : तीन रोटी, दाल, सब्जी और दही।

शाम : पेटभर कर ज्यादा दूध वाली खीर।

मेडल दिखाते सुंदर सिंह। जागरण

रोजाना 15 किमी की दौड़ लगाते हैं सुंदर और हरप्यारी : सुंदर ने बताया कि वह और उनकी पत्नी रोजाना सुबह चार बजे उठते हैं। उठते ही दोनों एक-एक गिलास पानी पीते हैं और ट्रैक सूट पहनकर दौड़ लगाने निकल पड़ते हैं। दोनों रोजाना 15 किमी की दौड़ लगाते हैं। इसके बाद आधा घंटा एक्सरसाइज और आधा घंटा योग करते हैं।

कोशिश

जौनसार-बावर में विलुप्त हो रही 'काश्मीरी सांचा' की प्राचीन विद्या को संजोने के प्रयास तेज, समय के साथ बदले हालात से क्षेत्र में गिनती के रह गए इस विद्या के जानकार

जौनसार-बावर के 'कश्मीरी सांचा' को बचाने में जुटा शिक्षक

चंदराम राजगुरु, चकराता (देहरादून)

उत्तराखंड के देहरादून जिले के जनजातीय क्षेत्र जौनसार-बावर में समय के साथ विलुप्त हो रही 'कश्मीरी सांचा' की पौराणिक विद्या को संजोने के प्रयास शुरू हो गए हैं। यह बीड़ा उठाया है चकराता क्षेत्र के मेहपावटा निवासी युवा शिक्षक सुरेश जोशी ने। पौराणिक एवं सांस्कृतिक महत्व वाली कश्मीरी सांचा की विद्या को बचाने की मुहिम में जुटे सुरेश ने इसे नया रूप देने के लिए 17 नवंबर को कालसी में इसके जानकारों का सम्मेलन बुलाया है, ताकि विलुप्त हो रही इस विद्या को फिर से चलन में लाया जा सके।

किसी जमाने में जौनसार-बावर में कश्मीरी सांचा की विद्या का काफी चलन था। यहां जीवन-मरण लेकर तमाम धार्मिक क्रियाकलापों में इस विद्या का उपयोग होता था, लेकिन बदलते समय के साथ यह विद्या भी विलुप्त होने के कगार पर पहुंच गई। हालांकि, अब एक बार फिर इस प्राचीन विद्या को बचाने के प्रयास तेज हो गए हैं। इसके लिए आगे आए हैं क्षेत्र के जाने-माने समाजसेवी पंडित केशव राम जोशी के शिक्षक बेटे सुरेश जोशी। वर्तमान में वह राजकीय प्राथमिक विद्यालय मेहपावटा में कार्यरत हैं।

देहरादून के जनजातीय क्षेत्र जौनसार-बावर का पौराणिक ग्रंथ 'काश्मीरी सांचा'। जागरण

हरिद्वार से ज्योतिषाचार्य की डिग्री लेने वाला यह युवा शिक्षक बीते दो साल से प्राचीन काश्मीरी सांचा की विद्या के अध्ययन में जुटा है। इसके लिए लोक संस्कृति के गूढ़ जानकार इस शिक्षक ने जौनसार-बावर के सभी गांवों का भ्रमण कर लोगों से रायशुमारी की। सुरेश ने बताया कि जौनसार-बावर परगने की कुल 39 खतों में करीब 400 गांव आते हैं। इनमें 53 गांव ब्राह्मण बहुल हैं। जबकि, 35 गांवों में ब्राह्मण परिवारों की संख्या दो से तीन के बीच है।

बताया कि एक समय जौनसार-बावर में कश्मीरी सांचा की विद्या का बड़ा महत्व था। तब क्षेत्र के समस्त धार्मिक क्रियाकलाप, शादी-व्याह व जीवन-मरण की सभी रस्में कश्मीरी सांचा की विद्या पर निर्भर थीं, लेकिन बदलते वक्त में इस विद्या को जानने वालों की संख्या तेजी से घटती चली गई। एक शोध में पता चला कि क्षेत्र में काश्मीरी सांचा की विद्या के जानकारों की संख्या बमुश्किल 40 रह गई है। इसी को देखते हुए उन्होंने 17 नवंबर को कालसी स्थित काली माता मंदिर में काश्मीरी सांचा के जानकारों का सम्मेलन आयोजित किया है। इस दौरान सभी से रायशुमारी के बाद कश्मीरी सांचा को भाषा और लिपि में ढालने का कार्य किया जाएगा, ताकि नई पीढ़ी इस गूढ़ विद्या से परिचित हो सके।

पौराणिक ग्रंथ है कश्मीरी सांचा : कश्मीरी सांचा जौनसार-बावर का पौराणिक ग्रंथ है। शिक्षक सुरेश जोशी बताते हैं कि कश्मीरी सांचा में सामान्य तौर पर आठ लिपियों का उल्लेख हुआ है। इनमें से तीन लिपियां सबसे ज्यादा प्रचलन में रही हैं। जौनसार-बावर और हिमाचल के सिरमौर क्षेत्र में पंडाणी, चंदाणी और पाबुची लिपि का सबसे ज्यादा प्रयोग होता है। इन्हें अब एक भाषा व एक लिपि में ढालने का प्रयास किया जा रहा है।

कश्मीर से आया था 'कश्मीरी सांचा' : जौनसार-बावर की बावर खत के मैंद्रथ स्थित प्रसिद्ध महासू मंदिर के पुरोहित मोहनलाल सेमवाल बताते हैं कि कश्मीरी सांचा को उनके पूर्वज महाभारत काल में कश्मीर से यहां लाए थे।

छत्तीसगढ़ सरकार की फिर भंग हुई गोपनीयता

नईदुनिया, रायपुर

छत्तीसगढ़ में सरकारी सिस्टम ने ही एक बार फिर सरकार की गोपनीयता भंग कर दी है। राज्य पुलिस के खुफिया विभाग के चीफ एडीजी इंटेलीजेंस का एक पत्र सोशल मीडिया में वायरल हो गया है। पुलिस कप्तानों को भेजे इस पत्र में एडीजी ने खनन क्षेत्रों में तैनात सुरक्षा बलों के संबंध में रिपोर्ट मांगी है। पत्र के ऊपर में 'गोपनीय' भी लिखा हुआ है। इसके सार्वजनिक हो जाने से हड़कंप मचा हुआ है। मामले की जांच शुरू हो गई है। इससे पहले निलंबित आइपीएस मुकेश गुप्ता से संबंधित एक गोपनीय पत्र लीक हो चुका है।

गृह विभाग के पत्र के आधार पर मांगी जानकारी : गृह विभाग के पांच नवंबर के पत्र का हवाला देते हुए एडीजी ने पुलिस अधीक्षकों से उनके क्षेत्र में स्थित खनन (खनिज) परियोजनाओं में सुरक्षा के लिए पैरा मिलिट्री, सशस्त्र बल समेत अन्य बल की तैनाती की जानकारी मांगी है। तैनात फोर्स का भुगतान के संबंधित में भी जानकारी मांगी गई है।

सप्ताहभर पहले ही बदले गए हैं खुफिया चीफ : आइपीएस मुकेश गुप्ता से संबंधित गोपनीय पत्र लीक होने के कारण सरकार को सुप्रीम कोर्ट की फटकार सुननी पड़ी, क्योंकि गुप्ता उस पत्र को लेकर सुप्रीम कोर्ट पहुंच गए थे। इसके बाद करीब सप्ताहभर पहले संजय पिल्ले को हटाकर हिमांशु गुप्ता को खुफिया विभाग का चीफ बनाया है।

पत्र को लेकर अटकलें

पत्र को केंद्र और राज्य सरकार के बीच टकराव से जोड़कर देखा जा रहा है। यहां यह बताना लाजिमी होगा कि धान खरीद के मुद्दे पर केंद्र सरकार के खिलाफ मोर्चा खोलने की तैयारी कर रही राज्य सरकार के दो मंत्री खनिज की सप्लाई रोकने की धमकी दे चुके हैं। वहीं, पीसीसी चीफ केंद्र की आर्थिक नाकेबंदी की बात कह चुके हैं।

डॉ. सूरजभान बने आइएससीओ के अध्यक्ष

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : स्वायल कंजर्वेशन सोसाइटी ऑफ इंडिया के चेयरमैन डॉक्टर सूरजभान को इंटरनेशनल स्वायल कंजर्वेशन ऑर्गनाइजेशन (आइएससीओ) का प्रेसिडेंट मनोनीत किया गया है। उन्हें इस पद पर 2019 से 2022 तक के लिए नियुक्त किया गया है। डॉक्टर सूरजभान के नाम की घोषणा आइएससीओ के निवर्तमान प्रेसिडेंट प्रोफेसर एल्डफोस प्लों सेंटीस ने पांच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के आखिरी दिन की। डॉ. भान की नियुक्ति के बाद आइएससीओ का मुख्यालय भी भारत में शिफ्ट कर दिया गया है।

विकसित देश मुक्त व्यापार की वकालत करते हैं और विकासशील देशों से शुल्क हटाने को कहते हैं। लेकिन वास्तव में वे खुद गैर-शुल्क अवरोध बढ़ाते जा रहे हैं।
– पीयूष गोयल, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री

वित्त मंत्री ने कहा, एपीएमसी को खत्म करें राज्य सरकारें

पहल ▸ बदले दौर में किसानों के लिए ज्यादा कारगर है ई-नाम

ई-नाम से किसानों को अनाज का पर्याप्त मूल्य दिलाने में सहूलियत

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

नाबार्ड के कार्यक्रम में संबोधित करतीं वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण। प्रेट्र

▸ किसानों का हित सधेगा, तभी राज्यों को भी होगा फायदा

▸ अभी आठ राज्यों में 21 मंडियां ई-नाम के तहत कर रही हैं काम

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने सभी राज्यों से आग्रह किया है कि वे जितनी जल्दी हो कृषि उत्पाद बाजार समिति (एपीएमसी) को समाप्त करें और इसकी जगह पर इलेक्ट्रॉनिक राष्ट्रीय कृषि बाजार (ई-नाम) को बढ़ावा दें। यहां नाबार्ड की तरफ से आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वित्त मंत्री ने कहा कि किसानों को अनाज का पर्याप्त मूल्य दिलाने के लिए जरूरी है कि हर राज्य जितनी जल्दी हो सके ई-नाम को लागू करे। यह पूरे देश में काम करने वाला एक ट्रेडिंग पोर्टल है, जिससे कृषि उत्पादों का एक राष्ट्रीय बाजार बनाने की राह निकल सकती है।

वित्त मंत्री ने कहा, 'एपीएमसी एक समय देश के लिए जरूरी था लेकिन अब इसकी अहमियत खत्म हो गई है। एपीएमसी अब किसानों को उनके उत्पादों का पर्याप्त मूल्य दिलाने में सफल नहीं हो पाता। बदलते वक्त के साथ ई-नाम अब ज्यादा आवश्यक हो गया है। केंद्र सरकार राज्यों को मदद कर रही है कि वे एपीएमसी को समाप्त करके उसकी जगह ई-नाम को लागू करें। मुझे उम्मीद है कि इसमें सफलता मिलेगी क्योंकि किसानों का हित सधेगा तो राज्यों को भी फायदा होगा।' अभी देश के आठ राज्यों में ई-नाम योजना के तहत 21 मंडियों ने काम करना शुरू किया है। इन मंडियों के बीच 14 कृषि उत्पादों के अभी तक 136 अंतर-राज्यीय सौदे हो चुके हैं। सरकार इस योजना के तहत समूचे देश की मंडियों को एक ही इलेक्ट्रॉनिक मंच पर लाना चाहती है।

खाद्य तेलों का आयात बड़ी चिंता : वित्त मंत्री ने खाद्य तेलों के बढ़ते आयात पर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि सरकार तिलहन उत्पादों को कई तरीके से बढ़ाने की कोशिश कर रही है। सिर्फ न्यूनतम समर्थन मूल्य बढ़ाने का ही रास्ता नहीं अपनाया गया है बल्कि किसानों को दूसरे तरीकों से भी प्रोत्साहित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि किसान अन्नदाता के साथ ही ऊर्जा दाता भी बनें। अपने खेतों में सोलर ऊर्जा और पवन ऊर्जा से बिजली बनाने के नए साधनों का भी उपयोग करें।

आरकॉम के स्पेक्ट्रम खरीदने के लिए एयरटेल की बोली जमा

▸ रिलायंस जियो कर रहा है अंतिम तिथि बढ़ाने की मांग

नई दिल्ली, प्रेट्र : कर्ज संकट से जूझ रही रिलायंस इंफोकॉम की असेट बिक्री में भाग लेने के लिए भारती एयरटेल, भारती इन्फ्राटेल और निजी इक्विटी फर्म वार्दे पार्टनर्स ने अपनी बोलियां जमा कर दी हैं। हालांकि रिलायंस जियो ने इसकी अंतिम तिथि 10 दिन और बढ़ाने की मांग की है।

भारती इंटरप्राइज ने बताया है कि एयरटेल ने आरकॉम के स्पेक्ट्रम खरीदने और इन्फ्राटेल ने इसके मोबाइल टावर खरीदने के लिए बोली लगाई है। सूत्रों के मुताबिक आरकॉम के असेट खरीदने के लिए कुल छह बोलियां जमा की गई हैं। कंपनी के कर्जदाता 13 नवंबर को होने वाली बैठक में इन बोलियों को खोले जाने की तिथि पर विचार करेंगे।

अनिल अंबानी ग्रुप की कंपनी आरकॉम अपने कर्ज को चुकाने के लिए असेट की बिक्री कर रही है। इसमें रियल एस्टेट के अलावा टेलीकॉम असेट भी शामिल हैं। जिनमें 122 मेगाहर्ट्ज के स्पेक्ट्रम की कीमत करीब 14 हजार करोड़ रुपये आंकी गई थी। इसके अलावा कंपनी का टावर बिजनेस करीब सात हजार करोड़, ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क तीन हजार करोड़ और डाटा सेंटर्स की कीमत करीब चार हजार करोड़ रुपये बताई जा रही है। आरकॉम के कर्जदाताओं ने इस पर करीब 49 हजार करोड़ रुपये का दावा ठोका है।

टीसीएस और इन्फोसिस के आइटी एसईजेड फैसला जल्द

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

प्रतीकात्मक फोटो

▸ शुक्रवार को अंतरमंत्रालयी समूह करेगा दोनों कंपनियों के प्रस्तावों पर विचार

▸ मंजूरी मिलने के बाद खुलेगा 1,600 करोड़ रुपये के निवेश का रास्ता

देश में आइटी सेवाओं का विस्तार करने के उद्देश्य से इस क्षेत्र की दो दिग्गज कंपनियों ने एसईजेड स्थापित करने में रुचि दिखाई है। टीसीएस और इन्फोसिस के आइटी एसईजेड के आवेदन पर सरकार शुक्रवार को विचार करेगी। दोनों कंपनियों के प्रस्तावों को अगर मंजूरी मिलती है तो करीब 1600 करोड़ रुपये का निवेश होगा।

दोनों आइटी दिग्गजों के प्रस्तावों पर वाणिज्य सचिव की अध्यक्षता में बना एक अंतरमंत्रालयी समूह 15 नवंबर को विचार करेगा। बोर्ड ऑफ अप्रूवल (बीओए) इस मामले में फैसला लेने वाली शीर्ष संस्था है। इन्फोसिस ने दो एसईजेड स्थापित करने का प्रस्ताव किया है, तो टीसीएस एक आइटी एसईजेड स्थापित करना चाहती है।

सूत्रों के मुताबिक इन्फोसिस की योजना एक एसईजेड तमिलनाडु के कांचीपुरम में और एक महाराष्ट्र के पुणे में लगाने की है। कांचीपुरम परियोजना पर 336 करोड़ रुपये के निवेश का प्रस्ताव है। पुणे की परियोजना पर 361.53 करोड़ रुपये का निवेश होगा। कांचीपुरम का एसईजेड 5.37 हेक्टेयर में और पुणे का एसईजेड 10 हेक्टेयर क्षेत्र में स्थापित किया जाना है। सूत्रों ने बताया कि टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज ने तमिलनाडु में लगाए जाने वाले एसईजेड पर 900 करोड़ रुपये के निवेश का प्रस्ताव किया है। कंपनी का कहना है कि इस एसईजेड की स्थापना से करीब 12000 लोगों को रोजगार प्राप्त होगा। कंपनी एक डेवलपमेंट सेंटर से शुरू करेगी। बाद में 31 मार्च 2020 से पहले कंपनी बिजनेस ऑपरेशन शुरू कर देगी।

इसके अतिरिक्त त्रिपुरा इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट सेंटर ने भी कृषि आधारित खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र से संबंधित एसईजेड लगाने का प्रस्ताव किया है। 16.35 हेक्टेयर क्षेत्र में लगाए जाने वाले इस एसईजेड पर 1550 करोड़ रुपये के निवेश का प्रस्ताव है। एसईजेड सेक्टर सरकार से विभिन्न क्षेत्रों में रियायत की मांग कर रहा है। इनमें मिनिमम अल्टरनेटिव टैक्स भी शामिल है। सेक्टर का मानना है कि इससे एसईजेड से होने वाले निर्यात की मात्रा में वृद्धि होगी। साल 2018-19 में एसईजेड से सात लाख करोड़ रुपये का निर्यात किया गया है।

डिजिटल पेमेंट कंपनियों को सुरक्षा नियमों की सुध नहीं

नई दिल्ली, आइएएनएस : पिछले कुछ वर्षों के दौरान पूरी दुनिया में तेजी से डिजिटल पेमेंट का चलन बढ़ा है। लेकिन इस तरह की पेमेंट सेवाएं देने वाली कंपनियां ग्राहकों की व्यक्तिगत जानकारियों की सुरक्षा के मामले में कमजोर साबित हुई हैं। अमेरिकी टेलीकॉम कैरियर वेरिजोन के मुताबिक इस तरह की सेवाएं देने वाली तीन में से सिर्फ एक कंपनी ने ही ग्राहकों का डाटा सुरक्षित रखने के लिए पुख्ता बंदोबस्त किए हैं।

वेरिजोन ने इस वर्ष के लिए जारी पेमेंट सेक्योरिटी रिपोर्ट में कहा है कि तय मापदंड को मानने वाली कंपनियों की संख्या लगातार दूसरे वर्ष कम हुई है। रिपोर्ट के मुताबिक पेमेंट कार्ड इंडस्ट्री डाटा सेक्योरिटी स्टैंडर्ड (पीसीआइ डीएसएस) का पूरी तरह से अनुपालन करने वाली कंपनियों की संख्या इस वर्ष घटकर 36.7 परसेंट रह गई।

इससे पहले 2018 में यह संख्या 52.5 परसेंट रही थी। पीसीआइ डीएसएस कार्ड के माध्यम से पेमेंट सेवाएं देने वाली कंपनियों को सुरक्षा संबंधी सेवाएं देता है। यह पेमेंट सिस्टम को सुरक्षा प्रदान करता है, जिससे ग्राहकों की व्यक्तिगत सूचना गलत हाथों में नहीं जाने पाए। वेरिजोन सेक्योरिटी कंसल्टिंग के ग्लोबल मैनेजिंग डायरेक्टर रोडॉल्फ साइमोनेट्टी ने बताया कि 2010 से 2016 के बीच सुरक्षा के पैमाने पर बहुत अच्छी प्रगति हुई, लेकिन इसके बाद से इसमें लगातार गिरावट दर्ज की जा रही है, जो चिंता का विषय है।

ब्याज दरों में कटौती से भी समाधान नहीं

▸ प्रथम पृष्ठ से आगे

मंदी के इस माहौल में ब्याज दरों में एक और कटौती की घोषणा आरबीआइ की तरफ से की जा सकती है लेकिन इससे मांग पर अब भी खास असर पड़ने के आसार नहीं है। उलटा इससे वित्तीय अस्थिरता फैल सकती है। रिपोर्ट के मुताबिक कर्ज देकर घरेलू खर्चे में बढ़ोतरी का फॉर्मूला दुनिया के किसी भी देश में बहुत सफल नहीं रहा है। भारत का अनुभव भी इससे अलग नहीं हो सकता।

नकारात्मक नीतियों से बचने की जरूरत : ऐसे में भारत के लिए यह जरूरी है कि दूरसंचार, एनबीएफसी और बिजली जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों को नकारात्मक नीतियों से और झटके नहीं दिए जाएं। गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) के लिए सरकार ने ठोस नीति बनाने की घोषणा की थी लेकिन अभी तक ऐसा नहीं हो पाया है। एसबीआइ की इस रिपोर्ट के मुताबिक इसमें देरी नहीं होनी चाहिए। दिन गुजरने के साथ ही एनबीएफसी के लिए जोखिम बढ़ता जा रहा है। इन उद्योगों को अलग-अलग स्तर पर प्रोत्साहन की जरूरत है। मसलन, दूरसंचार कंपनियों को नए नेटवर्क लगाने में भारी निवेश की दरकार है। बिजली वितरण कंपनियों की स्थिति पर भी ध्यान देने की जरूरत है। देश में बिजली की मांग कम होने की वजह से इन कंपनियों ने बिजली खरीदना कम कर दिया है। देश के ताप बिजली संयंत्र सिर्फ 48.9 फीसद क्षमता पर काम कर रहे हैं। रिन्यूएबल एनर्जी क्षेत्र में बिजली उत्पादन 6.4 फीसद घट गया है, जबकि इनकी स्थापित क्षमता में 15 फीसद का इजाफा हुआ है।

धीरे-धीरे दिखेगा सुधारों का असर

अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए केंद्र सरकार की तरफ से पिछले दो महीनों के दौरान उठाए गए कदमों के बारे में एसबीआइ की रिपोर्ट कहती है कि इसका असर दिखाई देने में अभी समय लगेगा। इस बार वैश्विक मंदी की स्थिति भी ज्यादा गंभीर है जो भारतीय अर्थव्यवस्था को बहुत प्रभावित कर रही है। आगामी दो तिमाहियों के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था में सुधार की उम्मीद है।

उत्पाद की कीमत प्रभावित नहीं कर सकेंगी ई-कॉमर्स कंपनियां

▸ कंपनियों को ज्यादा पारदर्शी और जवाबदेह बनाने की तैयारी

▸ सरकार ने जारी किया ड्राफ्ट, दो दिसंबर तक मांगे विचार

नई दिल्ली, प्रेट्र : ई-कॉमर्स कंपनियां अपने प्लेटफॉर्म पर बिकने वाले किसी उत्पाद की कीमत प्रभावित नहीं कर सकेंगी। उन्हें बेहतर कारोबारी गतिविधियों का पालन करना होगा। उपभोक्ता मामले मंत्रालय की ओर से इस संबंध में जारी ड्राफ्ट में यह बात कही गई है। मंत्रालय ने कंज्यूमर प्रोटेक्शन (ई-कॉमर्स) रूल्स, 2019 का ड्रॉफ्ट जारी किया है। इस पर दो दिसंबर तक विचार मांगे गए हैं। ई-कॉमर्स कंपनियों पर आरोप लगते हैं कि इन प्लेटफॉर्म पर उत्पादों की कीमतें प्रभावित करने की कोशिश होती है।

हाल में संसद की ओर से पारित कंज्यूमर प्रोटेक्शन एक्ट, 2019 के लिए मंत्रालय नियम तैयार कर रहा है। इसी दिशा में ड्रॉफ्ट जारी किया गया है। व्यापारियों के संगठन कैट ने ड्राफ्ट का स्वागत किया है। कैट का कहना है कि प्रस्तावित फ्रेमवर्क की मदद से ई-कॉमर्स कंपनियां ज्यादा पारदर्शी बनेंगी और ग्राहकों के प्रति ज्यादा जवाबदेही सुनिश्चित होगी। ड्राफ्ट में कहा गया है कि ई-कॉमर्स कंपनियां प्रत्यक्ष या परोक्ष किसी भी रूप में अपने प्लेटफॉर्म पर बिकने वाली वस्तुओं की कीमत को प्रभावित नहीं कर सकेंगी। उन्हें ऐसी गतिविधि की इजाजत नहीं होगी, जिससे किसी वस्तु की बिक्री को बढ़ावा मिले या फैसला लेने से पहले ग्राहक का विचार प्रभावित हो। ई-कॉमर्स कंपनियां खुद को झूठे तरीके से ग्राहक की तरह पेश करते हुए किसी वस्तु या सेवा के लिए रिव्यू नहीं कर सकेंगी और ना ही उन्हें किसी वस्तु या सेवा को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाने की अनुमति होगी। ई-कॉमर्स कंपनियों को अपने सेलर्स के नाम, उनके कारोबार, पते आदि की स्पष्ट जानकारी मुहैया करानी होगी और यह स्पष्ट करना होगा कि ग्राहक उनसे कैसे संपर्क कर सकते हैं। ग्राहकों की निजी जानकारियों की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी ई-कॉमर्स कंपनियों की रहेगी।

ड्राफ्ट में रिफंड, रिटर्न, एक्सचेंज, वारंटी/गारंटी, डिलिवरी, शिपमेंट आदि की भी स्पष्ट जानकारी देनी होगी।

खेती को मजबूत करने के लिए खेत बड़ा करना होगा

कृषि राज्य मंत्री ने कहा, 87 फीसद छोटी जोत होना ही कृषि क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या

बीज बिल पर चर्चा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

बड़ी जोत होने से नई टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल हो पाता है संभव। प्रतीकात्मक फोटो

▸ जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने को चाहिए उचित बीज

जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए कृषि क्षेत्र को जहां आधुनिक टेक्नोलॉजी की जरूरत है, वहीं उन्नत बीजों की भी दरकार है। नकली बीजों और मिलावटी कीटनाशकों के चलते किसानों की हालत पस्त है। कानूनी खामियों का फायदा उठाने वाली कथित बीज कंपनियों और कीटनाशक बनाने वालों पर शिकंजा कसने के लिए सरकार ने नया अधिनियम का मसौदा तैयार किया है। मसौदे पर चर्चा के लिए भारत कृषक समाज की ओर से आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में कृषि राज्य मंत्री पुरुषोत्तम रूपाला ने कृषि क्षेत्र की चुनौतियों को गिनाया।

उन्होंने कहा, 'खेती को मजबूत बनाने के लिए खेतों को बड़ा करना होगा। देश के 87 फीसद से अधिक किसान छोटी जोत के हैं, जिनके खेतों में न तो आधुनिक टेक्नोलॉजी का उपयोग किया जा सकता है और न ही वह किसान अपनी उपज के लिए बाजार में मोलभाव कर सकता है। इन्हीं चुनौतियों को ध्यान में रखकर सरकार ने किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) बनाने की अनुमति दी है, जिसे कई तरह की सहूलियतें दी गई हैं। इसके तहत एक एकड़ रकबा वाले पांच सौ किसान एकजुट होकर अलग संगठन बना सकते हैं। पांच सौ एकड़ वाले रकबा में आधुनिक टेक्नोलॉजी वाली खेती की जा सकती है।'

रूपाला ने कहा कि कृषि निर्यात में नया मुकाम हासिल करने की क्षमता घरेलू कृषि क्षेत्र में है। पूरी दुनिया में जैविक कृषि उपज की मांग है, जिसके उत्पादन की क्षमता हमारे किसानों के पास है। खाने की मेज तक बेहतर, जैविक व ताजा उत्पादों को पहुंचाने वाले मार्केटिंग नेटवर्क की जरूरत है। ई-मार्केटिंग करने वाली कंपनियों की तर्ज पर हम इसे क्यों नहीं कर सकते? इसके पूर्व महाराष्ट्र के किसान नेता पाशा पटेल ने जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का जिक्र करते हुए कहा कि इससे निपटने वाले बीजों की जरूरत है। नीतियों के हेरफेर से किसानों की दशा कैसे बन और बिगड़ सकती है, इसका जीवंत उदाहरण भी उन्होंने पेश किया। किसान नेता व सांसद विजयपाल तोमर ने गन्ना किसानों की समस्याओं का निदान करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का धन्यवाद दिया। देश में परंपरागत तरीके से बीजों की विरासत को संरक्षित करने के लिए घरेलू किसानों का शुक्रिया अदा करते हुए सेमिनार के आयोजक डॉक्टर कृष्णवीर चौधरी ने कृषि शोध संस्थानों की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए। बीज व कीटनाशक विधेयक के मसौदे पर डॉक्टर चौधरी ने कहा कि कानून कोई भी बने, लेकिन उनमें किसानों के अधिकारों का ध्यान रखा जाए।

चौथाई जर्मन कंपनियां चीन से अपना बोरिया-बिस्तर समेटने की तैयारी में

बीजिंग, एएफपी : बढ़ते परिचालन खर्च और विपरीत व्यापारिक स्थितियों के चलते करीब एक चौथाई जर्मन कंपनियां चीन छोड़ने की तैयारी कर रही हैं। जर्मन चेंबर ऑफ कॉमर्स के वार्षिक सर्वे में कहा गया है कि चीन में उत्पादन कर रही जर्मन मूल की करीब 23 परसेंट कंपनियों ने या तो उत्पादन बंद करने का निर्णय ले लिया है या इस पर गंभीरता से विचार कर रही हैं।

इस संबंध में चीन में कार्यरत जर्मनी की 526 कंपनियों पर किए गए सर्वे के मुताबिक 23 परसेंट कंपनियों ने चीन से कारोबार समेटने का फैसला कर लिया है या इस पर विचार कर रही हैं। सर्वे के मुताबिक, जो कंपनियां चीन छोड़ने पर विचार कर रही हैं, उनके से करीब तिहाई कंपनियां पूरी तरह कारोबार हटाने की तैयारी में हैं। बाकी बची कंपनियां अपना कुछ कारोबार दूसरे देशों में ट्रांसफर करने वाली हैं। कम लागत के चलते भारत और दक्षिण एशियाई देश इन कंपनियों की पहली पसंद हो सकते हैं।

प्रतीकात्मक फोटो

▸ चीन में लगातार बढ़ रहा है कंपनी के परिचालन का खर्च

▸ भारत और दक्षिण एशियाई देशों में जाने पर कर रहीं विचार

गौरतलब है कि चीन अपनी इकोनॉमी को संतुलित करने का प्रयास कर रहा है। वह एक्सपोर्ट और निवेश से उपभोक्ता खर्च आधारित इकोनॉमी की ओर बढ़ रहा है। इसकी वजह से चीन में मानव संसाधन काफी मंहगा होता जा रहा है। यही कारण है कि कंपनियों की परिचालन लागत में इजाफा हो रहा है। इसके अलावा अमेरिका और चीन में जारी ट्रेड-वार के कारण चीन से एक्सपोर्ट मंहगा पड़ रहा है। इससे लागत की तुलना में मुनाफे में कमी हो रही है। इस सर्वे में कहा गया है कि पिछले कुछ समय के दौरान चीन में व्यापार प्रत्याशा में गिरावट आई है। सर्वे के दौरान सिर्फ चौथाई कंपनियों ने इस वर्ष अपने लक्ष्य प्राप्त करने की उम्मीद जताई। जबकि एक तिहाई कंपनियों ने कहा कि चीन द्वारा विदेशी कंपनियों के हित के लिए उठाए गए कदम पर्याप्त नहीं हैं।

अन्य देशों की कंपनियां भी समेट रही हैं कारोबार : गौरतलब है कि जर्मनी से पहले कुछ और पश्चिमी देशों की कंपनियां चीन से अपना व्यापार समेटने की बात कह चुकी हैं। यह कंपनियां वियतनाम, थाइलैंड, इंडोनेशिया और भारत की ओर देख रहीं हैं। चीन के मुकाबले भारत और अन्य दक्षिण एशियाई देशों में सस्ता मानव संसाधन उपलब्ध है।

इन्फोसिस में एक और व्हिसलब्लोअर

▸ सीईओ सलिल पारेख पर लगाया कंपनी के नियमों के उल्लंघन का आरोप

▸ शिकायतकर्ता ने की पारेख को पद से हटाने की मांग

▸ कुछ समय पहले भी लगे थे कंपनी के शीर्ष प्रबंधन पर आरोप

सलिल पारेख। फाइल फोटो

बेंगलुरु, प्रेट्र : दिग्गज आइटी कंपनी इन्फोसिस पर फिर व्हिसलब्लोअर बम फूटा है। अब एक शिकायतकर्ता ने सीईओ सलिल पारेख पर नियमों के विरुद्ध काम करने का आरोप लगाया है। अपनी शिकायत में व्हिसलब्लोअर ने कहा है कि पारेख को कंपनी से जुड़े एक साल आठ महीने हो चुके हैं, लेकिन वह मुंबई से ही काम कर रहे हैं, जबकि उनकी नियुक्ति बेंगलुरु में रहकर काम करने के लिए हुई थी। वह सीधे तौर पर नियमों का उल्लंघन है। पिछले महीने दो व्हिसलब्लोअर ने कंपनी के शीर्ष प्रबंधन पर गलत तरीके से कारोबार का आरोप लगाया था। इसमें भी सीईओ सलिल पारेख का नाम शामिल था।

खुद को वित्तीय विभाग का कर्मचारी बताने वाले शिकायतकर्ता ने कंपनी बोर्ड से कहा है कि पारेख को उनके पद से हटाया जाए। शिकायतकर्ता ने कहा है कि वह पहचान जाहिर किए बिना शिकायत कर रहा है, क्योंकि उसे अपने खिलाफ बदले की कार्रवाई किए जाने का डर है। व्हिसलब्लोअर ने बोर्ड से कहा है कि कंपनी का कर्मचारी और शेयरधारक होने के नाते वह कंपनी में चल रही गलत गतिविधियों की सूचना बोर्ड को दे रहा है। इसके साथ ही शिकायतकर्ता ने बोर्ड से सवाल किया है कि पारेख को बेंगलुरु में रहने के लिए क्यों नहीं कहा जा रहा है। वह महीने में कम से कम दो बार बेंगलुरु आते हैं, जिस पर करीब 22 लाख रुपये खर्च होते हैं। इसका पूरा खर्च कंपनी को उठाना पड़ता है। इसके साथ ही इस पत्र में आरोप लगाया गया है कि पारेख ने बोर्ड और कंपनी के संस्थापकों को धोखे में रखने के लिए बेंगलुरु में किराए पर फ्लैट लिया है। पारेख ने मुंबई में कुछ छोटी कंपनियों में निवेश कर रखा है, जिसकी देखरेख के लिए वह मुंबई में ही रहते हैं। व्हिसलब्लोअर ने सलिल पारेख को कंपनी का अब तक का सबसे बुरा सीईओ बताया है।

पिछले महीने कंपनी के सीईओ सलिल पारेख और सीएफओ निलांजन राय पर गलत व्यापारिक तरीके अपनाने का आरोप लगा था। कंपनी ने कहा था कि प्राथमिक जांच में शीर्ष प्रबंधन पर लगे इन आरोपों की सत्यता साबित नहीं हुई है। इस मामले की जांच अभी जारी है।

क्या है शिकायत?

- बेंगलुरु में नियुक्ति के बावजूद मुंबई में ही रहते हैं सलिल
- हर महीने बेंगलुरु आने-जाने पर कंपनी का 22 लाख होता है खर्च
- बोर्ड को धोखे में रखने के लिए बेंगलुरु में लिया है किराए पर फ्लैट
- कुछ कंपनियों में निवेश की देखरेख के लिए रहते हैं मुंबई में

हालात

उत्पादन की तुलना में पर्याप्त मांग नहीं निकलने के कारण छत्तीसगढ़ समेत ज्यादातर राज्यों ने बिजली उत्पादन में कमी की है

देश में स्थापित उत्पादन क्षमता की तुलना में बिजली की मांग आधी

संजीत कुमार, रायपुर

देश में बिजली की स्थापित क्षमता की तुलना में मांग लगभग आधी है। केंद्रीय विद्युत नियामक आयोग की रिपोर्ट के अनुसार 31 अक्टूबर, 2019 तक देश में बिजली की कुल स्थापित क्षमता 3,64,169 मेगावॉट है। वहीं, इस वर्ष गर्मी के सीजन में 30 मई को बिजली की अधिकतम मांग 1,82,610 मेगावॉट रही। यही वजह है कि छत्तीसगढ़ समेत देश के ज्यादातर राज्यों और निजी बिजली उत्पादकों को उत्पादन में कटौती करनी पड़ी है। बिजली इंजीनियरों के अनुसार आर्थिक मंदी की वजह से देश में बिजली की औद्योगिक मांग नहीं बढ़ रही है। वहीं, घरेलू और सार्वजनिक समेत अन्य सेक्टरों में नए उपकरण और तकनीक के प्रयोग से खपत में भी कमी आई है।

इस वजह से बढ़े बिजली संयंत्र : देश में 2003 में नया विद्युत अधिनियम लागू हुआ। इसके तहत बिजली सेक्टर को निजी क्षेत्र के लिए खोला गया। इसी अधिनियम के तहत सरकारी बिजली बोर्डों को भंग कर बिजली कंपनियां बनाई गईं। बिजली सेक्टर के जानकारों के अनुसार उस वक्त देश में बिजली की मांग की तुलना में आपूर्ति बेहद कम थी। ऐसे में उद्योगपतियों को इसमें बड़ा मुनाफा दिखा और ताबड़तोड़ संयंत्र स्थापित होने लगे।

नए एनर्जी एफिशिएंट उपकरणों के कारण बिजली की खपत कम हुई है। प्रतीकात्मक फोटो

नए उपकरणों से घटी खपत : बिजली इंजीनियर कहते हैं कि बिजली की मांग में कहीं कमी नहीं आई है। सामान्य घरों में ही पहले की अपेक्षा आज बिजली के उपकरणों की संख्या और उनके इस्तेमाल का समय बढ़ा है। लेकिन बिजली के जो नए उपकरण आ रहे हैं उनमें खपत कम हो रही है। फ्रिज और एसी जैसे उपकरण जो पहले हर घंटे एक यूनिट बिजली खपत करते थे उनकी जगह अब ऐसे उपकरण आ गए हैं, जिनमें दो दिन में एक यूनिट की खपत हो रही है। सोडियम और दूसरे लाइटों की तुलना में स्ट्रीट लाइट में एलईडी बल्ब के प्रयोग से करीब 16 हजार मेगावॉट बिजली की खपत कम हुई है।

हर संयंत्र की उत्पादन लागत अलग

छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत नियामक आयोग के पूर्व सचिव पीएन सिंह बताते हैं कि बिजली की उत्पादन दर संयंत्रों के हिसाब से तय होती है। इसके लिए स्थापना व्यय के साथ ईंधन आदि के हिसाब से प्रति यूनिट लागत की गणना की जाती है। छत्तीसगढ़ के दूसरे सरकारी उत्पादन संयंत्रों की तुलना में मड़वा संयंत्र की बिजली महंगी है, क्योंकि उसकी उत्पादन लागत अधिक है।

देश में बिजली की जितनी स्थापित क्षमता है, मांग उससे लगभग आधी ही है। एलईडी समेत अन्य एनर्जी एफिशिएंसी उपकरणों के प्रयोग से बिजली की खपत में कमी आई है।
– शैलेंद्र कुमार शुक्ला, अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ बिजली कंपनी

ऐसे बदलती है बिजली की दर

कुछ ही राज्य हैं जो अपनी जरूरत की बिजली का उत्पादन खुद करते हैं। राज्यों को केंद्रीय कोटे से भी बिजली मिलती है। बाकी राज्य और बड़े उद्योग, इनमें रेलवे भी शामिल हैं, अपनी मांग के हिसाब से निजी और सरकारी बिजली उत्पादकों से समझौता करते हैं। इसके हिसाब से उत्पादक उतनी बिजली ग्रिड (बिजली लाइनों) में सप्लाई करता है और संबंधित पक्ष उतनी बिजली ग्रिड से ले लेता है। जिस दर पर समझौता होता है, उसके हिसाब से भुगतान कर दिया जाता है। इस दौरान कोई संयंत्र बंद हो जाए या मांग अचानक बढ़ जाए तो ग्रिड से अतिरिक्त बिजली ली जाती है। इस दौरान ग्रिड में बिजली की उपलब्धता के हिसाब से उस वक्त की दर तय होती है।

देश में प्रति व्यक्ति बिजली की खपत (किलो वॉट में)

वर्ष	खपत
2019	1181
2018	1149

आइएलएंडएफएस को एजुकेशन बिजनेस बेचने की अनुमति

नई दिल्ली, प्रेट्र : कर्ज के बोझ तले दबा आइएलएंडएफएस ग्रुप अपना एजुकेशन बिजनेस बेचने की तैयारी में है। ग्रुप ने कहा है कि इसके लिए उसे कर्जदाताओं की अनुमति मिल गई है। आइएलएंडएफएस का एजुकेशन बिजनेस स्कूलनेट इंडिया लिमिटेड के नाम से चल रहा था। अब ग्रुप इसे कैरियर प्वाइंट पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड (सीपीपीपीएल) को बेचेगा।

आइएलएंडएफएस की ओर से जारी सूचना के मुताबिक पांच नवंबर को हुई वोटिंग में सीपीपीपीएल की बोली को 78 परसेंट कर्जदारों की अनुमति मिल गई थी। इसके बाद कंपनी के बोर्ड ने सात नवंबर को इस बिक्री की अनुमति दे दी थी। आइएलएंडएफएस ग्रुप अपने कर्ज से छुटकारा पाने के लिए संपत्तियों को बेचने की प्रक्रिया से गुजर रहा है। ग्रुप के इस एजुकेशन बिजनेस पर करीब 600-650 करोड़ रुपये की देनदारी है, जबकि ग्रुप का कुल कर्ज करीब 94 हजार करोड़ रुपये है।

10 लाख से ज्यादा अल्पसंख्यक उइगर मुस्लिमों के साथ दुर्व्यवहार के आरोपों के बाद विश्व बैंक ने चीन में व्यावसायिक स्कूलों की आर्थिक मदद मुहैया कराने वाले प्रोजेक्ट को समाप्त कर दिया है।

महाभियोग की खुली सुनवाई आज से

तैयारी ▸ ट्रंप के खिलाफ संसद के निचले सदन में सुनवाई का टीवी पर होगा सीधा प्रसारण

राष्ट्रपति पर निजी राजनीतिक लाभ के लिए पद के दुरुपयोग का है आरोप

डोनाल्ड ट्रंप। फाइल

वाशिंगटन, रायटर : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ महाभियोग जांच अब अगले चरण में पहुंच गई है। अमेरिकी संसद के निचले सदन प्रतिनिधि सभा (हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स) में बुधवार और शुक्रवार को महाभियोग की जांच में खुले में सुनवाई होगी, जिसे टेलीविजन पर पूरा देश देखेगा।

संसद के निचले सदन में 24 सितंबर से ट्रंप के खिलाफ बंद कमरे में सुनवाई हो रही थी। डेमोक्रेटिक पार्टी के सदस्यों का कहना था कि ट्रंप के खिलाफ घातक सुबूत मिले हैं। वहीं रिपब्लिकन पार्टी पक्षपात का आरोप लगा रही थी। अब बंद कमरे से निकलकर सुनवाई सार्वजनिक मंच पर पहुंच गई है। जांच में शामिल हाउस ऑफ इंटेलिजेंस कमेटी के चेयरमैन एडम शिफ ने कहा है कि खुले में सुनवाई से अमेरिका के लोगों को गवाहों और उनके बयानों का मूल्यांकन करने का मौका मिलेगा। इस कमेटी के दूसरे वरिष्ठ सदस्य रिपब्लिकन डेविन नंस भी पूछताछ करने वालों में है।

90 मिनट तक होगी सुनवाई: यह सुनवाई डेढ़ घंटे तक चलेगी। इसमें शिप और नंस दोनों को गवाहों से 45-45 मिनट तक बारी-बारी से पूछताछ करने का मौका मिलेगा। दोनों अपने समय में से कुछ वक्त अपने वकीलों को भी दे सकते हैं।

पहले दिन दो लोगों की गवाही : पहले दिन यानी बुधवार को यूक्रेन में अमेरिका के वरिष्ठ राजनयिक रहे विलियम ट्रंप और दूसरे वरिष्ठ राजनयिक जॉर्ज केंट से पूछताछ होगी। जबकि, यूक्रेन में अमेरिका की पूर्व राजदूत मैरी योवानोविच की गवाही होगी। टेलर और मैरी ने ट्रंप के खिलाफ सनसनीखेज आरोप लगाए थे।

जूडिशियरी कमेटी करेगी सुनवाई : खुली सुनवाई खत्म होने के बाद हाउस इंटेलीजेंस कमेटी अपनी रिपोर्ट जूडिशियरी कमेटी को सौंपेगी। जूडिशियरी कमेटी यह तय करेगी कि संसद राष्ट्रपति पर महाभियोग चलाए या नहीं। अगर महाभियोग चलाने का फैसला होता है तो उसका मसौदा कमेटी पूर्ण सदन को भेजेगी।

महाभियोग का यह चौथा मौका

अमेरिकी संसद के इतिहास में राष्ट्रपति के खिलाफ महाभियोग की जांच चलाने का यह चौथा मौका है। इससे पहले सिर्फ तीन बार राष्ट्रपति के खिलाफ महाभियोग की जांच हुई है। 1968 में एंड्रयू जॉनसन और 1998 में बिल क्लिंटन के खिलाफ महाभियोग अंतिम चरणों तक गया लेकिन पास नहीं हो सका। जबकि, 1974 में वाटरगेट स्कैंडल के चलते रिचर्ड निक्सन ने महाभियोग की आशंका को देखते हुए कार्यवाही पूरी होने से पहले ही इस्तीफा दे दिया।

फिर आगे क्या होगा

जूडिशियरी कमेटी की रिपोर्ट पर संसद में मतदान होगा। संसद के निचले सदन प्रतिनिधि सभा को महाभियोग की जांच करने और उसके लिए नियम बनाने का अधिकार है जबकि महाभियोग पर मुकदमा चलाने और उसे पास करने का अधिकार संसद के उच्च सदन सीनेट के पास है। प्रतिनिधि सभा में डेमोक्रेटिक पार्टी बहुमत में हैं जबकि सीनेट में बहुमत का आंकड़ा रिपब्लिकन पार्टी के पास है।

ट्रंप पर क्या है आरोप

ट्रंप पर आरोप है कि उन्होंने अपने निजी राजनीतिक लाभ के लिए यूक्रेन के राष्ट्रपति बोलोदिमीर जेलेंस्की से कहा था कि अगर वे पूर्व अमेरिकी उपराष्ट्रपति जो बिडेन और उनके बेटे हंटर बिडेन के खिलाफ भ्रष्टाचार मामले की जांच करेंगे, तभी उन्हें अमेरिकी सैन्य सहायता मिलेगी। बिडेन अगले साल राष्ट्रपति चुनाव में डेमोक्रेटिक पार्टी की तरफ से ट्रंप को चुनौती देने वालों में सबसे आगे चल रहे हैं।

बांग्लादेश में भिड़ीं ट्रेनें, 16 की मौत

बांग्लादेश के ब्राह्मणबरिया में मंगलवार को दो ट्रेनों की भिड़ंत हो गई। इसमें कम से कम 16 लोगों की मौत हो गई और 60 से अधिक घायल हुए हैं। हादसे के बाद मौके पर जुटे लोग। एएफपी

ढाका, प्रेट्र : बांग्लादेश के ब्राह्मणबड़िया जिले में मंगलवार तड़के दो यात्री ट्रेनों की टक्कर में 16 लोगों की मौत हो गई। इस हादसे में 60 यात्री घायल हैं। स्थानीय अधिकारियों ने मृतकों की संख्या बढ़ने की आशंका जताई है। रेलवे प्रवक्ता के अनुसार, ब्राह्मणबड़िया के मोंडोभाग स्टेशन पर ट्रैक बदलते वक्त ढाका जा रही टूर्ना निशिता ट्रेन की चटगांव जा रही उदयन एक्सप्रेस से टक्कर हो गई। यह हादसा दोनों ट्रेनों के एक ही पटरी पर आने से हुआ। इस टक्कर में उदयन एक्सप्रेस के पांच डब्बे बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। अधिकारियों ने बताया कि हादसे के लिए जिम्मेदार टूर्ना निशिता ट्रेन के ड्राइवर और कंडक्टर को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। बांग्लादेश के राष्ट्रपति अब्दुल हामिद और प्रधानमंत्री शेख हसीना ने घटना पर शोक जताया है।

न्यूज गैलरी

शरण लेने मेक्सिको पहुंचे बोलीविया के पूर्व राष्ट्रपति

विमान में मेक्सिको के ध्वज के साथ दक्षिण अमेरिकी देश बोलीविया के पूर्व राष्ट्रपति एवो मोरालेस। रायटर

मेक्सिको सिटी : करीब 14 वर्षों तक दक्षिण अमेरिकी देश बोलीविया के राष्ट्रपति रहे एवो मोरालेस अपने पद से इस्तीफा देने के बाद शरण लेने मेक्सिको पहुंच गए हैं। विवादास्पद राष्ट्रपति चुनाव के बाद अपने खिलाफ उपजे जबरदस्त विरोध के कारण मोरालेस को रविवार को राष्ट्रपति पद छोड़ना पड़ा था। सोमवार देर रात उन्होंने मेक्सिको की वायुसेना के विमान से बोलीविया छोड़ दिया। मेक्सिको की सरकार मोरोलेस को शरण देने पर विचार कर रही है। मेक्सिको के विदेश मंत्री मार्सेलो एबरार्ड ने मंगलवार को कहा, मोरालेस अब सुरक्षित जगह (मेक्सिको) पहुंच गए हैं। मेक्सिको के राष्ट्रपति आंद्रे मैनुएल लोपेज ओबराडोर ने भी इस्तीफे के निर्णय की तारीफ करते हुए कहा कि मोरालेस के इस साहसिक कदम से बोलीविया की जनता पर से संकट टल गया। मोरालेस ने इस सहयोग के लिए मेक्सिको का शुक्रिया अदा किया है। (रायटर)

चीन के स्कूल में रसायन हमले में 51 बच्चे घायल

बीजिंग : चीन के युन्नान प्रांत के कैयुआन में सोमवार को एक प्राथमिक स्कूल में रसायन हमले में 51 बच्चे घायल हो गए। समाज से बदला लेने के लिए 23 साल के एक युवक ने डोंगचेंग स्कूल में सोडियम हाइड्रॉक्साइड का स्प्रे कर दिया। इस हमले में तीन शिक्षक भी घायल हुए हैं। घायल बच्चों और शिक्षकों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने हमले को अंजाम देने वाले युवक को पकड़ लिया है। (एएनआइ)

ओमान में छह भारतीय कामगारों की मौत

दुबई : ओमान की राजधानी मस्कट के सीब इलाके में खोदाई के काम में लगे छह भारतीय कामगारों की मौत हो गई। बीते रविवार को यह हादसा इलाके में भारी बारिश के कारण हुआ। सतह से 14 मीटर अंदर पानी की पाइपलाइन बिछाने के लिए खोदाई के काम में लगे मजदूर बारिश का पानी भरने से बाहर नहीं आ पाए। बचाव दल ने 12 घंटे की मशक्कत के बाद शवों को बाहर निकाला। अपने नागरिकों की मौत पर ओमान स्थित भारतीय दूतावास ने शोक जताया है। भारतीय दूतावास ने बताया कि वह ओमानी अधिकारियों के संपर्क में है और शवों की पहचान में जुटा है। (प्रेट्र)

दो विदेशी प्रोफेसरों के बदले तीन बड़े आतंकियों को रिहा करेगा अफगानिस्तान

काबुल, रायटर, अफगानिस्तान सरकार बंधक बनाए गए अमेरिकी और आस्ट्रेलियाई प्रोफेसरों के बदले में तीन आतंकियों को रिहा करेगी। इन आतंकियों में दो तालिबान के हैं जबकि एक हक्कानी नेटवर्क का है। अफगानिस्तान के राष्ट्रपति अशरफ गनी ने मंगलवार को एक टीवी संदेश में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि तालिबान और अफगान सरकार के बीच सीधी शांति वार्ता का मार्ग प्रशस्त करने के लिए शीर्ष आतंकी कमांडर अनस हक्कानी और दो अन्य तालिबान आतंकियों हाजी माली खान व हाफिज राशिद को रिहा करने का निर्णय लिया गया है।

गनी ने बताया कि सरकार ने तीन साल पहले बंधक बनाए गए दो विदेशी प्रोफेसरों केविन किंग और टिमोथी वीक्स के बदले इन आतंकियों को रिहा करने का निर्णय लिया है। तीनों आतंकियों को वर्ष 2014 में गिरफ्तार किया गया था और कुछ समय तक बगराम स्थित जेल में रखा गया था। गनी ने यह घोषणा पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आइएसआइ के प्रमुख फैज हामिद और अफगानिस्तान के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार हमदुल्ला मोहिब के बीच काबुल में हुई बैठक के एक दिन बाद की। अफगानिस्तान की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के प्रवक्ता कबीर हकमल ने हालांकि कहा कि दोनों अधिकारियों ने दोनों देशों के बीच संबंधों को बेहतर बनाने के बारे में बात की। पाकिस्तान पर लंबे समय से तालिबान को समर्थन देने का आरोप लगता रहा है, लेकिन वह लगातार इससे इन्कार करता रहा है। काबुल में अमेरिका और आस्ट्रेलियाई दूतावासों ने इस मुद्दे पर तत्काल टिप्पणी से इन्कार कर दिया।

अफगानिस्तान ने बंधक बनाए गए प्रोफेसरों के बदले में हक्कानी और दो अन्य आतंकियों को रिहा करने का फैसला किया है। एपी

- रिहा किए जाने वालों में अनस हक्कानी को मिली थी मौत की सजा
- अमेरिकी और ऑस्ट्रेलियाई प्रोफेसर को 2016 में कर लिया गया था अगवा

कौन है अनस हक्कानी : अनस अफगान तालिबान के सबसे खतरनाक गुट हक्कानी नेटवर्क के कर्ताधर्ता सिराजुद्दीन हक्कानी का छोटा भाई है। हक्कानी गुट ने हाल के वर्षों में अफगानिस्तान में आम लोगों पर बड़े पैमाने पर आतंकी हमले किए हैं। अनस को फांसी की सजा सुनाई गई थी। हक्कानी नेटवर्क को अमेरिकी एडमिरल माइक मुलेन ने वर्ष 2011 में पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आइएसआइ का हिस्सा बताया था।

एक प्रोफेसर की हालत नाजुक : राष्ट्रपति गनी ने यह तो नहीं बताया कि दोनों प्रोफेसरों को कब और कहां रिहा किया जाएगा, लेकिन उन्होंने यह जरूर कहा कि आतंकियों के चंगुल में रहने के कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। पाकिस्तान स्थित तालिबान सूत्रों ने समाचार एजेंसी एएफपी को बताया कि किंग गंभीर रूप से बीमार हैं और आंतकियों को चिंता है कि वह उनकी हिरासत में मर भी सकते हैं।

काबुल में 2006 में खोली गई थी अमेरिकन यूनिवर्सिटी : काबुल में वर्ष 2006 में अमेरिकन यूनिवर्सिटी ऑफ अफगानिस्तान खोली गई थी। इससे बड़ी संख्या में विदेशी प्रोफेसर जुड़े हैं। इन्हीं प्रोफेसरों में से दो का अगस्त, 2016 में तालिबान ने अपहरण कर लिया था।

ब्रिटेन की लेबर पार्टी ने भारतीय वोटरों को मनाने की कोशिशें तेज कीं

लंदन, आइएएनएस : ब्रिटेन की विपक्षी लेबर पार्टी ने कश्मीर मुद्दे पर नाराज चल रहे भारतीयों को मनाने की कोशिशें तेज कर दी हैं। पार्टी के चेयरमैन ने मंगलवार को कश्मीर मामले को भारत और पाकिस्तान के बीच का द्विपक्षीय मसला बताया। बता दें कि कश्मीर मुद्दे पर लेबर पार्टी के स्टैंड को देखते हुए 12 दिसंबर को होने वाले आम चुनाव में भारतीयों से उसे वोट नहीं देने की अपील की गई थी। कश्मीर मुद्दे पर लेबर पार्टी द्वारा अपनाए गए रुख के बाद उसके भारत के साथ संबंध बहुत खराब हो गए हैं।

दरअसल, पार्टी ने गत 25 सितंबर को अपने वार्षिक अधिवेशन में कश्मीर पर एक प्रस्ताव पारित किया था। इसमें कश्मीर घाटी में बड़े पैमाने पर मानवाधिकारों के उल्लंघन का आरोप लगाया गया था। पार्टी के इस कदम के बाद उस पर भारतीय विरोधी होने का आरोप लगाया गया था। पार्टी को चंदा देने वाले एक बड़े भारतीय नेता की आलोचना के बाद अब लेबर पार्टी ने अपने वार्षिक अधिवेशन में पारित प्रस्ताव से दूरी बना ली है। भारतीयों के गुस्से को शांत करने के लिए लेबर पार्टी के अध्यक्ष इयान लॉवरी खुद सामने आए। उन्होंने कहा, पार्टी कश्मीर को लेकर भारतीयों की भावनाओं से पूरी तरह अवगत है। हमें पता है कि वार्षिक अधिवेशन में पारित प्रस्ताव में इस्तेमाल की गई भाषा से भारतीय समुदाय और भारत के लोग आहत हैं। उन्होंने कहा कि कश्मीर, भारत और पाकिस्तान के बीच का द्विपक्षीय मसला है जिसका शांतिपूर्ण समाधान खोजा जाना चाहिए। हमारा मानना है कि कश्मीर के मुद्दे पर मतभेदों को आधार बनाकर ब्रिटेन में धार्मिक विभाजन की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। इयान लॉवरी ने कहा कि कश्मीर पर लेबर पार्टी की आधिकारिक स्थिति वही है जो 2019 की नेशनल पॉलिसी फोरम की वार्षिक रिपोर्ट में थी। उन्होंने दोहराया कि पार्टी ऐसा कोई भी स्टैंड नहीं लेना चाहती है, जिसे एंटी इंडिया या एंटी पाकिस्तान के तौर पर देखा जाए।

वहीं दूसरी ओर ब्रिटेन के आम चुनावों में साइबर हमले का खतरा मंडराने लगा है। मुख्य विपक्षी दल लेबर पार्टी बड़े साइबर हमले का शिकार हुई है।

- पार्टी अध्यक्ष ने कश्मीर को भारत-पाक का द्विपक्षीय मसला बताया
- कश्मीर मुद्दे पर पार्टी के रुख से नाराज है ब्रिटेन का भारतीय समुदाय

जेरमी कॉर्बिन के एक भारत विरोधी बयान के बाद लेबर पार्टी से नाराज हैं भारतीय। फाइल

पूरा भारतीय समुदाय कंजरवेटिव पार्टी को वोट देगा : उमेश चंद्र शर्मा

ब्रिटेन की हिंदू काउंसिल के चेयरमैन उमेश चंद्र शर्मा ने बीबीसी को दिए एक इंटरव्यू में कहा, ज्यादातर भारतीय कश्मीर मुद्दे पर लेबर पार्टी द्वारा अपनाई गई नीति से गुस्से में हैं। जो कुछ लोग आमतौर पर लेबर पार्टी को वोट देते थे, वे भी कश्मीर मुद्दे पर पार्टी के रुख को देखते हुए अब कंजरवेटिव पार्टी को वोट देंगे। बता दें कि यहां करीब दस लाख भारतीय रहते हैं।

सैनिकों को मारने वाले आतंकियों को शरण देता है पाक : निक्की

वाशिंगटन, प्रेट्र : संयुक्त राष्ट्र के लिए अमेरिका की पूर्व राजदूत निक्की हेली ने कहा है कि पाकिस्तान उन आतंकवादियों को शरण देता है जो 'अमेरिकी सैनिकों को मारने का प्रयास करते हैं।' हेली की लिखी किताब 'विद ऑल ड्यू रिस्पेक्ट' मंगलवार को बाजार में आई है।

भारतीय मूल की अमेरिकी निक्की हेली ने इस किताब में लिखा है कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप तब नाराज हुए जब उन्होंने उन्हें अपना यह निष्कर्ष सौंपा कि अमेरिकी सहायता प्राप्त करने वाले प्रमुख देशों में शामिल होने के बावजूद पाकिस्तान ने न केवल संयुक्त राष्ट्र में अमेरिका के खिलाफ वोट किया बल्कि आतंकियों को शरण भी दी।

हेली ने अपनी पुस्तक में लिखा है, 'हमने पाकिस्तान को अन्य देशों की तुलना में अधिक सहायता दी। 2017 में अमेरिका ने उसकी सेना को करीब एक अरब अमेरिकी डॉलर की सहायता दी। पाकिस्तान संयुक्त राष्ट्र में पूरे 76 प्रतिशत समय हमारा विरोध करता है। सबसे बुरा यह है कि पाकिस्तान आतंकवादियों को शरण देता है जो हमारे अमेरिकी सैनिकों को मारने का प्रयास करते हैं।' उन्होंने कहा, 'मैंने इन निष्कर्षों एवं अन्य चीजों से राष्ट्रपति ट्रंप को अवगत कराया। वह नाराज हुए। उसके तुरंत बाद उन्होंने कांग्रेस से एक विधेयक पारित करने के लिए कहा। इसमें यह सुनिश्चित करना था कि अमेरिकी विदेशी सहायता केवल अमेरिकी हितों और अमेरिका के मित्रों को बढ़ावा देने के लिए दी जाए।' उन्होंने कहा कि मानवीय सहायता अमेरिका के लिए हमेशा ही एक प्राथमिकता रहेगी।

- संयुक्त राष्ट्र में अमेरिका की पूर्व राजदूत ने अपनी किताब में किया उल्लेख

चीनी अर्थव्यवस्था से खतरा : संयुक्त राष्ट्र में अमेरिका की पूर्व राजदूत निक्की हेली ने अपनी नई किताब में बताया है कि भारत और चीन दुनिया की दो सबसे बड़ी और तेजी से विकास करती अर्थव्यवस्थाएं हैं। यह दोनों ही स्वाधीन और पराधीन सरकारों से होने वाले खतरे का एक बेहतरीन उदाहरण हैं। उन्होंने कहा कि भारत के साथ अमेरिका की बढ़ती साझेदारी के विपरीत अमेरिका को आज जिस विदेशी ताकत से सबसे ज्यादा खतरा है, वह चीन है। हेली ने कहा कि चीन रणनीतिक रूप से अपनी वित्तीय और सैन्य मौजूदगी का अहसास पूरे विश्व में करा रहा है। लेकिन यह सब एक बहुत गलत अंदाज में हो रहा है। चीन बौद्धिक संपत्ति को चुराता है। वह प्रतिबंधों को लेकर धोखाधड़ी करने में उत्तर कोरिया की मदद करता है।

हांगकांग में प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच फिर हुई हिंसक झड़पें, तनाव

हांगकांग, एपी : पुलिस और प्रदर्शनकारियोंके बीच हांगकांग में ताजा झड़पों की खबरें हैं। पांच महीने से जारी सरकार विरोधी प्रदर्शन में मंगलवार सुबह प्रदर्शनकारियों ने सुबह की ट्रेनों के आवागमन में बाधा डाली। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को तितर-बितर करने के लिए आंसू गैस के गोले छोड़े। कई विश्वविद्यालय परिसरों के आसपास प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच झड़पें हुईं। हिंसात्मक स्थिति के चलते शिक्षण संस्थानों में कक्षाएं रद कर दी गईं। सब-वे आंशिक रूप से बंद कर दिए गए। एक ट्रेन से यात्रियों को स्टेशन से कुछ पहले ही उतार दिया गया।

हाल के दिनों में दुकानों और ट्रेनों में तोड़फोड़ की घटनाएं देखने को मिली हैं तथा प्रदर्शनकारियों और चीन समर्थकों के बीच झड़प होने की घटनाएं हुई हैं। हांगकांग की मुख्य कार्यकारी कैरी लाम ने सलाहकारों के साथ साप्ताहिक बैठक के बाद मीडिया से कहा कि सुबह के समय परिवहन सेवा को बाधित करना एक 'अत्यंत स्वार्थी कृत्य' है। उन्होंने कहा, 'मैं उन लोगों के प्रति आभार व्यक्त करती हूं जो आज भी काम पर तथा स्कूल जा रहे हैं।' बता दें कि सोमवार को एक पुलिस अधिकारी ने प्रदर्शनकारियों के साथ झड़प के दौरान एक प्रदर्शनकारी के पेट में गोली मार दी थी। वहीं, दूसरी घटना में एक विवाद के चलते एक व्यक्ति को आग लगा दी गई। हांगकांग के अस्पताल अधिकारियों ने कहा कि इन दोनों की हालत गंभीर बनी हुई है। वहीं, एक वीडियो में एक पुलिसकर्मी प्रदर्शनकारियों को तितर-बितर करने के लिए उनके बीच मोटरसाइकिल दौड़ाता नजर आता है। पुलिस ने कहा कि इन घटनाओं की जांच की जा रही है, लेकिन पुलिस अधिकारियों की कार्रवाई का यह कहकर बचाव किया कि खुद की सुरक्षा में ऐसा करना आवश्यक हो गया था। पुलिस प्रवक्ता कोंग विंग च्यूंग ने कहा कि एक व्यक्ति को आग लगाने के मामले को हत्या के प्रयास के रूप में दर्ज किया गया हैं और आरोपित का पता बताने के लिए आम लोगों से मदद मांगी गई है।

- आंदोलनकारियों ने ट्रेनों के आवागमन में डाली बाधा, पुलिस ने आसूं गैस के गोले छोड़े
- सोशल मीडिया में वायरल हुए कई वीडियो, शिक्षण संस्थानों में कक्षाएं रद

चीन ने अमेरिका और ब्रिटेन को लताड़ा

हांगकांग में बढ़ती हिंसा पर अमेरिका और ब्रिटेन द्वारा जारी किए गए बयान पर बीजिंग ने दोनों देशों को लताड़ लगाई है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता गेंग शुआंग ने एक नियमित ब्रीफिंग में कहा कि अमेरिका और ब्रिटेन हांगकांग की घटना पर निष्पक्ष होने का दिखावा करते हैं, लेकिन इससे केवल यह पता चलता है कि वह सही या गलत का निर्णय करने में किस कदर भ्रमित हैं। दोनों देशों का बयान एक बार फिर उनके दोहरे मानकों और परोक्ष उद्देश्यों को उजागर करता है। चीन ने अमेरिकी और अन्य विदेशी शक्तियों पर विरोध प्रदर्शन को बढ़ावा देने का आरोप लगाया।

शेख हसीना बोलीं क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए खतरा हैं रोहिंग्या

ढाका, आइएएनएस : बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना ने कहा है कि रोहिंग्या क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए खतरा हैं। इस समस्या से निपटने के लिए उन्होंने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से सहयोग की अपील की है।

हसीना ने सोमवार को यहां ढाका ग्लोबल डायलॉग 2019 का उद्घाटन करते हुए कहा, 'सैन्य कार्रवाई के कारण म्यांमार से पलायन कर आए रोहिंग्या मुसलमान बांग्लादेश के अलावा पूरे क्षेत्र की सुरक्षा के लिए खतरा हैं।' अगस्त, 2017 में म्यांमार के रखाइन प्रांत में हुई सैन्य कार्रवाई के बाद लाखों रोहिंग्या ने भागकर बांग्लादेश में शरण ली थी। बांग्लादेश के शिविरों में रोहिंग्या शरणार्थियों की संख्या अब बढ़कर 11 लाख से ज्यादा हो चुकी है।

शेख हसीना। फाइल

हसीना ने एशिया-प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा, शांति और विकास के लिए देशों के बीच आपसी सहयोग की जरूरत पर बल दिया। उन्होंने गरीबी को बड़ी समस्या बताते हुए कहा कि साथ मिलकर काम करके इसे खत्म किया जा सकता है।

चिंताजनक

अस्पताल बनाने के लिए डॉक्टरों और नर्सों से जबरन लिया जा रहा धन, कर्ज में डूबी स्थानीय सरकारों के सामने आर्थिक संकट

अंदर से खोखली हो रही है चीन की अर्थव्यवस्था

न्यूयॉर्क टाइम्स से

रुझोऊ (चीन) : अपनी अर्थव्यवस्था और बाजार के बल पर दुनिया की इकलौती महाशक्ति अमेरिका को आंख दिखाने वाला चीन अंदर ही अंदर खोखला हो रहा है। अर्थव्यवस्था को मजबूत दिखाने और बेरोजगारी को दूर करने के उपायों के चलते उसकी आर्थिक स्थिति कमजोर होती जा रही है। उसके कई शहर तंगी की स्थिति में पहुंच गए हैं। हालात यहां तक पहुंच गए हैं कि सरकारी सुविधाओं के निर्माण के लिए इन शहरों के पास धन नहीं है। ऐसा ही एक शहर है रुझोऊ।

मध्य चीन के हेनान प्रांत के प्रमुख शहर रुझोऊ की आबादी लगभग 10 लाख है। साम्यवादी चीन में कस्बाई स्तर तक प्रशासनिक व्यवस्था सरकार की एक इकाई के रूप में काम करती है। रुझोऊ शहर में सरकारी अस्पताल की सख्त जरूरत है। सरकार उसका निर्माण भी करना चाहती है, लेकिन उसके पास बजट नहीं है। इसके लिए अब रुझोऊ के डॉक्टरों और नर्सों से कर्ज देने को कहा जा रहा है। अगर किसी के पास पैसे नहीं हैं तो उनसे बैंक से कर्ज लेकर स्थानीय प्रशासन को अस्पताल के लिए ऋण देने के लिए दबाव बनाया जा रहा है। सरकारी दफ्तरों से इनके पास फोन आ रहे हैं। चीन में डॉक्टरों और नर्सों की कमाई कोई बहुत अच्छी नहीं है। अगर अमेरिका के साथ तुलना करें तो इन्हें बहुत कम पैसे मिलते हैं।

चीन के रुझोऊ में यह स्पोर्ट्स स्टेडियम उस समय बनाया गया था जब लोग खर्च ज्यादा करते थे। अब यह ई-कॉमर्स का एक ऐसा केंद्र बन चुका है जिसका प्रयोग कोई नहीं करता। साभार : एनवाईटी

चिंताजनक हैं डॉक्टरों के हालात

चीन में डॉक्टरों को बहुत कम पैसे मिलने के बाद भी उनसे हजारों डॉलर में कर्ज देने को कहा जा रहा है। मीडिया की खबरों के मुताबिक 14 से 28 हजार डॉलर (12-25 लाख रुपये) तक मांग की जा रही है। डॉक्टरों में नाराजगी है। इनका कहना है कि एक तो उन्हें पहले ही कम पैसे मिलते हैं और ऊपर से हजारों डॉलर कर्ज देने के लिए उन पर दबाव बनाया जा रहा है। इसके खिलाफ ऑनलाइन अभियान भी चलाया जा रहा है। प्रशासन की इस पहल को जले पर नमक रगड़ने जैसा बताया जा रहा है। दरअसल, रुझोऊ जैसे शहरों में प्रशासन द्वारा रोजगार पैदा करने और कंपनियों को बंद होने से बचाने के लिए खूब कर्ज लेती हैं। पहले केंद्र सरकार से उन्हें उदार तरीके से आर्थिक मदद मिलती थी। लेकिन मंदी के दौर से गुजर रहे चीन ने अब इन पर लगाम लगानी शुरू कर दी है।

इजरायली हमले में इस्लामिक जिहाद का शीर्ष कमांडर ढेर

गाजा, रायटर: इजरायल ने मंगलवार को गाजा पट्टी पर अपने हमले में ईरान समर्थित फलस्तीनी आतंकी संगठन इस्लामिक जिहाद के शीर्ष कमांडर बहा अबू अल अत्ता को मार गिराया। इस हमले के जवाब में आतंकी संगठन ने भी तेलअवीव सहित इजरायल के कई शहरों पर रॉकेट दागे। इजरायल का आरोप है कि अल अत्ता ने सीमा पार से न केवल कई हमलों को अंजाम दिया था बल्कि वह और हमलों की योजना बना रहा था। वह गाजा के सत्तारूढ़ हमास गुट के लिए भी नई चुनौतियां पैदा कर रहा था।

इजरायल ने सीरिया की राजधानी दमिश्क में भी इस्लामिक जिहाद से जुड़े राजनीतिक नेता अकरम अल अजौरी के घर को निशाना बनाकर हमला किया। सीरिया के सरकारी मीडिया के मुताबिक इस हमले में अजौरी के बेटे सहित दो लोगों की मौत हुई है। एक प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार, गाजा पट्टी पर किए गए हमले से कुछ घंटों बाद ही वाणिज्यिक राजधानी तेलअवीव सहित मध्य इजरायल के शहरों में संभावित हवाई हमलों को लेकर सायरन बजने लगे। दक्षिण और मध्य इजरायल में स्कूल बंद कर दिए गए। नागरिकों को घरों में ही रहने और बहुत जरूरी काम से ही बाहर निकलने की सलाह दी गई। गाजा पट्टी से इजरायल पर किए गए हमलों में हताहतों की जानकारी नहीं मिल सकी है।

- आतंकी संगठन ने भी इजरायल के कई शहरों पर दागे रॉकेट

आतंकी संगठन इस्लामिक जिहाद के कमांडर बहा अबू अल अत्ता की फाइल फोटो। एएफपी

गुलाबी और लाल गेंद के फेर में भारतीय खिलाड़ी

भारतीय खिलाड़ियों ने बारी-बारी से गुलाबी और लाल गेंद से अभ्यास किया बांग्लादेश के खिलाफ गुरुवार से शुरू होगा सीरीज का पहला टेस्ट

नईदुनिया, इंदौर: बांग्लादेश के खिलाफ गुरुवार से शुरू हो रहे पहले टेस्ट से पूर्व अभ्यास सत्र में कप्तान विराट कोहली समेत सभी भारतीय खिलाड़ियों ने बारी-बारी से गुलाबी और लाल गेंद से अभ्यास किया। इस सीरीज का पहला टेस्ट लाल गेंद से और दूसरा टेस्ट गुलाबी गेंद से खेला जाएगा।

भारतीय टीम ने एसजी गुलाबी गेंद से थ्रोडाउन का अभ्यास किया। आम तौर पर मैदान पर तेज गेंदबाजों, स्पिनरों और थ्रोडाउन के लिए तीन नेट अगल-बगल बनाए जाते हैं। टीम के अनुरोध पर थ्रोडाउन नेट मैदान के दूसरी ओर अलग पिच पर बनाया गया है जिसकी साइट स्क्रीन काली थी। कोहली ने सबसे पहले गुलाबी गेंद से अभ्यास किया। थ्रोडाउन विशेषज्ञ राघवेंद्र और श्रीलंका के नुवान सेनाविरत्ने ने गुलाबी गेंद डाली जिन पर कोहली एकदम सहज नजर आए। उन्होंने रक्षात्मक शॉट अधिक लगाए। कोहली के बाद चेतेश्वर पुजारा ने बारी-बारी से गुलाबी और लाल गेंद से अभ्यास किया। भारतीय टीम को ईडन गार्डेंस पर 22 नवंबर से शुरू हो रहे डे-नाइट के पहले टेस्ट से पूर्व दो ही दिन अभ्यास के लिए मिलेंगे। बीसीसीआइ ने इसके मद्देनजर दूधिया रोशनी में गुलाबी गेंद से कुछ अभ्यास सत्र रखे हैं लेकिन मंगलवार को दूधिया रोशनी में कोई अभ्यास नहीं हुआ।

सबसे अंत में युवा बल्लेबाज शुभमन गिल और हनुमा विहारी नेट्स पर उतरे। गिल को कुलदीप यादव और अश्विन ने अभ्यास कराया। अश्विन ने लंबे समय तक गेंदबाजी की। चोट के बाद टेस्ट टीम में वापसी करने वाले रिद्धिमान साहा मुख्य पिच के करीब अभ्यास पिच पर कीपिंग का अभ्यास किया। भारतीय टीम के अभ्यास सत्र के दौरान चयन समिति के सदस्य शरनदीप सिंह भी खिलाड़ियों और कोच से चर्चा करते नजर आए। इससे पहले सुबह के सत्र में बांग्लादेशी खिलाड़ियों ने भी गेंदबाजी कोच डेनियल विटोरी की निगरानी में जमकर पसीना बहाया। अनुभवी विकेटकीपर बल्लेबाज मुशफिकुर रहीम और इमरूल काएस सहित सभी बल्लेबाजों ने ढाई घंटे नेट्स पर बिताए।

भुवनेश्वर ने भी किया अभ्यास: हैमस्ट्रिंग से जूझ रहे तेज गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार ने अपनी फिटनेस के आकलन के लिए भारतीय टीम के साथ अभ्यास सत्र में भाग लिया। भुवनेश्वर रिहेबलिटेशन के आखिरी सत्र में है और यह भारतीय टीम प्रबंधन की देखरेख में हो रहा है। वेस्टइंडीज से लौटने के बाद से भुवनेश्वर की चोट भारतीय टीम के लिए चिंता का सबब बनी हुई है। वह राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी में रिहेबलिटेशन कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं। टीम के एक सूत्र ने कि भुवी यहां टीम के साथ स्किल सेशन में भाग ले रहे हैं। टीम प्रबंधन चाहता है कि वह लय में रहे। उन्होंने फील्डिंग कोच आर. श्रीधर के साथ कैचिंग सत्र में भी भाग लिया। उन्होंने कुछ गेंद पूरे रनअप के साथ डाली। खलील अहमद अभी सीख रहे हैं और जसप्रीत बुमराह के कार्यभार पर भी ध्यान देना है, लिहाजा भुवनेश्वर का फिट होकर लौटना भारतीय टीम के लिए अहम है। भुवनेश्वर की मौजूदगी से यह भी संकेत मिला कि फिजियो नितिन पटेल और ट्रेनर निक वेब की भविष्य में उनकी फिटनेस में अहम भूमिका होगी। हाल में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी की काफी आलोचना हुई है जिसके बारे में कहा जाता है कि वह सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की बजाय रिहेबलिटेशन सेंटर बन गया है।

... जब विराट ने बच्चों के साथ खेला गली क्रिकेट

नईदुनिया, इंदौर: भारत और बांग्लादेश के बीच इंदौर के होलकर स्टेडियम में 14 नवंबर से सीरीज का पहला क्रिकेट टेस्ट मैच खेला जाएगा। इससे पहले भारतीय कप्तान विराट कोहली मंगलवार सुबह शहर के एक टाउनशिप पहुंचे। इस दौरान उन्होंने सड़क पर बच्चों के साथ क्रिकेट खेला। हालांकि यह एक विज्ञापन की शूटिंग का हिस्सा था, लेकिन बच्चों को अपने चहेते क्रिकेटर को करीब से देखने और साथ में खेलने का मौका जरूर मिल गया। विराट ने भी बच्चों के साथ खूब मस्ती की।

विराट का यह विज्ञापन बच्चों को खेल के लिए प्रेरित करने पर आधारित है। विराट की शूटिंग की खबर जैसे ही लोगों तक पहुंची, बड़ी संख्या में उनके प्रशंसक एकत्रित हो गए। साथ ही वहां मौजूद लोगों ने जोरदार तरीके से विराट का स्वागत किया। गुरु नानक जयंती की छुट्टी होने के कारण पूरी सोसायटी के बच्चे मौजूद थे। विराट की कार जैसे ही यहां पहुंची तो विराट... विराट... की आवाज से पूरा माहौल गूंज उठा। उन्होंने भी हाथ हिलाकर सभी का अभिवादन किया।

इंदौर के होलकर स्टेडियम में विशेष तरीके का अभ्यास करते भारतीय टीम के सदस्य • एएफपी

पुजारा बोले, सूर्यास्त के समय हो सकती है दिक्कत

इंदौर: शीर्ष बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा का मानना है कि भारत और बांग्लादेश के बीच डे-नाइट टेस्ट मैच के दौरान 'सूर्यास्त के समय दृश्यता' का मसला हो सकता है। पुजारा ने कहा, 'मैं इससे पहले दलीप ट्रॉफी में गुलाबी गेंद से खेल चुका हूं। वह अच्छा अनुभव था। घरेलू स्तर पर गुलाबी गेंद से खेलने का अनुभव फायदेमंद हो सकता है।' अधिकतर क्रिकेटर अपने करियर में पहली बार गुलाबी गेंद से खेलेंगे। हालांकि पुजारा, मयंक अग्रवाल, हनुमा विहारी और कुलदीप यादव जैसे खिलाड़ियों को दलीप ट्रॉफी में कूकाबुरा की गुलाबी गेंद से खेलने का अनुभव है। पुजारा ने कहा, 'दिन के समय रोशनी की दिक्कत नहीं होगी, लेकिन सूर्यास्त के समय और दूधिया रोशनी में यह मसला हो सकता है। सूर्यास्त के समय का सत्र बेहद अहम होगा। मेरा बल्लेबाज के तौर पर निजी अनुभव तो अच्छा रहा था, लेकिन मैंने जब वहां पर अन्य खिलाड़ियों से बात की तो उनका कहना था कि लेग स्पिनर को खेलना विशेषकर उनकी गुगली को समझना मुश्किल था।'

स्पिनरों पर निर्भर नहीं भारत : मिथुन

नईदुनिया, इंदौर: बांग्लादेश के विकेटकीपर बल्लेबाज मुहम्मद मिथुन ने कहा कि उनकी टीम गुरुवार से यहां शुरू होने वाली दो टेस्ट मैचों की सीरीज में भारत को कड़ी चुनौती देने की कोशिश करेगी। कोलकाता में होने वाला डे-नाइट टेस्ट टीम के लिए नया अनुभव होगा और खिलाड़ी उसका पूरा आनंद उठाएंगे।

बांग्लादेश टीम ने पहले टेस्ट मैच के लिए मंगलवार को होलकर स्टेडियम में जमकर अभ्यास किया। मिथुन ने कहा, 'भारत के खिलाफ भारत में खेलना हमेशा से ही बड़ी चुनौती रही है। टीम इंडिया आइसीसी टेस्ट रैंकिंग की नंबर एक टीम है। मेजबान टीम बेहद मजबूत है, लेकिन हम उसे कड़ी चुनौती देने मैदान में उतरेंगे। हम अपनी ओर से अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे तो परिणाम अपने आप हमारे पक्ष में रहेगा। कुछ समय पहले तक टीम इंडिया के स्पिनरों का दबदबा रहता था, लेकिन अब उसके तेज गेंदबाज भी प्रभावी प्रदर्शन कर रहे हैं।' शाकिब अल हसन और तमीम इकबाल जैसे प्रमुख खिलाड़ियों की अनुपस्थिति पर मिथुन ने कहा कि इन दोनों खिलाड़ियों की कमी महसूस तो होगी, लेकिन यह पुरानी बात हो चुकी है।

भारत का डे-नाइट टेस्ट दोपहर एक बजे से शुरू होगा

जागरण न्यूज नेटवर्क, कोलकाता: सर्दियों के मौसम में ओस को ध्यान में रखते हुए बीसीसीआइ और बंगाल क्रिकेट संघ (कैब) ने फैसला लिया है कि ईडन गार्डेंस स्टेडियम में खेला जाने वाला भारत का पहला डे-नाइट टेस्ट मैच दिन में एक बजे से शुरू होगा और रात आठ बजे तक चलेगा।

यह टेस्ट 22 से 26 नवंबर के बीच भारत और बांग्लादेश के बीच खेला जाएगा। दोनों टीमों का यह पहला डे-नाइट प्रारूप का टेस्ट मैच होगा। बीसीसीआइ के एक अधिकारी ने इस बात की पुष्टि की और कहा कि दिन का खेल रात आठ बजे खत्म कर दिया जाएगा क्योंकि इसके बाद अगर खेल जारी रहता है तो कोलकाता में ओस की समस्या हो सकती है। ओस को ध्यान में रखते हुए बीसीसीआइ ने कैब की खेलने के समय में बदलाव करने की विनती को मान लिया है। दिन का खेल अब दोपहर में एक बजे शुरू होगा और तीन बजे पहला सत्र खत्म हो जाएगा। दूसरा सत्र 3:40 बजे शुरू होगा और 5:40 बजे खत्म हो जाएगा। अंतिम सत्र छह से आठ बजे तक चलेगा। ओस की समस्या आमतौर पर आठ-8:30 बजे के बाद शुरू होती है।

एक साथ बैठकर मैच देख सकती हैं हसीना और ममता: बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना और बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी डे-नाइट के ऐतिहासिक टेस्ट में ईडन पर रिवायती घंटी बजाने के बाद साथ में बैठकर मैच देख सकती हैं। बांग्लादेश के उप उच्चायुक्त तौफीक हसन की अगुआई में चार दिवसीय दल ने मंगलवार को ईडन गार्डेंस और प्रधानमंत्री तथा उनके 80 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के बैठने की व्यवस्था का मुआयना किया। कार्यक्रम के अनुसार, हसीना एक दिन के लिए आएंगी और घंटी बजाने के बाद कुछ देर मैच देखेंगी। इसके बाद वह आठ बजे फिर आएंगी जब बंगाल क्रिकेट संघ उन्हें सम्मानित करेगा।

घर में पहली बार टेस्ट में कमेंट्री करेंगे दोशी

कपीश दुबे (नईदुनिया) • इंदौर

होलकर स्टेडियम में अपने ही नाम के कमेंट्री बॉक्स से आकाशवाणी के लिए 51 वर्ष में पहली बार करेंगे कमेंट्री

सुशील दोशी ऐसा नाम है, जिसे लोग चेहरे से ज्यादा आवाज से पहचानते हैं। हिंदी क्रिकेट कमेंट्री को दुनियाभर लोकप्रिय बनाने के लिए सुशील को पद्मश्री (2016) सम्मान से नवाजा जा चुका है मगर अपने 51 साल के करियर में पहली बार वह अपने ही घर इंदौर में टेस्ट मैच की कमेंट्री करने जा रहे हैं जो आकाशवाणी के लिए करेंगे। यह मौका 14 नवंबर से इंदौर में भारत और बांग्लादेश के बीच होने वाले टेस्ट सीरीज के पहले टेस्ट मैच में आएगा।

खास बात यह है कि वह होलकर स्टेडियम के उसी कमेंट्री बॉक्स में बैठकर आकाशवाणी पर आंखों देखा हाल सुनाएंगे, जो उनके ही नाम पर बना है। आकाशवाणी पर बहुत सालों के बाद टेस्ट मैचों की लाइव कमेंट्री शुरू हुई है। उन्होंने कहा, 'बचपन से ही क्रिकेट का बहुत शौक था। परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। 1956 में रिची बेनो की कप्तानी में ऑस्ट्रेलिया टीम टेस्ट खेलने मुंबई आई थी। मैंने भी मैच देखने की जिद की। पिता निरंजनलाल दोशी और मां मदन कुंवर ने पता नहीं कैसे गरीबी के बावजूद मुझे मैच दिखाने का फैसला लिया। पिता मुंबई लेकर गए, लेकिन टिकट नहीं मिले। चूंकि उस समय जितने लोग ब्रेबोर्न स्टेडियम के अंदर थे, उससे ज्यादा बाहर थे। चार दिनों तक भटके तो एक पुलिस वाले को दया आ गई। उसने मुझे अकेले अंदर प्रवेश दिला दिया, उत्साह में पिता को छोड़कर अकेला अंदर चला गया। उस मैच की कमेंट्री बॉबी तलयार खां और विजय मर्चेंट कर रहे थे, जिनका तब बहुत नाम था। तब सोचा कि मुझे ऐसा ही करियर बनाना है, जिसमें मैच भी देखो और नाम भी हो।' दोशी ने कहा, 'यह रोचक संयोग है कि मैंने करियर का पहला टेस्ट उसी ब्रेबोर्न स्टेडियम में किया, जहां कभी घुसने के लिए चार दिन भटका था। मैंने 1972-73 में भारत और इंग्लैंड टेस्ट में कमेंट्री की थी। दरअसल मैं रणजी ट्रॉफी में कमेंट्री करता था और स्व. राजसिंह डूंगरपुर ने मुझे सुना था। उन्होंने कहा कि एक नया लड़का है, जिसकी आवाज में बहुत दम है। अब मैं इंदौर में अपने 87वें टेस्ट मैच में कमेंट्री करूंगा। मैं 500 से ज्यादा वनडे और टी-20 मैचों की कमेंट्री कर चुका हूं। मैंने पहली बार 1968 में मध्य प्रदेश और राजस्थान के बीच इंदौर के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में कमेंट्री की थी। वह कभी नहीं भूल सकता।'

कमेंट्री करते सुशील दोशी • फाइल फोटो

कम ही लोग जानते हैं कि सुशील दोशी का वास्तविक नाम सुशील कुमार जैन है। आधिकारिक दस्तावेजों में यही नाम है। इस पर उन्होंने कहा, 'मैं शुरुआत में सुशील कुमार जैन नाम से आलेख लिखता था। तब दिल्ली के बड़े अखबार में खेल संपादक का भी नाम सुशील कुमार जैन था। लोगों को लगता था कि आलेख उन्होंने लिखा है इसलिए मैंने अपने पिता की सलाह पर जैन की जगह दोशी लिखना शुरू किया। पिता की इस सलाह के बाद लोग मुझे इसी नाम से पहचानने लगे।'

रोहित ने अपने नेतृत्व कौशल का शानदार प्रदर्शन किया

वीवीएस लक्ष्मण

बेरी-बेरी स्पेशल

भारत ने गर्व के साथ बांग्लादेश की टीम के खिलाफ शानदार वापसी करके सीरीज अपने नाम की और ऑस्ट्रेलिया में अगले साल होने वाले टी-20 विश्व कप के लिए संभावित खिलाड़ियों की पहचान करने की टीम प्रबंधन की खोज सही रास्ते पर है। नई दिल्ली में सीरीज के पहले टी-20 मैच में हार के बाद राजकोट मैच की जीत में युजवेंद्रा सिंह चहल और रोहित शर्मा ने अपना अहम योगदान दिया। सीरीज के निर्णायक मुकाबले में भारतीय युवा खिलाड़ियों ने दबाव में अच्छा प्रदर्शन किया और मौके का फायदा उठाया।

लोकेश राहुल ने नागपुर में बेहतरीन पारी खेली और उन्होंने बता दिया कि उन्हें इतना महत्व क्यों दिया जाता है। श्रेयस अय्यर ने भी ऐसी ही शानदार पारी खेली और नंबर चार के स्थान पर खुद को स्थापित किया। जब राहुल गेंदबाजों पर आक्रमण कर रहे थे तब अय्यर क्रीज पर जमने की कोशिश कर रहे थे। फिर इसके बाद जब अय्यर को खराब फॉर्म से जूझ रहे रिषभ पंत का साथ मिला तो वह मुख्य भूमिका में आ गए और आक्रामक अंदाज में खेलना शुरू कर दिया। उन्होंने न केवल अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया, बल्कि छठे गेंदबाज को भी निशाना बनाकर बुद्धिमत्ता दिखाई। तीसरे मैच में टीम प्रबंधन ने क्रुणाल पांड्या को अंतिम एकादश से बाहर कर दिया था। भारी ओस के बाद 174 का स्कोर ऐसा नहीं था कि बांग्लादेश की टीम इसे हासिल नहीं कर पाती। एक समय मेहमान टीम दो विकेट पर 110 रन बनाकर मजबूत स्थिति में दिख रही थी, लेकिन इसके बाद रोहित ने अपने नेतृत्व कौशल का शानदार प्रदर्शन किया। उन्होंने मिथुन के आउट होने के बाद उपलब्ध विकल्पों का अच्छे से इस्तेमाल किया। शिवम दुबे का केवल तीसरा अंतरराष्ट्रीय मैच था और वह बल्लेबाजी ऑलराउंडर हैं।

गुलाबी गेंद से परेशानी नहीं होगी : रहाणे

नईदुनिया, इंदौर : भारतीय टेस्ट टीम के उप कप्तान अजिंक्य रहाणे ने कहा कि टीम इंडिया गुरुवार से होने वाले पहले टेस्ट मैच में बांग्लादेश की टीम को पूरी गंभीरता से लेगी। बांग्लादेशी टीम आक्रामक प्रदर्शन करती है इसके चलते उसे हल्का नहीं आंका जाएगा। भारतीय टीम पहली बार डे-नाइट टेस्ट कोलकाता में गुलाबी गेंद से खेलेगी और रहाणे का मानना है कि इस गेंद से खेलने में ज्यादा परेशानी नहीं होगी। रहाणे ने कहा, 'मैं व्यक्तिगत तौर पर इस गेंद से खेलने को लेकर उत्साहित हूं। मैं अभी तक इस गेंद से नहीं खेला। हमने एनसीए से दो से चार बार पिंक गेंद से अभ्यास किया। वह एसजी पिंक गेंद काफी स्विंग हो रही थी। हालांकि मुझे नहीं लगता कि इस गेंद से खेलने में कोई ज्यादा परेशानी होगी। हां, यह जरूर है कि इसके लिए उस पर थोड़ा ज्यादा सर्तकता से खेलना होगा। हमें गेंद को अपने शरीर के पास खेलना होगा। कोलकाता टेस्ट से पहले भी हमारे पास गुलाबी गेंद से खेलने का काफी समय रहेगा। हम कुछ सत्र दिन में और कुछ सत्र रात में भी अभ्यास करेंगे। इसके बाद ही हमें यह किस तरह बर्ताव करती है उस बारे में पता चल सकेगा। गेंदबाजों के लिए भी यह एक नया अनुभव रहेगा।'

गुलाबी गेंद के साथ रहाणे • एएफपी

हल्के में नहीं लेंगे: उन्होंने कहा, 'भले ही बांग्लादेश टीम के कई प्रमुख खिलाड़ी मौजूद नहीं है, इसके बावजूद हम उसे हल्का नहीं आंक रहे हैं। हम अपनी स्ट्रैंथ के हिसाब से प्रदर्शन करेंगे। हमने भले ही दक्षिण अफ्रीका को तीन टेस्ट मैचों की सीरीज में सफाया किया है, लेकिन हर सीरीज की अपनी अलग चुनौती होती हैं। बांग्लादेश की टीम पहले भी कई उलटफेर कर चुकी है और हमेशा संघर्ष करने के लिए पहचानी जाती है। बांग्लादेश की टीम अच्छी है और हम उसका सम्मान करते हैं, लेकिन हमारा ध्यान विपक्षी टीम की बजाए अपनी ताकत के अनुसार प्रदर्शन करने पर रहता है और इस सीरीज में भी हम उसी हिसाब से खेलेंगे।' उन्होंने कहा कि चूंकि टीम के कुछ खिलाड़ी टी-20 टीम का हिस्सा नहीं थे इसलिए उन्होंने राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में समय बिताया। टीम के लिए टी-20 से टेस्ट के मूड में आने में कोई ज्यादा परेशानी नहीं होगी।

द्रविड़ से टिप्स मिलना बेहद लाभदायक: भारतीय टेस्ट टीम के पांच खिलाड़ियों ने पिछले दिनों एनसीए में राहुल द्रविड़ के मार्गदर्शन में गुलाबी गेंद से अभ्यास किया था। रहाणे भी इन पांच खिलाड़ियों में शामिल थे। रहाणे ने कहा, 'मैंने तो वेस्टइंडीज और द. अफ्रीका के खिलाफ सीरीज से पहले भी द्रविड़ के साथ समय बिताया था। किसी के लिए भी उनके साथ रहना लाभदायक होता है। उनसे मार्गदर्शन लेना हमेशा ही लाभदायक होता है और उनके पास जब भी समय होता है तो मैं उनका मार्गदर्शन लेता हूं, वैसे भी वे मेरे आदर्श खिलाड़ी हैं।'

पिच के हिसाब से फैसला करेंगे: रहाणे ने कहा कि टीम इंडिया इस स्टेडियम में एक टेस्ट खेली है, लेकिन इस बार मैच अलग पिच पर होगा। अभी मैच में दो दिन का समय है और टीम प्रबंधन जल्दी से जल्दी पिच को समझकर उसके हिसाब से फैसला करेगी।

हर मैच महत्वपूर्ण: उन्होंने कहा कि यह सीरीज विश्व टेस्ट चैंपियनशिप का हिस्सा होगी, इसके चलते हर मैच महत्वपूर्ण होगा। टीम इंडिया भले ही फॉर्म में है, लेकिन वह हर मैच को नया मानकर खेलती है। टीम के लिए प्रत्येक मैच समान रूप से महत्वपूर्ण होता है और इस सीरीज में भी टीम जीत की लय को बनाए रखने के हिसाब से खेलेगी।

वनडे में विराट कोहली और जसप्रीत बुमराह ने कायम रखी अपनी रैंकिंग

दुबई, आइएएनएस: भारतीय कप्तान विराट कोहली और तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने आइसीसी की ताजा जारी वनडे रैंकिंग में अपने-अपने स्थान कायम रखे हैं। कोहली बल्लेबाजों की रैंकिंग में 895 अंकों के साथ पहले स्थान पर बैठे हुए हैं। उनके बाद भारत के उप-कप्तान रोहित शर्मा हैं। गेंदबाजों की रैंकिंग में बुमराह ने अपना पहला स्थान बनाए रखा है। वह 797 अंकों के साथ इस स्थान पर कायम हैं। बुमराह के बाद न्यूजीलैंड के बाएं हाथ के तेज गेंदबाज ट्रेंट बोल्ट हैं।

ऑलराउंडर खिलाड़ियों की रैंकिंग में शीर्ष-10 में हार्दिक पांड्या एकमात्र भारतीय हैं। वह 246 अंकों के साथ रैंकिंग में 10वें स्थान पर हैं। भारत ने हाल ही में बांग्लादेश को तीन मैचों की टी-20 सीरीज में 2-1 से मात दी है। अब उसे बांग्लादेश के साथ ही दो मैचों की टेस्ट सीरीज खेलनी है। इसके बाद भारतीय टीम वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज खेलेगी।

शेन वॉटसन 'ऑस्ट्रेलियन क्रिकेटर्स संघ' के अध्यक्ष नियुक्त : पूर्व ऑलराउंडर शेन वॉटसन को 'ऑस्ट्रेलियन क्रिकेटर्स संघ' (एसीए) का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। उन्होंने कहा कि इससे उन्हें खेल की सेवा करने में मदद मिलेगी। यह नियुक्ति एसीए की सोमवार की रात हुई वार्षिक आम सभा (एजीएम) में की गई। वॉटसन ने अपनी नियुक्ति के बाद ट्वीट किया कि मैं एसीए का अध्यक्ष चुने जाने से सम्मानित महसूस कर रहा हूं क्योंकि भविष्य में इसकी भूमिका अधिक महत्वपूर्ण होगी। मुझे उन लोगों के अहम कार्यों को आगे बढ़ाना है जिन्होंने इससे पहले यह भूमिका निभाई थी। मैं यह मौका मिलने से बेहद उत्साहित हूं। इससे मुझे उस खेल को वापस कुछ देने में मदद मिलेगी जिसने मुझे इतना कुछ दिया है।

वॉटसन ने ऑस्ट्रेलिया की तरफ से 59 टेस्ट, 190 वनडे और 58 टी-20 मैच खेले।

क्रिकेट डायरी

टी-20 विश्व कप में खराब प्रदर्शन का अंत करेगा ऑस्ट्रेलिया : गिलक्रिस्ट

मुंबई: ऑस्ट्रेलिया अभी तक टी-20 विश्व कप नहीं जीत पाई है, लेकिन इस टीम के पूर्व दिग्गज विकेटकीपर बल्लेबाज एडम गिलक्रिस्ट का मानना है कि अगले वर्ष ऑस्ट्रेलिया में होने वाले इस विश्व कप में मेजबान टीम के पास इस खराब दौर का अंत करने का मौका होगा। ऑस्ट्रेलिया वनडे विश्व कप में सबसे सफल टीम है, जिन्होंने पांच बार खिताब जीता है, लेकिन वह क्रिकेट के सबसे छोटे प्रारूप के आइसीसी टूर्नामेंट का खिताब जीतने से वंचित है। ऑस्ट्रेलियाई टीम 2007 से छह बार टी-20 विश्व कप में भाग ले चुकी है। आरोन फिंच की कप्तानी में ऑस्ट्रेलिया ने श्रीलंका और पाक को लगातार टी-20 सीरीज में शिकस्त दी है और 2019 में इस प्रारूप में अभी तक हारी नहीं है।

टी-20 टूर्नामेंट | सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में विदर्भ के खिलाफ तीन गेंद पर तीन विकेट लेने के बीच फेंकी एक वाइड गेंद

एक वाइड ने छीनी दीपक चाहर से दूसरी हैट्रिक

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: तेज गेंदबाज दीपक चाहर मंगलवार को लगातार दो मैचों में हैट्रिक लेने से चूक गए। सैयद मुश्ताक अली टी-20 ट्रॉफी में विदर्भ के खिलाफ चाहर ने तीन वाजिब गेंद पर तीन विकेट तो लिए, लेकिन वह एक विकेट लेने के बाद अगली गेंद वाइड कर बैठे जिस कारण इसे हैट्रिक नहीं माना जाएगा।

ऐसे में वह क्रिकेट के सबसे छोटे प्रारूप में एक और बड़ी उपलब्धि दर्ज करने से चूक गए। रविवार को बांग्लादेश के खिलाफ खेले गए टी-20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले में वह भारत की ओर से इस प्रारूप में हैट्रिक लेने वाले पहले भारतीय गेंदबाज बने थे। राजस्थान की ओर से खेलते हुए चाहर ने तिरुवनंतपुरम में विदर्भ के खिलाफ चार ओवर में 18 रन देकर चार विकेट लिए।

27 वर्षीय चाहर की गेंदबाजी की मदद से राजस्थान ने विदर्भ को नौ विकेट पर 99 रनों पर रोक दिया। चाहर की तीन वाजिब गेंद पर दर्शन नालकंडे, श्रीकांत वाघ और अक्षय वाडकर शिकार बने। ये सभी विकेट 13 ओवर की आखिरी तीन गेंदों पर आए। उन्होंने इस ओवर की चौथी गेंद पर विकेट लिया, फिर वाइड फेंकी और इसके बाद पांचवीं और छठी गेंद पर भी विकेट लिया। रविवार को चाहर ने टी-20 अंतरराष्ट्रीय में गेंदबाजी में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का रिकॉर्ड बनाया था। उन्होंने महज सात रन देकर छह विकेट लिए थे। भारत ने इस मैच को 30 रनों से जीता था और इसके साथ ही तीन मैचों की सीरीज भी 2-1 से अपने नाम की थी।

उत्तराखंड के मयंक ने भी ली हैट्रिक : बायें हाथ के स्पिन गेंदबाज मयंक मिश्रा की हैट्रिक के दम पर उत्तराखंड ने यहां गोवा को आठ विकेटों से हरा दिया। मयंक ने कुल चार विकेट अपने नाम किए और उत्तराखंड ने पहले बल्लेबाजी करने उतरी गोवा को 20 ओवरों में नौ विकेट के नुकसान पर 119 रनों पर सीमित कर दिया। आसान से लक्ष्य को उत्तराखंड ने 16.4 ओवरों में दो विकेट खोकर हासिल कर लिया। गोवा के लिए सबसे ज्यादा 52 रन स्नेहल कौथांकर ने बनाए। उनके अलावा हेरंब पारब ने 22 रनों का योगदान दिया। मयंक ने पारी के तीसरे ओवर की तीसरी, चौथी और पांचवीं गेंद पर क्रमशः आदित्य कौशिक, अमित वर्मा और सुयश प्रभूदेसाई के विकेट लिए। उत्तराखंड के लिए तन्मय श्रीवास्तव ने नाबाद 49 रन बनाए।

बारिश से प्रभावित मुकाबले में जीता उप्र: उत्तर प्रदेश के तेज गेंदबाज अंकित राजपूत के पांच विकेट की बदौलत उत्तर प्रदेश ने थंबा में हुए मुकाबले में त्रिपुरा को पांच विकेट से शिकस्त दे दी। बारिश की वजह से मुकाबला छह-छह ओवर का हुआ, जिसमें त्रिपुरा पहले बल्लेबाजी करते हुए छह ओवर में छह विकेट पर 49 रन ही बना सकी। त्रिपुरा के छह विकेट गिरने में राजपूत का अहम योगदान रहा, जिन्होंने दो ओवर में 17 रन देकर पांच विकेट लिए। जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी उत्तर प्रदेश टीम ने शुरुआती तीन झटको के बाद 5.2 ओवर में 50 रन बनाकर यह मुकाबला जीत लिया। उत्तर प्रदेश की ओर से अक्षदीप नाथ ने 14 गेंद में नाबाद 28 रन बनाए।

रोमांचक मुकाबले में जीता जम्मू एंड कश्मीर: जम्मू एंड कश्मीर ने मंगलवार को ओडिशा के खिलाफ हुए मुकाबले में तीन रन से रोमांचक जीत दर्ज की। पहले बल्लेबाजी करते हुए जम्मू एंड कश्मीर ने दो विकेट पर 164 रन बनाए, जिसमें जतिन वाधवान ने सबसे ज्यादा 68 रनों का योगदान दिया। जवाब में ओडिशा की टीम 20 ओवर में 161 रन ही बना सकी।

रोमांचक मुकाबले में छह विकेट से जीता दिल्ली

नई दिल्ली: दिल्ली की टीम ने मंगलवार को सूरत में सौराष्ट्र के खिलाफ मुकाबले में छह विकेट से रोमांचक जीत दर्ज की। सौराष्ट्र ने पहले बल्लेबाजी करते हुए अर्पित वसवाड़ा के नाबाद 63 रनों की बदौलत 20 ओवर में पांच विकेट पर 1743 रन बनाए। जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी दिल्ली ने एक गेंद शेष रहते चार विकेट के नुकसान पर जरूरी लक्ष्य हासिल कर लिया। दिल्ली की ओर से सलामी बल्लेबाज अनुज रावत ने नाबाद 88 रन बनाए।

दीपक चाहर • फाइल फोटो, प्रेट्र

हरियाणा को मिली जीत

नई दिल्ली : हरियाणा ने मुंबई में बंगाल के खिलाफ हुए मुकाबले में पांच विकेट से आसान जीत दर्ज की। पहले बल्लेबाजी करते हुए बंगाल ने आठ विकेट पर मात्र 122 रन बनाए, जिसमें श्रीवत्स गोस्वामी 30 रन बनाकर सर्वश्रेष्ठ स्कोरर रहे। हरियाणा की ओर से जयंत यादव और आशीष हुडडा ने दो-दो विकेट लिए। जवाब में हरियाणा ने 17.1 ओवर में पांच विकेट पर 126 रन बनाकर मैच जीत लिया। हरियाणा की ओर से हर्षल पटेल ने सबसे ज्यादा 35 रनों का योगदान दिया।

बोर्ड संविधान में बदलाव सर्वोच्च न्यायिक सत्ता का उपहास : गोपाल

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: बीसीसीआइ का नया संविधान तैयार करने में अहम भूमिका निभाने वाले लोढ़ा समिति के सचिव गोपाल शंकरनारायणन ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर किए गए सुधारों में बदलाव करने की बोर्ड की योजना देश की सर्वोच्च न्यायिक सत्ता का उपहास होगा। शंकरनारायणन का मानना है कि सुप्रीम कोर्ट की अब भी इस मामले में भूमिका है और उसे उचित कदम उठाने चाहिए अन्यथा बीसीसीआइ के प्रशासनिक ढांचे में सुधार करने के उसके सारे प्रयास बेकार चले जाएंगे।

उन्होंने कहा कि अगर ऐसा करने की अनुमति दी जाती है और अगर अदालत में इसे चुनौती नहीं दी जाती और न्यायालय में भी इसे चुनौती नहीं मिलती या वह इस पर संज्ञान नहीं लेता है तो इसका मतलब न्यायालय और पिछले वर्षों में किए गए कार्यों का उपहास करना होगा। संशोधित संविधान में बदलाव का प्रस्ताव शनिवार को सामने आया जब बीसीसीआइ के नए सचिव जय शाह ने बोर्ड की एक दिसंबर को मुंबई में होने वाली वार्षिक आम बैठक (एजीएम) के लिए एजेंडा तैयार किया।

सबसे प्रमुख संशोधनों में पदाधिकारियों के लिए विश्राम की अवधि (कूलिंग ऑफ पीरियड) से जुड़े नियमों को बदलना, अयोग्यता से जुड़े विभिन्न मानदंडों को शिथिल करना और संविधान में बदलाव करने के लिए सुप्रीम कोर्ट से मंजूरी लेने की जरूरत को समाप्त करना शामिल हैं। शंकरनारायणन ने कहा कि इसका मतलब होगा कि जहां तक क्रिकेट प्रशासन और सुधारों की बात है तो फिर से पुराने ढर्रे पर लौट जाना। अधिकतर महत्वपूर्ण बदलावों का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। शंकरनारायणन लोढ़ा समिति के सचिव थे जिसे सुप्रीम कोर्ट ने देश के क्रिकेट प्रशासन में सुधार करने के लिए 2015 में नियुक्त किया था। पूर्व मुख्य न्यायाधीश आर एम लोढ़ा इस समिति के अध्यक्ष थे जिसमें उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायधीश आरवी रवींद्रन और अशोक भान भी शामिल थे। शंकरनारायणन ने कहा कि अगर बदलावों को अपनाया जाता है तो उन्हें अदालत में चुनौती दी जा सकती है। उन्होंने कहा

हमें मिले मौकों को गोल में तब्दील करने पर काम करना होगा।
– सुनील छेत्री, कप्तान भारतीय फुटबॉल टीम

द्रविड़ के हितों के टकराव के मुद्दे की सुनवाई खत्म

नई दिल्ली, प्रेट्र : राहुल द्रविड़ को लेकर चल रहे हितों के कथित टकराव के मामले की सुनवाई मंगलवार को यहां समाप्त हुई और बीसीसीआइ के आचरण अधिकारी डीके जैन ने कहा कि उनका आदेश जल्द ही आ सकता है। एमपीसीए के आजीवन सदस्य संजीव गुप्ता ने द्रविड़ के खिलाफ एनसीए के प्रमुख के तौर पर मौजूदा भूमिका और इंडिया सीमेंट्स के कर्मचारी होने के नाते हितों के कथित टकराव की शिकायत दर्ज की थी।

न्यूज गैलरी

दो और भारतीयों को मिला टोक्यो पैरालंपिक कोटा

दुबई : योगेश कथुनिया ने तीन फाउल प्रयासों से उबरते हुए विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप में पुरुषों के चक्का फेंक एफ56 फाइनल में कांस्य पदक जीता। भारत ने इसके साथ ही टोक्यो पैरालंपिक 2020 के लिए सातवां कोटा स्थान हासिल किया। प्रवीण कुमार ने भारत को छठा कोटा दिलाया जो पुरुषों की ऊंची कूद टी64 फाइनल में चौथे स्थान पर रहे। अंतरराष्ट्रीय पैरालंपिक समिति के नियमों के अनुसार, विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप में व्यक्तिगत वर्ग में मैराथन को छोड़कर शीर्ष चार स्थानों पर रहने वाले खिलाड़ी को पैरालंपिक का कोटा मिलेगा। कथुनिया ने छठे प्रयास में 42.51 मीटर की दूरी तय करके कांस्य पदक जीता। भारत के इस चैंपियनशिप में दो स्वर्ण, एक रजत और दो कांस्य पदक हो गए हैं। (प्रेट्र)

वाजवा और सेखो को रजत

दोहा : अंगद वीर सिंह बाजवा ने 14वीं एशियाई निशानेबाजी चैंपियनशिप में पुरुषों के स्कीट वर्ग में स्वर्ण और ओलंपिक कोटा जीतने के बाद मिक्स्ड टीम स्पर्धा में गनीमत सेखो के साथ रजत पदक जीता। बाजवा और सेखो की जोड़ी फाइनल में चीन के वेइ मेंग और जिन दि से 33-36 से हार गई। बाजवा ने सोमवार को पुरुषों की स्कीट स्पर्धा में ओलंपिक कोटा हासिल किया था। पुरुषों के 50 मीटर पिस्टल वर्ग में गौरव राणा ने रजत और अर्जुन चीमा ने कांस्य पदक जीता। गौरव, अर्जुन और मनु तोमर ने टीम वर्ग में भी कांस्य पदक हासिल किया। प्रतिभाशाली युवा धनुष श्रीकांत ने 10 मीटर एयर राइफल जूनियर व्यक्तिगत और टीम वर्ग में स्वर्ण पदक जीता। भारत के ही शाहू तुषार माने को कांस्य पदक मिला। हृदय हजारिका सातवें स्थान पर रहे। तीनों ने हालांकि चीन और कोरिया को हराकर टीम वर्ग का स्वर्ण पदक जीता। (प्रेट्र)

उदित और दीपक टीम में

नई दिल्ली : कैडेट विश्व चैंपियनशिप के कांस्य पदकधारी उदित कुमार (57 किग्रा) और दीपक चहल (75 किग्रा) को मंगलवार को एशियाई अंडर-15 कुश्ती चैंपियनशिप के लिए भारत की 30 सदस्यीय टीम में शामिल किया गया जो 22 नवंबर से ताईचुंग सिटी में आयोजित की जाएगी। भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआइ) ने लखनऊ में बालिका और सोनीपत में लड़कों के लिए आयोजित ट्रायल्स के बाद टीम का चयन किया। पिछले साल भारत आठ पदक के साथ फ्री स्टाइल में तीसरे स्थान पर रहा था। बालिका वर्ग में भी प्रदर्शन शानदार रहा था जिसमें तीन स्वर्ण सहित सात पदक शामिल थे। (जेएनएन)

पहले मैच में ज्वेरेव से हारे नडाल

एटीपी फाइनल्स ▶ राफेल को एलेक्जेंडर ने 6-2, 6-4 से हराया

हार के बाद खतरे में पड़ी नडाल की नंबर एक की कुर्सी

लंदन, एएफपी : दुनिया के नंबर एक पुरुष टेनिस खिलाड़ी राफेल नडाल को एटीपी फाइनल्स के अपने पहले मैच में मौजूदा चैंपियन एलेक्जेंडर ज्वेरेव से सीधे सेटों में हार का सामना करना पड़ा। वहीं स्टीफानोस सितसिपास ने टूर्नामेंट में शानदार शुरुआत की।

अपने करियर में अब तक एटीपी फाइनल्स को जीतने में नाकाम रहे स्पेनिश स्टार नडाल चोट से उबरने के बाद यहां कोर्ट पर उतरे, लेकिन ज्वेरेव ने उन्हें 6-2, 6-4 से करारी शिकस्त दी। उधर सोमवार को आंद्रे आगासी ग्रुप के राउंड रॉबिन मुकाबले में छठी वरीय सितसिपास ने रूस के डेनिल मेदवेदेव को 7-6, 6-4 से हरा दिया।

जर्मन स्टार ज्वेरेव के खिलाफ इस मैच से पहले नडाल का रिकॉर्ड 5-0 था लेकिन वह शुरू से ही लय में नहीं दिखे और पहले ही सेट में दो ब्रेक प्वाइंट गवां बैठे। इसके बाद दूसरे सेट के पहले ही गेम में ज्वेरेव ने उनकी सर्विस तोड़ी और मुकाबले पर अपनी पकड़ बना ली। ज्वेरेव ने इस मुकाबले में कुल 26 विनर्स लगाए जो नडाल से दोगुने थे।

खतरे में नडाल की बादशाहत : राफेल नडाल और सर्बियाई स्टार नोवाक जोकोविक के बीच साल को नंबर एक पर रहते हुए खत्म करने की रोचक जंग चल रही है और इस टूर्नामेंट में हार से नडाल को जोकोविक के हाथों अपना नंबर एक का ताज गंवाना पड़ सकता है। जोकोविक ने रविवार को इटली के मातियो बेरेटिनी के खिलाफ जीत दर्ज करके अपने छठे एटीपी फाइनल्स खिताब की शानदार शुरुआत की, लेकिन रोजर फेडरर को डोमिनिक थिएम के हाथों सीधे सेटों में हार का सामना करना पड़ा था।

हार पर कोई बहाना नहीं : मुकाबले के बाद 19 बार के ग्रैंडस्लैम चैंपियन नडाल ने कहा कि हार के लिए कोई बहाना नहीं है। उन्होंने कहा कि शारीरिक समस्या कोई बहाना नहीं है। केवल एक ही बहाना है कि मैं इस मुकाबले में अच्छा नहीं खेल सका। हालांकि अब इस हार के बाद नडाल के लिए सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करना मुश्किल हो गया है। उन्हें सितसिपास और मेदवेदेव के खिलाफ उतरना है। नडाल ने लगातार 15वें साल एटीपी फाइनल्स के लिए क्वालीफाई किया है लेकिन चोट की वजह से वह केवल नौ मौकों पर ही इस टूर्नामेंट में भाग ले पाए हैं।

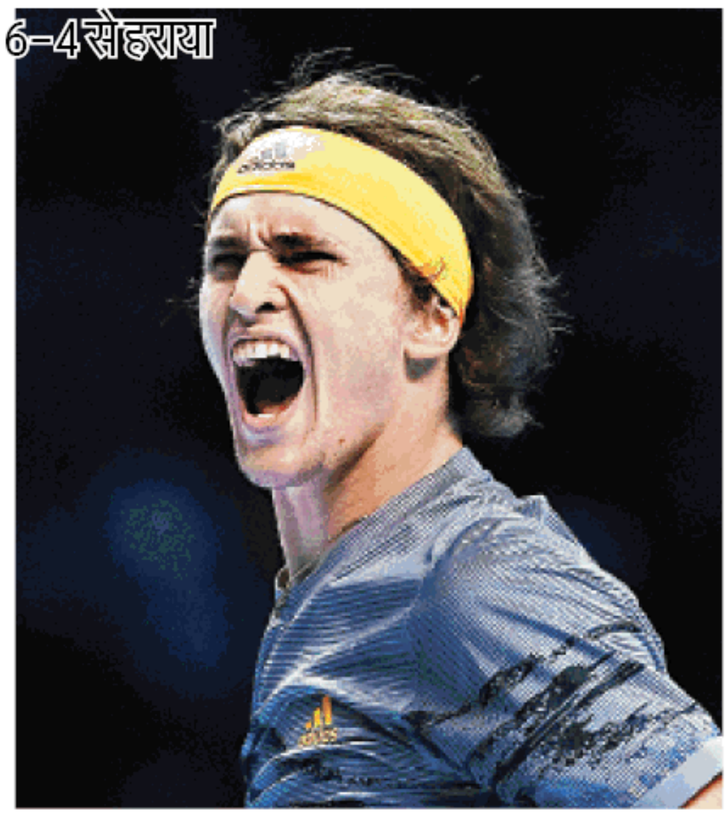

जीत दर्ज करने के बाद जश्न मनाते ज्वेरेव। एएफपी

स्टर्लिंग को नहीं मिली इंग्लैंड की टीम में जगह

फुटबॉल डायरी

- लिवरपूल के गोमेज के साथ भिड़ंत के बाद कोच साउथगेट ने लिया फैसला
- यूरो 2020 क्वालीफायर में मोंटेनेग्रो के खिलाफ नहीं खेलेंगे सिटी के रहीम

लंदन, एएफपी : इंग्लैंड फुटबॉल टीम के कोच गेरेथ साउथगेट ने यूरो 2020 क्वालीफायर में गुरुवार को मोंटेनेग्रो के खिलाफ होने वाले मुकाबले के लिए रहीम स्टर्लिंग को अपनी टीम में जगह नहीं दी है।

इंग्लिश प्रीमियर लीग में रविवार को फुटबॉल क्लब लिवरपूल को सिटी को 3-1 से हराकर गत चैंपियन पर नौ अंकों की बढ़त हासिल कर ली। लिवरपूल के डिफेंडर जोए गोमेज और सिटी के स्टर्लिंग के बीच सोमवार को भिड़ंत देखने को मिली जहां साथी खिलाड़ियों को इन दोनों को अलग करना पड़ा था। इससे पहले ये दोनों इंग्लिश खिलाड़ी रविवार को खेले गए मुकाबले के अंत में भी भिड़ते दिखे थे। फुटबॉल संघ (एफए) द्वारा जारी किए गए वक्तव्य में साउथगेट ने कहा कि हमने मोंटेनेग्रो के खिलाफ गुरुवार को होने वाले मुकाबले के लिए स्टर्लिंग को इंग्लिश टीम में नहीं रखने का फैसला किया है। हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती और ताकत यह है कि दो अलग-अलग क्लबों के दिग्गज खिलाड़ी हमारे पास हैं। हालांकि यह निराशाजनक है कि रविवार को खेले गए मुकाबले की भावनाएं अभी भी गहरी हैं। स्टर्लिंग अब तक इंग्लैंड के क्वालीफाइंग अभियान में सबसे बड़े सितारों में से एक रहे हैं। उन्होंने अब तक छह मुकाबलों में आठ गोल दागे हैं। मोंटेनेग्रो के खिलाफ अगर इंग्लैंड ने ड्रॉ खेला तो वह यूरो 2020 के लिए क्वालीफाई करने में सफल हो जाएगा।

हम आगे बढ़ चुके हैं : स्टर्लिंग ने टीम में जगह नहीं मिलने के बाद अपने इंस्टाग्राम पेज पर लिखा कि मेरे और जोए गोमेज के बीच बहस हुई थी लेकिन हमने उस पर चर्चा की और आगे बढ़ गए हैं।

डेस्ट को मिली अमेरिकी टीम में जगह

लास एंजिलिस : नीदरलैंड्स में जन्में युवा खिलाड़ी सर्जिनो डेस्ट को कोनकाकाफ नेशंस लीग क्वालीफायर के लिए अमेरिकी टीम में जगह दी गई है। नीदरलैंड्स के क्लब अजाक्स के लिए फुलबैक की भूमिका में खेलने वाले डेस्ट के पिता अमेरिकी हैं। नीदरलैंड्स के अधिकारियों द्वारा डेस्ट में दिलचस्पी दिखाने के बावजूद उन्होंने पिछले महीने अमेरिकी टीम से खेलने की इच्छा जाहिर की थी। सितंबर में डेस्ट मेक्सिको के खिलाफ 0-3 से मिली हार वाले दोस्ताना मैच में अमेरिका की ओर से उतरे थे।

बी साई प्रणीत शीर्ष-10 में पहुंचे, श्रीकांत फिसले

बैडमिंटन डायरी

- एक स्थान के फायदे के साथ 10वें स्थान पर पहुंचे बी साई
- बीडब्ल्यूएफ रैंकिंग में किदांबी तीन स्थान फिसले

नई दिल्ली, प्रेट्र : भारतीय बैडमिंटन स्टार बी साई प्रणीत एक स्थान के फायदे के साथ बीडब्ल्यूएफ की ताजा रैंकिंग में मंगलवार को शीर्ष-10 में पहुंच गए जबकि किदांबी श्रीकांत तीन स्थान के नुकसान के साथ 13वें स्थान पर फिसल गए।

अगस्त में विश्व चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीतने वाले प्रणीत 10वें स्थान पर पहुंच गए हैं लेकिन पिछले सप्ताह शीर्ष-10 में शामिल श्रीकांत अब 13वें स्थान पर लुढ़क गए हैं। पुरुष सिंगल्स में समीर वर्मा भी एक स्थान के फायदे के साथ 16वें पायदान पर पहुंच गए हैं जबकि जापान के केंटो मोमोटा शीर्ष पर बने हुए हैं। महिला सिंगल्स रैंकिंग में पीवी सिंधू, और साइना नेहवाल क्रमशः छठे और नौवें पायदान पर बनी हुई हैं। वहीं पुरुष डबल्स में सात्विकसाइराज रैंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की भारतीय जोड़ी दो स्थान के फायदे के साथ सातवें पायदान पर पहुंच गई है।

हांगकांग ओपन के मुख्य ड्रॉ में पहुंचे सौरभ

हांगकांग, प्रेट्र : भारतीय शटलर सौरभ वर्मा ने मंगलवार को दो क्वालीफाइंग मुकाबलों में सीधे गेम में जीत दर्ज करके हांगकांग ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट के पुरुष सिंगल्स के मुख्य ड्रॉ में प्रवेश किया। वहीं किदांबी श्रीकांत बिना खेले ही पुरुष सिंगल्स के दूसरे दौर में पहुंच गए। श्रीकांत को पहले दौर में विश्व के नंबर एक खिलाड़ी केंटो मोमोटा से भिड़ना था लेकिन इस जापानी खिलाड़ी के हटने की वजह से श्रीकांत को पहले दौर में बाई मिली। क्वालीफायर में सौरभ ने थाइलैंड के तानोंगसाक सीसोमबूनसुक को 21-15, 21-19 से हराया था।

रीयल कश्मीर घरेलू मैचों की मेजबानी के लिए तैयार

फुटबॉल : एडिडास के साथ के मिलकर रीयल ने लांच की टीम की नई जर्सी

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

आइ-लीग फुटबॉल क्लब रीयल कश्मीर के सह मालिक संदीप चट्टू ने मंगलवार को कहा कि उनको भरोसा है कि उनकी टीम आगामी सत्र में श्रीनगर में अपने घरेलू मैचों की मेजबानी करेगी।

दिल्ली में मंगलवार को एडिडास के साथ मिलकर रीयल कश्मीर ने अपनी नई टीम जर्सी और मस्कट को लांच किया जहां संदीप के अलावा, कोच डेविड रॉबर्टसन, स्टार खिलाड़ी मुहम्मद हम्माद और कैलम हिग्गिनबाथम के साथ एडिडास इंडिया के प्रबंध निदेशक मनीष सापरा भी मौजूद थे।

जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद 370 के अधिकतर प्रावधानों को हटाने के बाद श्रीनगर में सुरक्षा को लेकर सवाल पर संदीप ने कहा कि हमें अनाधिकारिक रूप से हमारे मैचों के बारे में सूचित किया गया है। हम अपने घरेलू मैदान पर खेलेंगे और हमारा पहला घरेलू मुकाबला 12 दिसंबर को होगा। मालूम हो कि पुलवामा आतंकी हमले के बाद पिछले सत्र में मिनर्वा पंजाब और ईस्ट बंगाल जैसे क्लबों ने सुरक्षा कारणों से श्रीनगर जाने से मना कर दिया था।

प्रतिबंध से मिला फायदा : जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद 370 को हटाने के बाद प्रतिबंधों के कारण आम लोगों का जीवन भले ही प्रभावित हुआ, लेकिन रीयल कश्मीर के लिए यह स्थिति फायदेमंद साबित हुई, क्योंकि इससे उसके खिलाड़ियों को एक दूसरे को अच्छी तरह से समझने में मदद मिली। टीम के सह मालिक संदीप और मुख्य खिलाड़ियों में शामिल हम्माद ने बताया कि कश्मीर में पाबंदियों के समय इंटरनेट और फोन पर लगी रोक के कारण खिलाड़ियों को एक दूसरे को अच्छे से समझने में मदद मिली, जिससे टीम और मजबूत हुई है। साथ ही संदीप ने यह भी कहा कि अगर पुलवामा आतंकी हमला नहीं होता तो उनकी टीम आइ-लीग खिताब जीत सकती थी। टीम के स्थानीय खिलाड़ी हम्माद ने कहा कि यह सच है कि कश्मीर में पाबंदियों के कारण लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा, लेकिन विषम परिस्थितियां टीम के लिए फायदेमंद रही। 2016 में स्थापित रीयल कश्मीर क्लब की टीम आइ-लीग के पिछले सत्र में तीसरे स्थान पर रही थी।

टीम की नई जर्सी के साथ रीयल कश्मीर टीम के खिलाड़ी। प्रेट्र

विविध

शादी से इन्कार करने पर युवती की कर दी हत्या

संवाद सहयोगी, पटौदी (गुरुग्राम)

- आरोपित है पहलवान, मृतका थी ताइक्वांडो खिलाड़ी

एकतरफा प्यार में युवक ने युवती और उसके परिजनों द्वारा शादी करने से मना करने पर युवती की गोली मार हत्या कर दी। आरोपित युवक पहलवान है और युवती ताइक्वांडो खिलाड़ी थी। यह सनसनीखेज वारदात गांव भौड़ा खुर्द में मंगलवार सुबह करीब चार बजे हुई। युवती अपने घर में सोई हुई थी। दीवार फांद कर अंदर घुसे युवक ने रिवाल्वर से उसके सीने और पेट में गोली मारी और भाग निकला। युवती की मां की शिकायत पर बिलासपुर थाना पुलिस केस दर्ज कर आरोपित की तलाश शुरू कर दी है।

पटौदी क्षेत्र के भोड़ा खुर्द निवासी सरिता (25) वर्ष 2012 से ताइक्वांडो खेल से जुड़ी हुई थी। करीब एक साल पहले वह रोहतक में एक प्रतियोगिता में भाग लेने गई थी। वहीं पर सरिता की मुलाकात जिला झज्जर के गांव बामडोली निवासी सोमबीर से हुई। सोमबीर पहलवानी करता है और राज्यस्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता में हिस्सा ले चुका है। बताते हैं कि पहली मुलाकात के बाद सोमवीर सरिता से एकतरफा मुहब्बत करने लगा। उसने कई बार सरिता से शादी की बात की, लेकिन सरिता ने मना कर दिया। वह फिर भी नहीं माना तो सरिता ने अपने स्वजनों को उसकी हरकत बताई तो उन्होंने भी उसे तंग नहीं करने को कहा। इसके बाद भी वह नहीं माना और शादी करने का दबाव बनाता रहा।

सरिता की मां सावित्री के अनुसार उनके द्वारा मना करने पर सोमबीर उन्हें जान से मारने समेत कई तरह की धमकियां देने लगा। इस पर उन्होंने सोमबीर के खिलाफ पुलिस को कई बार शिकायत दी। पुलिस दो बार रपट दर्ज कर उसे थाने लेकर गई तो सोमबीर ने थाने में लिखित में माफी मांगी और भविष्य में तंग न करने का आश्वासन भी दिया था। इसके बाद कुछ दिन तक वह शांत रहा। दो महीने से वह फिर उन्हें तंग करने लगा था। सावित्री ने बताया कि सोमबीर सुबह चार बजे दीवार फांद कर उनके घर मे घुसा व सरिता से शादी करने की जिद की। घर के लोग जाग गए। उनके मना करने पर उसने बरामदे में खड़ी सरिता पर गोली चला दी। गोली लगने से सरिता वहीं पर गिर पड़ी। गोली की आवाज सुन लोग घर के अंदर आए और सरिता को मानेसर स्थित अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने सरिता को मृत घोषित कर दिया।

साक्षात्कार में नाम और जाति नहीं कोड होगा प्रतियोगी की पहचान

धर्मेंद्र चंदेल, ग्रेटर नोएडा

- दिसंबर तक बैकलॉग पूरा कर देगा उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग
- साक्षात्कार से कुछ समय पहले तय होंगे पैनल में शामिल विशेषज्ञों के नाम

सरकारी सेवाओं में चयन के लिए भाई भतीजावाद, गड़बड़ी के कारण अपनी साख खो चुका उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग पारदर्शिता में एक बार फिर अपनी चमक पा चुका है। अब कोई भी प्रतियोगी सिफारिश या धनबल के सहारे सरकारी सेवा में चयनित नहीं हो सकेगा। योग्य व प्रतिभावान अभ्यार्थी को ही नौकरियों के अवर मिलेंगे। इसके लिए उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग ने कई ऐसे प्रभावी कदम उठाए हैं, जिनसे आयोग की कार्यशैली में सुधार एवं पारदर्शिता बढ़ी है।

आयोग ने काफी कम समय में एक के बाद एक कई परीक्षाओं के परिणाम घोषित कर चयन प्रक्रिया को पूरा किया है। आयोग का लक्ष्य दिसंबर अंत तक सभी बैकलॉग क्लियर करने का है। उल्लेखनीय है कि पूर्व की सरकारों में भर्तीयों में बड़े स्तर पर गड़बड़ी की शिकायतें सामने आई थीं। इसके खिलाफ प्रतियोगियों को कोर्ट का दरवाजा तक खटखटाना पड़ा था। मौजूदा प्रदेश सरकार ने तेज तर्रार सेवानिवृत्त आइएएस डा. प्रभात कुमार को लोक सेवा आयोग का अध्यक्ष बनाकर इसकी शुचिता कायम करने की जिम्मेदारी सौंपी थी। बागडोर संभालते ही डा. प्रभात कुमार ने आयोग की कार्यशैली में कई अमूलचूल बदलाव किए। जिसकी वजह से आयोग के काम की गति तेज होने के साथ ही इसका फायदा उन प्रतियोगियों को मिला, जो वर्षों से प्रतियोगी परीक्षाओं को परिणाम घोषित होने का इंतजार कर रहे थे।

डा. प्रभात कुमार ने दैनिक जागरण के साथ बातचीत में बताया कि आयोग ने साक्षात्कार में भाई भतीजावाद खत्म करने के लिए अहम कदम उठाते हुए नई व्यवस्था लागू की। साक्षात्कार लेने वाले पैनल के सामने प्रतियोगी की व्यक्तिगत जानकारी रखने की परिपाटी को समाप्त कर कोड व्यवस्था लागू की गई। प्रतियोगी के नाम, जाति, उसके निवास क्षेत्र की जानकारी पैनल के सामने नहीं होगी। पैनल में शामिल होने वाले विशेषज्ञों के नाम व साक्षात्कार में सम्मलित होने वाले प्रतियोगियों की कोड संख्या भी उसी दिन सुबह ही तय होगी। डा. प्रभात कुमार ने बताया कि साक्षात्कार शुरू होने से पहले किसी को नहीं पता होता कि किस पैनल में कौन-कौन शामिल हैं। उनकी मिलीभगत की संभावनाएं लगभग पूरी तरह से समाप्त हो जाएंगी। साक्षात्कार में अंकों का निर्धारण भी इस तरह किया गया है कि पैनल में शामिल कोई भी विशेषज्ञ किसी प्रतियोगी को खास फायदा नहीं पहुंचा पाएगा। उन्हें निगेटिव, पॉजिटिव व अंकों के रूप में आंकलन करना होता है। इसमें दो-चार नंबरों से अधिक आगे पीछे करने की गुंजाइश नहीं बचेगी।

प्रभात कुमार। जागरण आर्काइव

डेरा प्रमुख के परिवार के साथ नजर आई हनीप्रीत

जागरण संवाददाता, सिरसा

- डेरा प्रमुख के जेल जाने के सवा दो साल बाद पहली बार उमड़ी डेरा अनुयायियों की भारी भीड़

डेरा सच्चा सौदा में शाह मस्ताना शाह के अवतार दिवस पर मंगलवार को भंडारे का आयोजन किया गया। दोपहर 12 बजे से शुरू हुई नामचर्चा के दौरान हनीप्रीत इन्सां डेरा प्रमुख की पत्नी व बेटियों के साथ बैठी नजर आई। नामचर्चा के समापन के बाद डेरा प्रमुख की चिट्ठी भी पढ़ी गई, जिसमें डेरा प्रमुख ने श्रद्धालुओं को साईं जी के अवतार दिवस की बधाई दी और सेवा सुमिरन करने का संदेश दिया। डेरा प्रमुख के जेल जाने के करीब सवा दो साल बाद पहली बार डेरे में इतनी बड़ी संख्या में अनुयायियों की भीड़ नजर आई। इसे हनीप्रीत के डेरे में पहुंचने से भी जोड़कर देखा जा रहा है। डेरा अनुयायियों को आस है कि डेरा प्रमुख भी जल्द उनके बीच होंगे।

शाह मस्ताना महाराज के 128वें अवतार दिवस पर मंगलवार को दोपहर 12 बजे शाह सतनाम धाम में नामचर्चा का आयोजन किया गया। दो घंटे तक चले नामचर्चा कार्यक्रम में डेरा प्रमुख के रिकार्डेड सत्संग का एलईडी के माध्यम से प्रसारण किया गया, जिन्हें अनुयायियों ने श्रद्धापूर्वक सुना। सत्संग पंडाल में डेरा प्रमुख की पत्नी हरजीत कौर, बेटियां चरणप्रीत इन्सां व अमरप्रीत इन्सां, दत्तक पुत्री हनीप्रीत इन्सां के अलावा डेरा की चेयरपर्सन विपसना इन्सां मौजूद रही। डेरा प्रमुख का बेटा जसमीत इन्सां और दामाद डा. रूह ए मीत इन्सां व शान ए मीत इन्सां मौजूद रहे। नामचर्चा कार्यक्रम से पहले सत्संग पंडाल के नजदीक ही पार्क में रक्तदान व चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ डेरा प्रमुख के पुत्र, पुत्रियों व दामादों ने धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा का नारा लगाकर किया। रक्तदान शिविर में 4505 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया, जबकि चिकित्सा शिविर में 1030 मरीजों की जांच की गई।

नामचर्चा के दौरान 16 शादियां हुईं। 12 दिव्यांगों को ट्राइसाइकिलें दी गईं। 15 महिलाओं को स्व रोजगार के लिए सिलाई मशीनें दी गईं। डेरा अनुयायियों द्वारा चार जरूरतमंद परिवारों को बनाकर दिए गए मकानों की चाबियां दी गईं। नामचर्चा के बाद श्रद्धालुओं को लंगर वितरित किया गया।

सुरक्षा के रहे पुख्ता प्रबंध : डेरा में आयोजित नामचर्चा के दौरान जिला प्रशासन ने सुरक्षा के पुख्ता बंदोबस्त किए थे। डेरा की ओर जाने वाले मार्ग पर सात नाके लगाए गए थे। शाह सतनाम चौक के निकट दंगारोधी वाहन भी तैनात किए गए थे। इसके अलावा डेरा अनुयायियों को बाजेकां मोड़ से होकर डेरा की तरफ भेजा गया।

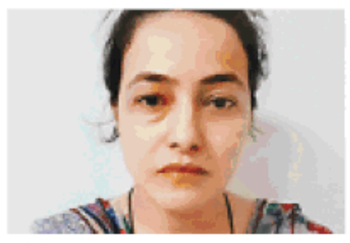

हनीप्रीत। (फाइल)

खाली करने होंगे सरकारी आवास

रविंद्र बड़थ्वाल, देहरादून

- नौ आइएएस समेत करीब 50 अफसरों व रसूखदार लोगों को राज्य संपत्ति महकमे ने भेजा नोटिस
- सरकारी आवासों पर जमे रहने वालों से बाजार दर से होगी किराया वसूली
- हाई कोर्ट ने पूर्व मुख्यमंत्रियों की तर्ज पर ऐसे अफसरों पर भी कसा शिकंजा

उत्तराखंड को पूर्व मुख्यमंत्रियों ने जो राह दिखाई, शासन के भूतपूर्व और मौजूदा नौकरशाहों और फिर उनकी तर्ज पर ही विभिन्न महकमों के रसूखदार अफसरों ने भी धड़ल्ले से उसी दिशा में कदम बढ़ा दिए। सेवानिवृत्त होने या तबादले के बाद भी बड़ी संख्या में पूर्व और मौजूदा नौकरशाह सरकारी आवासों पर कब्जा जमाए हैं। तय से ज्यादा वक्त तक सरकारी आवासों पर काबिज पूर्व और मौजूदा नौकरशाहों से अब बाजार दर से किराया वसूली होगी। इस मामले में नौ आइएएस समेत करीब 50 अफसरों व रसूखदार लोगों को राज्य संपत्ति महकमे ने नोटिस भेजे हैं।

सरकारी आवासों पर काबिज रहने की पूर्व मुख्यमंत्रियों में लगी रही होड़ का जमकर लुत्फ लेने में सूबे की नौकरशाही पीछे नहीं रही है। बंगलेनुमा सरकारी आवासों का मोह इस कदर तारी रहा कि पहले पूर्व मुख्यमंत्रियों और अब नौकरशाहों के इन्हें छोड़ने में पसीने छूट गए। इन आवासों की बंदरबांट सिर्फ नौकरशाहों तक ही सीमित नहीं रही, बल्कि रसूखदार गैर नौकरशाह लोगों को भी जनता की गाढ़ी कमाई से बनने वाले सरकारी आवासों से नवाजा गया।

हाई कोर्ट के आदेश पर पूर्व मुख्यमंत्रियों ने सरकारी आवास से कब्जा छोड़ दिया, लेकिन हाई कोर्ट का बाजार दर से किराया देने का फरमान उनकी मुश्किलें बढ़ाए हुए है। सरकार उन्हें किराये से राहत देने को बाकायदा अध्यादेश ला चुकी है। यह दीगर बात है कि इस अध्यादेश को हाई कोर्ट में चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई चल रही है।

हाई कोर्ट ने सरकारी आवासों पर नियमों को ताक पर रखकर किए गए कब्जे के मामले में पूर्व मुख्यमंत्रियों के साथ ही नौकरशाहों समेत सभी लोगों पर शिकंजा कसा है। इसके बाद सरकार को हरकत में आना पड़ा। राज्य संपत्ति महकमे की ओर से कई बार नोटिस भेजने के बावजूद सरकारी मकान खाली नहीं कर रहे अधिकारियों व अन्य लोग अब हाई कोर्ट के सख्त रुख से भयभीत हैं। पूर्व और मौजूदा नौकरशाहों की हनक ढीली पड़ी है।

नोटिस के बाद आवास छोड़ने का सिलसिला शुरू हो चुका है। इन सभी लोगों को अब बाजार दर से किराया देना होगा। सेवानिवृत्ति या तबादले के दो माह के भीतर सरकारी आवास खाली करने का प्रावधान है। राज्य संपत्ति विभाग ने ऐसे अधिकारियों को नोटिस थमा दिए हैं। सूत्रों के मुताबिक जिन्हें नोटिस दिए गए हैं, उनमें कुछ पूर्व मुख्य सचिव और मौजूदा नौ आइएएस शामिल हैं। जिलाधिकारी रहने के बाद शासन में तैनात कुछ अधिकारी भी इस सूची में हैं।

अब मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के एजेंडे में एनआरसी

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

मुस्लिम राष्ट्रीय मंच (एमआरएम) के एजेंडे में अब भारतीय राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर (एनआरसी) रहेगा। केंद्र सरकार के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) भी एनआरसी को पूरे देश में लागू करने के पक्ष में है, क्योंकि देश में घुसपैठियों को बड़ी समस्या के तौर पर देखा जा रहा है। इससे सीमा क्षेत्र के आस-पास के जिलों का जनसंख्या समीकरण पूरी तरह से बदल गया है। गौरतलब है कि तीन तलाक, अनुच्छेद 370 और अयोध्या में राममंदिर को लेकर मुस्लिम समाज में मंच ने जागरुकता अभियान चलाया था।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुसार एनआरसी को अभी असम में ही लागू किया गया है, जहां इसके क्रियान्वयन में कई विसंगतियां भी सामने आई हैं। काफी संख्या में मुस्लिम के साथ हिंदू आबादी भी एनआरसी से बाहर हो गई है। ऐसे में इसे लेकर समाज में उहापोह की स्थिति है। मुस्लिम समाज के प्रबुद्ध लोग भी इसे संदेश की नजर से देख रहे हैं। मुस्लिम राष्ट्रीय मंच चाहता है कि एनआरसी पूरे देश में लागू हो। हालांकि, इसके लिए पहले मुस्लिम समाज को जागरूक करना जरूरी है। इस बारे में मंच के प्रवक्ता यासिर जिलानी ने कहा कि हम लोग अब नए मुद्दे पर काम करने जा रहे हैं। मंच ने एनआरसी पर राष्ट्रव्यापी अभियान चलाने की तैयारी की है। इससे घुसपैठियों की पहचान हो सकेगी। यह किसी धर्म विशेष के खिलाफ नहीं है। मंच की कोशिश है कि देश में अवैध तरीके से रह रहे घुसपैठियों की पहचान हो सके। साथ ही विदेशी घुसपैठियों के तौर पर क्यों रहें? वह अपना पंजीकरण कराएं और विदेशी नागरिक के स्टेटस से देश में रहें। जिलानी ने कहा कि इसे लेकर लोगों में खासकर मुस्लिम समाज में भ्रम की स्थिति है, जिसे दूर किए जाने की आवश्यकता है।

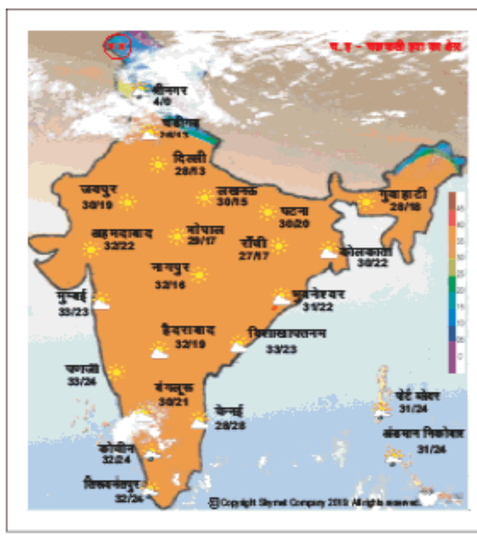

मौसम विशेष

राजस्थान, हरियाणा, पंजाब व दिल्ली में न्यूनतम तापमान में गिरावट जारी रहेगी। आंशिक बादलों के साथ दिन आरामदायक रहेगा। जम्मू-कश्मीर में कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा तथा पर्वतीय स्थानों पर हल्की से मध्यम बर्फबारी संभव है। सुबह का मौसम ठंडा रहेगा व रात में कंपकंपाती ठंड रहेगी।

भारत के मुख्य शहरों का तापमान:

शहर	तापमान	शहर	तापमान
मुम्बई	32/23 अंश	जम्मू	32/19 अंश
कोलकाता	29/21 अंश	भोपाल	32/16 अंश
चेन्नई	32/25 अंश	नागपुर	32/16 अंश
हैदराबाद	32/20 अंश	इन्दौर	28/15 अंश
बेंगलूरु	30/20 अंश	रांची	29/17 अंश
विशाखापत्तनम	33/24 अंश	पटना	31/20 अंश
गुवाहाटी	28/21 अंश	अहमदाबाद	30/22 अंश
लखनऊ	30/23 अंश	पुणे	30/20 अंश

तैयार हुई असॉल्ट राइफल एके -47

1947 में आज ही एक मिनट में छह सौ राउंड फायर करने वाली असॉल्ट राइफल एके-47 बनकर तैयार हुई थी। एके-47 यानी ऑटोमेटिक कलाशनिकोव का नाम इसे बनाने वाले सोवियत संघ के मिलिट्री इंजीनियर मिखाइल कलाशनिकोव के नाम पर रखा गया है।

बंगाल की खाड़ी में आया दुनिया का सबसे भयानक चक्रवात

दुनिया का सबसे भयानक चक्रवात भोला 1970 में आज ही बंगाल की खाड़ी में आया था। 241 किमी प्रति घंटे की रफ्तार वाले इस चक्रवात की वजह से बांग्लादेश में पांच लाख लोग मारे गए थे। इससे गांवों और फसलों को भी भारी नुकसान हुआ था।

जूही चावला को जन्मदिन मुबारक

अपनी चुलबुली अदाकारी से दर्शकों का दिल जीतने वाली मशहूर अभिनेत्री जूही चावला का जन्म 1967 में आज ही पंजाब में हुआ था। 1984 में मिस इंडिया बनीं। 1986 में फिल्म सल्तनत से हिंदी सिनेमा में डेब्यू किया। 1988 में आई कयामत से कयामत तक उनकी पहली हिट फिल्म रही। प्रतिबंध, स्वर्ग, हम हैं राही प्यार के, डर, बोल राधा बोल आदि उनकी कुछ बेहतरीन फिल्में रहीं। फिर भी दिल है हिंदुस्तानी, अशोका और चलते-चलते जैसी फिल्में प्रोड्यूस कीं। शाह रुख खान की आइपीएल टीम कोलकाता नाइट राइडर्स में उनकी हिस्सेदारी भी है।

इधर-उधर की

फूलदान ने रातों-रात शख्स को बनाया करोड़पति

लंदन,एजेंसी : इंसान की किस्मत बदलते देर नहीं लगती। ब्रिटेन के एक शख्स ने 90 रुपये में खरीदा फूलदान साढ़े चार करोड़ रुपये में बेच दिया। नीलामी के दौरान चीन के एक शख्स ने इसे 4 करोड़ 48 लाख रुपये में खरीद लिया। कहा जा रहा है कि यह फूलदान करीब 300 साल पुराना है। पीले रंग का यह फूलदान 18वीं सदी में चीन के सम्राट कियानलोंग के लिए बनवाया गया था। जिस व्यक्ति के पास यह फूलदान था उसे यह नहीं मालूम था कि वो रातों-रात करोड़पति बन जाएगा। उसने इसे बेचने के लिए अमेरिकी ई-कॉमर्स कंपनी ईबे का सहारा लिया। जहां इसकी बोली करोड़ों में लग गई। फूलदान पर कियानलोंग राजवंश की मुहर भी है।

शोध अनुसंधान

गर्भावस्था में उच्च रक्तचाप से दिल की बीमारी का खतरा

जिन महिलाओं को कम से कम एक गर्भावस्था के दौरान उच्च रक्तचाप की समस्या होती है, उनमें आगे चलकर दिल की बीमारी का खतरा सामान्य महिलाओं की तुलना में अधिक होता है। हाल में किए गए एक शोध में यह बात सामने आई है। यह शोध अमेरिकन कॉलेज ऑफ कॉर्डियोलॉजी के जर्नल में प्रकाशित हुआ है। मुख्य शोधकर्ता मैसाच्युसेट्स जनरल हॉस्पिटल के कार्डियोलॉजी विभाग के डॉ माइकल सी होनीबर्ग ने कहा कि पिछले एक दशक में हुए शोधों से पता चला है कि महिलाओं में दिल की बीमारी के लिए विशेष लैंगिक कारण जिम्मेदार हैं, इनमें गर्भावस्था के दौरान उच्च रक्तचाप की समस्या भी शामिल है। ब्रिटेन के बड़े शोध समूह यूके बायोबैंक द्वारा 2006 से 2010 के बीच अस्पताल में भर्ती दो लाख बीस हजार से ज्यादा महिलाओं पर सात वर्षों तक किए गए शोध में यह निष्कर्ष सामने आया है। (एएनआइ)

अवसाद और दिल की बीमारी का है गहरा संबंध

एक नए शोध से पता चला है कि अगर कोई व्यक्ति अवसाद से ग्रसित है तो उसमें दिल की बीमारी या स्ट्रोक की संभावना बढ़ जाती है। यह शोध अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन के जर्नल में प्रकाशित हुआ है। शोध के लेखक यूसुफ एम खान ने कहा कि दिल की बीमारियां स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं से संबंधित हैं। टेक्सास के डलास में हेल्थ इंफारमेटिक्स एंड एनालिटिक्स फॉर अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन के नेशनल डायरेक्टर खान ने बताया कि हमारे शोध में अवसाद का संबंध दिल की बीमारी और स्ट्रोक से जुड़ा पाया गया है। शोधकर्ताओं ने इसके लिए 20 वर्ष और उससे अधिक उम्र के वयस्कों में अवसाद और दिल की कम गंभीर बीमारियों का अध्ययन किया। (एएनआइ)

'पैक-मैन' की तरह ब्लैक होल में समाते हैं खगोलीय पिंड

न्यूयॉर्क, प्रेट्र : जो लोग अभी 25 से 30 की साल की उम्र के होंगे, उन्होंने अपने बचपन में 'पैक-मैन' नामक वीडियो गेम जरूर खेला होगा, जिसमें 'पैक-मैन' को दुश्मनों की आंखों से बचकर एक तय मार्ग पर चलते हुए सारा भोजन चट कर मिशन पूरा करना होता था। इसकी खास बात यह थी कि जितना भोजन 'पैक-मैन' के पेट में जाता उसी के अनुसार उसका आकार भी बढ़ता जाता था। ब्लैक होल के बारे में भी वैज्ञानिकों का कुछ ऐसा ही अनुमान है।

वैज्ञानिकों का दावा है कि 'पैक-मैन' की तरह ही ब्लैक होल भी अपने गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र में आने वाले खगोलीय पिंडों, तारों, ग्रहों, उपग्रहों को अपना आहार बनाता है। जितनी ज्यादा संख्या में खगोलीय पिंड इसमें समाते हैं उसी अनुपात में इसका आकार भी बढ़ता जाता है। ब्लैक होल अंतरिक्ष का वह स्थान है, जहां भौतिक विज्ञान का कोई भी नियम काम नहीं करता। इसका गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र इतना शक्तिशाली होता है कि इसके खिंचाव से कोई बच नहीं सकता। इसकी शक्ति का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि प्रकाश भी यहां प्रवेश करने के बाद बाहर नहीं निकल पाता।

अमेरिका के रोचेस्टर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के शोधकर्ताओं ने कंप्यूटर सिमुलेशन के जरिये पहली बार यह पता लगाया है कि बड़े ब्लैक होल कैसे बनते हैं। शोधकर्ताओं ने कहा 'जब ब्लैक होल्स आपस में टकराते हैं तो एक-दूसरे में समा जाते हैं और इनका आकार कई गुना बढ़ जाता है।

अमेरिकी शोधकर्ताओं ने कहा-विशाल ब्लैक होल का आहार बन जाते हैं छोटे ब्लैक होल

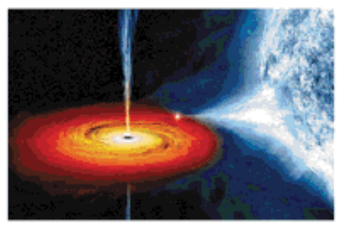

ब्लैक होल। प्रतीकात्मक

यह प्रक्रिया ठीक वैसी ही है जैसे 'पैक-मैन' अपना भोजन निगलता है। शोधकर्ताओं ने कहा, 'पृथ्वी पर मौजूद वेधशालाओं ने अब तक गुरुत्वाकर्षण तरंगों के जरिये अंतरिक्ष में लगभग 10 ब्लैक होल के आपसी विलय यानी एक-दूसरे में समाहित होने के कारण पैदा हुई अव्यवस्था का पता लगाया है, लेकिन इस प्रक्रिया को समझाना अभी शेष है। शोधकर्ताओं का कहना है कि अब तक के सबसे बड़े ब्लैक होल विलय ने पिछले सभी मॉडलों को गलत साबित कर दिया था, क्योंकि इसका द्रव्यमान और घुमाव अनुमानों से कहीं ज्यादा था।

शक्तिशाली है ब्लैक होल का यह क्षेत्र : फिजिकल रिव्यू लैटर्स नामक जर्नल में प्रकाशित अध्ययन बताया गया है कि इतने बड़े विलय सक्रिय आकाशगंगाओं के केंद्र में मौजूद सुपरमैसिव यानी बहुत बड़े ब्लैक होल के बाहर ही संभव हो सकते हैं। शोधकर्ताओं ने कहा, 'सुपरमैसिव ब्लैक होल के आसपास एक खास क्षेत्र होता है, जिसे संचयन मंडल कहते हैं। इसमें गैस, तारे, धूल और छोटे ब्लैक होल फंस जाते हैं।

संचयन मंडल में समा जाते हैं छोटे ब्लैक होल : रोचेस्टर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के शोधकर्ता और इस अध्ययन के सह लेखक रिचर्ड ओ-शोघनेसी के अनुसार, 'कोई छोटा ब्लैक होल जैसे ही संचयन मंडल की परिधि में आता है तो वह गोलाकार घूमना शुरू कर देता है और बड़े ब्लैक होल में समा जाता है। रिचर्ड ने कहा कि इस अध्ययन से यह समझने में मदद मिलती है कि आकाशगंगा का आकार किस तरह बढ़ता है। इससे अंतरिक्ष में अधिकांश संरचनाओं के बारे में कई महत्वपूर्ण जानकारियां मिल सकती हैं।

तनाव से जूझ रहे हैं 30 फीसद पेशेवर

नई दिल्ली, आइएएनएस : 30 फीसद कामकाजी पेशेवरों को काम के दौरान मानसिक और भावनात्मक जोखिमों से जूझना पड़ता है और 28 फीसद लोग अवसाद से ग्रसित रहते हैं। हेल्थ-टेक स्टार्टअप विवांत के एक नए सर्वेक्षण में यह दावा किया गया है।

अध्ययन के अनुसार, हर चार में से एक व्यक्ति को लगता है कि उनकी जीवनशैली और काम का संतुलन ठीक नहीं है और बड़े पदों पर नौकरी करने वाले 27 फीसद लोग तनाव में रहते हैं। यह सर्वेक्षण कामकाजी पेशेवरों के मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति का आकलन करने और जागरूकता फैलाने के लिए किया गया था। विवांत के सीईओ अदृति राहा ने कहा, 'इस सर्वेक्षण में दो लाख से अधिक प्रतिभागियों को शामिल किया गया था। अध्ययन के दौरान पाया गया कि 48 फीसद प्रतिभागी ऐसे हैं जिनकी जीवन शैली गतिहीन है।'

संकट में हैं छोटी मछलियां

चिंताजनक ▶ समुद्र में लगातार बढ़ रहा है प्लास्टिक प्रदूषण

प्रशांत महासागर के कई क्षेत्रों में भर गया है आठ गुना ज्यादा प्लास्टिक

ह्यूस्टन, प्रेट्र : समुद्र में बढ़ते प्लास्टिक प्रदूषण के खतरों के बारे में आगाह करते हुए शोधकर्ताओं ने कहा कि प्लास्टिक प्रदूषण से उत्तर-मध्य प्रशांत महासागर के कई क्षेत्रों में पाई जाने वाली लार्वा मछली यानी छोटी मछलियों की प्रजातियां संकट में हैं। इससे उनकी नर्सरी (बच्चों के आवास) प्रभावित हो रही है। एक अध्ययन में बताया गया है कि यहां पुराने अनुमानों के मुकाबले आठ गुना ज्यादा प्लास्टिक भर गया है।

अमेरिका की एरिजोना स्टेट यूनिवर्सिटी (एएसयू) के शोधकर्ताओं ने पहली बार अध्ययन के दौरान पाया कि कोरल रीफ में रहने वाली लार्वा मछलियां पैदा होने के बाद शुरुआती दिनों से ही प्लास्टिक खाना शुरू कर देती हैं। पीएनएएस नामक जर्नल में प्रकाशित अध्ययन में कहा गया है कि पूर्व में हुए अध्ययनों से पता चला था कि बड़ी मछलियां प्लास्टिक खाती हैं। लेकिन लार्वा मछलियां भी शुरुआती दिनों से ही प्लास्टिक खाना शुरू करती हैं, तो इससे उनके स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो हो सकता है कि उनकी पूरी आबादी ही खत्म हो जाए।

इस अध्ययन के लिए शोधकर्ताओं ने अत्याधुनिक रिमोट सेंसिंग तकनीक का उपयोग किया, ताकि इस बात का पता चल सके कि

कोरल रीफ में अपने आवास बनाती है लार्वा मछली। फाइल

प्लास्टिक को खाने से इन मछलियों के जीवन में क्या प्रभाव पड़ता है। इसके लिए शोधकर्ताओं ने हवाई द्वीप के सबसे दक्षिणी द्वीप पर सर्वेक्षण कराया और इस द्वीप के तटों के आसपास रहने वाली मछलियों से नमूने एकत्र किए।

एएसयू के ग्रेग असनेर ने कहा, 'इन तटीय इलाकों में कोरल रीफ भी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं और इन्हीं कोरल की चट्टानों के बीच लार्वा मछली अपने अंडे देती है। यहां उनकी पूरी आबादी के लिए पर्याप्त मात्रा में आहार भी मिल जाता है। लेकिन अब इसके कुछ इलाकों में प्लास्टिक प्रदूषण बढ़ गया है और मछलियां प्लास्टिक खाने लगी हैं, जो चिंता का विषय है।'

शोधकर्ताओं ने कहा, फिसलन भरे ये सतही इलाके लार्वा मछलियों की नर्सरी के लिए सबसे ज्यादा मुफीद हैं क्योंकि यहां खाने के लिए भारी मात्रा में प्लैंगटन (प्लवक) मिल जाते हैं। अध्ययन के दौरान शोधकर्ताओं ने कहा कि यहां ग्रेट पैसिफिक पैच में तो लार्वा मछलियों के घनत्व के मुकाबले सात गुना ज्यादा प्लास्टिक भर गया है, जो हाल ही में हुए एक अध्ययन के मुकाबले आठ गुना ज्यादा है। शोधकर्ताओं ने बताया कि यदि हम इस जगह की तुलना यहां से 91.44 मीटर की दूरी के पानी से करें तो पाएंगे कि चिकनी परतों के मुकाबले 126 गुना ज्यादा प्लास्टिक यहां भरा पड़ा है।

...तो अब सिर्फ बछिया ही पैदा करेंगी गायें

मुकेश चंद्र श्रीवास्तव, वाराणसी : शहर हो या देहात, हर जगह बेसहारा पशुओं की संख्या बढ़ती जा रही है। देहात में जहां इसके कारण फसलें बर्बाद हो रही हैं वहीं शहर में यातायात के लिए परेशानी का सबब बन रहे हैं। इससे आए दिन हादसे भी हो रहे हैं। हालांकि इससे अब राहत मिलेगी। कारण कि अब गाय बछिया ही जन्मेगी। वाराणसी में पायलट प्रोजेक्ट के तहत 2500 गायों में सेक्स सॉर्टेड सीमेन से गर्भाधान कराया गया। इसमें 50 गायों ने 48 बछिया पैदा की और दो बछड़े। अब गोकुल ग्राम मिशन के तहत वाराणसी के 100 गांवों का चयन किया गया है।

अब 300 रुपये में पैदा होगी बछिया : जिला पशुचिकित्सा अधिकारी डॉ. वीवी सिंह ने बताया कि प्रोजेक्ट की सफलता के बाद उत्तर प्रदेश लाइव स्टॉक बोर्ड से 250 डोज और मंगाया गया है। अब सेक्स सॉर्टेड सीमेन के लिए किसानों को प्रति डोज 300 रुपये भुगतान करना होगा। इस तकनीकी से गर्भाधारण कराने से पूर्व गाय का परीक्षण किया जाता है। उन्होंने कहा कि इस तकनीक का एक लाभ यह भी है कि सड़कों पर बेसहारा घूमने वाले जानवरों की संख्या कम हो जाएगी।

क्या है सेक्स सॉर्टेड सीमेन

सीमेन निकालने के बाद इसमें से नर के गुण को समाप्त कर दिया जाता है। इसके बाद सेक्स सॉर्टेड सीमेन तैयार होता है। इसे माइनस 196 डिग्री तापमान में रखा जाता है। इसके लिए चांदपुर में स्टोरेज फैसिलिटी सेंटर बनाया गया है।

अब रोबोट से होगी गगनचुंबी इमारतों की तेजी से सफाई

चाइनीज एकेडमी ऑफ साइंसेज के शोधकर्ताओं ने तैयार किया रोबोट। फाइल

बीजिंग, आइएएनएस : चीन के शोधकर्ताओं ने एक ऐसा रोबोट विकसित किया है जो न केवल दीवारों में चढ़ सकता है बल्कि अपनी राह में आने वाली बाधाओं से भी आसानी से पार पा सकता है। शोधकर्ताओं का दावा है कि यह रोबोट ऊंची इमारतों पर लगे कांच के शीशों को बिना नुकसान पहुंचाए उन्हें साफ कर सकता है।

चाइनीज एकेडमी ऑफ साइंसेज के शेनयांग इंस्टीट्यूट ऑफ ऑटोमेशन (एसआइए) के शोधकर्ताओं की टीम ने कहा, 'यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि क्योंकि इस रोबोट का पूरा तंत्र बिना किसी बाहरी सेंसर के नियंत्रित किया जा सकता है। यह खुद ही सारे काम सहजता से कर लेता है। नया रोबोट सुरक्षा और दक्षता के मामले में अत्याधुनिक तकनीकों से लैस है।' इस रोबोट के डिजाइनर मेंग जियांगडोंग ने कहा, 'इसमें सिंगल डिग्री फ्रीडम मैनिपुलेटर क्यूब फ्रेम एंड इफेक्टर और एक हेक्स-रोटर यूएवी जैसे सिस्टम समाहित किए गए हैं। निकट भविष्य में हम इसका उपयोग गगनचुंबी इमारतों की बाहरी दीवारों को साफ करने के लिए कर सकते हैं। इसकी खासियत यह है कि इसे अन्य प्रणालियों से भी जोड़ा जा सकता है और व्यापक स्तर पर इसका उपयोग किया जा सकता है।'

शोधकर्ताओं की टीम ने इस रोबोट का प्रदर्शन पिछले सप्ताह मकाऊ में आयोजित हुए एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 'इंटेलीजेंट रोबोट्स एंड सिस्टम्स 2019' में किया था। मेंग ने बताया कि इस रोबोट के निर्माण में सबसे बड़ी समस्या यही थी कि उड़ते समय हवा के दबाव को कैसे नियंत्रित किया जाए, पर हमारी टीम ने इस समस्या से पार पाते हुए इसे तैयार करने में कामयाबी हासिल की और रोबोटिक्स की दुनिया में एक नया आविष्कार किया है।

वेनिस में ज्वार से बाढ़ जैसे हालात

यूरोपीय देश इटली का वेनिस शहर मंगलवार को ऊंची समुद्री लहरों के चलते जलमग्न हो गया। करीब 127 सेमी की ऊंचाई तक लहरें उठीं और शहर में मानो बाढ़ आ गई। इसकी चपेट में शहर के कैफे, स्टोर, व्यापार, प्रतिष्ठान भी आए हैं। लोगों के सामान्य जनजीवन पर भी काफी असर पड़ा है। वेनिस दुनिया के खूबसूरत शहरों में शुमार है। एपी

ऑस्ट्रेलिया में जंगल की आग से धुंध के आगोश में ओपेरा हाउस

ऑस्ट्रेलिया के सबसे अधिक आबादी वाले प्रांत न्यू साउथ वेल्स की राजधानी सिडनी के उपनगरीय इलाकों के जंगलों में भी आग धधक उठी है। आलम यह है कि इससे सिडनी का विश्व प्रसिद्ध ओपेरा हाउस घने धुंध की चपेट में आ गया है। प्रशासन ने न्यू साउथ वेल्स प्रांत में सात दिन के लिए आपातकाल घोषित कर दिया है। तेज हवाओं से यह आग नए इलाकों को भी चपेट में रही है। इस आग से अब तक तीन लोगों को जान गंवानी पड़ी है और हजारों लोगों को अपने घरों से सुरक्षित स्थान के लिए पलायन करना पड़ा है। अधिकारियों का कहना है कि लोगों को इससे भी बुरे हालात के लिए तैयार रहना होगा। रायटर

स्क्रीन शॉट

'गोलमाल 5' का हिस्सा होंगी सारा अली खान!

फिल्मकार रोहित शेट्टी निर्देशित 'गोलमाल' सीरीज की पांचवीं फिल्म लाने का संकेत पहले भी दिया जा चुका है। पूर्व में उसकी स्क्रिप्ट पर काम होने की खबरें आई हैं। फिल्म की शूटिंग भी अगले साल होने की बात भी कही जा चुकी है। अब ताजा खबर यह है कि 'गोलमाल 5' का हिस्सा सारा अली खान भी हो सकती हैं। दरअसल इस बात के संकेत मिले एक टीवी शो की शूटिंग में। जीटीवी के शो 'मूवी मस्ती विद मनीष पॉल' के आगामी एपिसोड की शूटिंग के लिए रोहित शेट्टी और सारा अली खान पहुंचे हुए थे। शो के दौरान उन्होंने कई गॉसिप साझा किए। उसी दौरान एक गेम के दौरान सारा अली ने हंसते हुए रोहित शेट्टी से कहा कि मैंने सुना है कि आप 'गोलमाल 5' के लिए हीरोइन की तलाश कर रहे हैं। मौके का फायदा उठाते हुए वह यह पूछने से नहीं चूकीं कि क्या वह किरदार के लिए उनके नाम पर विचार करेंगे? यह सुनकर हाजिरजवाब रोहित ने हंसते हुए कहा, जब फिल्म की शूटिंग आरंभ होगी तो तुम निश्चित रूप से उसका हिस्सा होगी। सारा की डेब्यू फिल्म 'केदारनाथ' काफी मुश्किलों में फंस गई थी। उस समय रोहित की फिल्म 'सिंबा' में सारा को कास्ट किया गया था।

सैर पर सितारे

बॉलीवुड के दो शादीशुदा युगल अनुष्का शर्मा-विराट कोहली व सोनाली बेंद्रे और गोल्डी बहल मंगलवार को सोशल मीडिया पर काफी चर्चा में रहे। दोनों ही दंपति शहर से दूर सैर पर हैं। अनुष्का और विराट भूटान में छुट्टियां बिता रहे हैं। दोनों अपनी तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा कर रहे हैं। एक तस्वीर में दोनों गाय के दो बछड़ों के साथ वक्त बिताते और खेलते नजर आ रहे हैं। तस्वीर के साथ अनुष्का ने लिखा, 'प्यार ने प्यार को पहचाना।' दूसरी तस्वीर है सोनाली बेंद्रे और उनके पति गोल्डी बहल की। दोनों शादी की 17वीं सालगिरह मनाने के लिए रोड ट्रिप पर निकले हैं। सोनाली ने एक भावुक संदेश गोल्डी के लिए लिखा है। उन्होंने लिखा, 'इस दिन पिछले साल हम न्यूयॉर्क के अस्पताल में थे। इस वक्त से हमने दो अलग-अलग समय को पहचाना, कैंसर से पहले का वक्त और कैंसर के बाद का वक्त। अब मेरा उद्देश्य आगे बढ़ते रहना है। मैंने सोचा एक ब्रेक लेकर हम रोड ट्रिप पर जाएं। पहले गोल्डी इन चीजों के लिए नहीं मानते थे, लेकिन अब मान जाते हैं। उनका पूरा ध्यान मेरी ओर ही केंद्रित रहता है।' उन्होंने गोल्डी को धन्यवाद कहते हुए लिखा कि बीमारी के दौरान मेरे साथ एक मजबूत स्तंभ की तरह खड़े रहने के लिए शुक्रिया।

हम किसी से कम नहीं : गुलशन देवैया

हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में कहा जाता है कि बाहर से आए हुए लोगों को इसलिए काम नहीं मिलता, क्योंकि सितारों के बच्चों को पहले काम मिल जाता है। लेकिन अभिनेता गुलशन देवैया की राय थोड़ा हटकर है। उन्होंने मंगलवार को एक ट्वीट किया, जिसमें उन्होंने लिखा कि नेपोटिज्म तो बस समस्या का एक हिस्सा है। कई एक्टर्स दूसरे एक्टर्स के साथ कई बार काम करने में असुरक्षित महसूस करते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि कहीं वह एक्टर उनके काम पर हावी न हो जाए। इसलिए मेकर्स मना कर देते हैं। इस बारे में पूछने पर गुलशन ने कहा, 'ऐसा पहले भी लोगों के साथ होता था, जिसके बारे में हम मैगजीन में पढ़ते थे। वहां आकर पता चला कि कई बार अभिनेता को किरदार ऑफर होता है। निर्देशक चाहता है कि वह रोल फलां अभिनेता करे, लेकिन उसे वह रोल नहीं मिलता। उसे खबर मिलती है कि कोई एक्टर उसके साथ काम नहीं करना चाहता, क्योंकि उसके सामने एक्टर की प्रतिभा उभरकर नहीं दिखेगी। गुलशन कहते हैं कि मैं कोई बाजी नहीं मारना चाहता हूं। मैं केवल अच्छे मौकों की तलाश में हूं।'

अगले साल शादी कर सकते हैं फरहान और शिबानी

फरहान अख्तर और शिबानी दांडेकर अपने रिश्ते को छुपाना नहीं चाहते। वे अक्सर एक दूसरे के साथ समय बिताते देखे जाते हैं, उनके इंस्टाग्राम अकाउंट्स पर भी उनकी कई तस्वीरें हैं। अब एक साल तक साथ रहने के बाद दोनों ने अपने रिश्ते को शादी के बंधन तक पहुंचाने का फैसला ले लिया है। खबरों के अनुसार, दोनों अगले साल फरवरी या मार्च में शादी कर सकते हैं। फरहान और उनकी पूर्व पत्नी की बेटी ने भी शिबानी को अपना लिया है और दोनों के बीच अच्छी बॉन्डिंग भी हो गई है। वहीं, दिवाली में भी शिबानी फरहान के माता-पिता के साथ नजर आईं थीं। ऐसे में अगर सब ठीक रहा तो फरहान और शिबानी अगले साल तक शादी कर सकते हैं।

तकनीक

रुड़की के सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने खोजा उपाय, घर बनाते समय सीमेंट में बैक्टीरिया मिलाने के बेहतर परिणाम

घर को 200 साल दरार से मुक्त रखेगा बैक्टीरिया

जागरण संवाददाता, कोलकाता

नया घर बनाने के कुछ महीनों के भीतर ही दीवारों में दरार पड़ गई। एक तरफ ठीक कराया तो यही समस्या दूसरी ओर नजर आने लगती है। ऐसी परेशानी से लोग अक्सर जूझते नजर आते हैं। लेकिन, इस समस्या का समाधान सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने खोज निकाला है। कोलकाता में हाल ही में संपन्न भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव में रुड़की के उक्त संस्थान के प्रतिनिधियों ने बताया कि किसी इमारत को दो सौ साल के लिए दरारों से मुक्त रखने का उपाय उन्होंने खोज निकाला है। उन्होंने दावा किया कि यदि कैल्शियम पैदा करने वाले एक तरह के बैक्टीरिया को सीमेंट में मिलाकर लगाया जाए तो दीवार की दरारें अपने आप दुरुस्त हो जाएंगी। जैसे सेल्फ फिलिंग टायर लीक होने पर खुद को रिपेयर कर सकते हैं उसी तरह से जब भी दीवार में कोई दरार होगी तो सीमेंट में मिलाया गया बैक्टीरिया खुद दीवार को रिपेयर कर सकता है।

विज्ञान महोत्सव में आए संस्थान के प्रतिनिधियों ने बताया कि प्रकृति को कम से कम नुकसान पहुंचाने वाली निर्माण सामग्री बनाना हमारी खोज का विषय है। घर के निर्माण के बाद दीवारों में दरार पड़ना देश

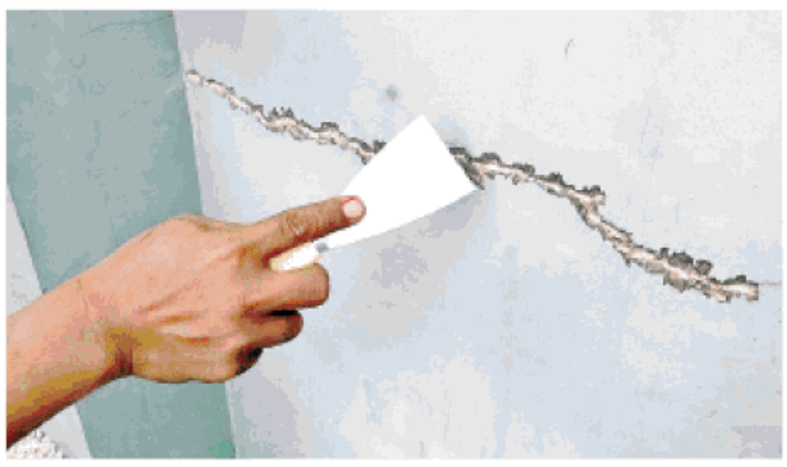

शोधकर्ताओं ने सीमेंट में ऐसा बैक्टीरिया मिलाया है जो कैल्शियम बनाता है। प्रतीकात्मक

भर में एक आम बात है। उन्होंने बताया कि हमने सीमेंट में ऐसा बैक्टीरिया मिलाया है जो कैल्शियम बनाता है। शोधकर्ताओं का कहना है कि प्रारंभिक परीक्षणों के परिणाम संतोषजनक थे। कैल्शियम बनाने के लिए प्रयुक्त बैक्टीरिया आसानी से उपलब्ध हैं। हालांकि, उन्होंने अभी तक सभी परीक्षणों को पूरा नहीं किया है। कम समय में दरारें ठीक करने के लिए अनुसंधान चल रहा है। शोधकर्ताओं का कहना है कि ऐसे जीवाणुओं का जीवनकाल कम से कम 200 साल है। इसलिए, अगर भवन निर्माण के समय सीमेंट के साथ इसे मिलाया जाए तो दो सौ साल तक घर दरार मुक्त रहेगा।